# आत्मनिर्भर भारत

(अप्पणिब्भर-भारदं)

ग्रन्थकार

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

जैनाचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज

प्रकाशक

श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली

जन कल्याण संस्था (रजि.)

बोलखेड़ा (कामां) जिला भरतपुर-321022, टे. न. 09636028048

# आत्मनिर्भर भारत

( अप्पणिब्भर-भारदं )

ग्रन्थकार

जैनाचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज

संस्करण - प्रथम सन् 2020

मूल्य - 50/-

प्रतियाँ - 2000

मुद्रक

अलंकार ग्राफ्किस प्रा. लि.

ग्रेटर नोएडा ( उ.प्र. )

टे. नं. : 9811822023

# सम्पादकीय

आत्मनिर्भरता प्रत्येक काल, क्षेत्र व प्राणी के लिए सर्व सुखों का आधार प्राग्वैदिक काल से स्वीकार की गई है। अंतिम कुलकर महाराज नाभिराय व मरूदेवी के पुत्र, इस युग के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान् ने आर्यावर्त को आत्मनिर्भर बनाने के लिए असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प व वाणिज्य की शिक्षा दी। इसके साथ-साथ उन्होंने अपनी पुत्री ब्राह्मी को लिपि विद्या व सुंदरी को अंक विद्या का ज्ञान कराया। आत्मनिर्भरता हेतु अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को राजनीति व अर्थव्यवस्था, बाहुबली को स्वदेश प्रेम, राष्ट्ररक्षा, साधु सेवा एवं स्वाभिमान की रक्षा की शिक्षा दी।

पुत्र विश्वकर्मा को वास्तुविद्या में निष्णात किया तथा अन्य-अन्य पुत्रों को सामान्य ज्ञान के साथ कोई न कोई विशेष विद्या इसीलिये प्रदान की जिससे वे आत्मनिर्भर होकर अपने देश का कुशलता से संचालन कर सकें एवं प्रजा का पुत्रवत् पालन किया जा सके। इसके उपरांत इस आर्यावर्त में षट्खंडाधिपति दिग्विजयी सम्राट-चक्रवर्ती आदि असंख्य राजा हुये जिन्होंने समय-समय पर अपने राज्य को आत्मनिर्भर करने के सूत्र प्रस्तुत किये।

कुरुवंश के त्रय चक्रवर्ती व तीर्थंकर श्री शांतिनाथ, श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ जी, अयोध्या के राजा श्री राम, कुरुजांगल देश के महाराज शान्तनु एवं उग्रवंश के महाराज अश्वसेन आदि आत्मनिर्भर देश के प्रणेता रहे। भगवान् महावीर स्वामी के पूर्व तत्कालीन भारत की राजधानी काशी के अधिपति महाराज चेटक व्राज्य एवं वज्री संघ को एकत्रित करके गणतंत्र की स्थापना करते हुए पूरे देश का संचालन किया। अजातशत्रु, कलिंग चक्राधिपति सम्राट खारवेल, चंद्रगुप्तमौर्य, सम्राट अशोक, विक्रमादित्य, अमोघवर्ष इत्यादि अनेक राजा समय-समय पर अपने देश की वृद्धि एवं समृद्धि के लिये आत्मनिर्भर राष्ट्र का संदेश देते रहे।

आत्मनिर्भरता जहाँ योगी के लिये मोक्ष की कारक होती है वहीं सद्गृहस्थ के लिये धर्म, अर्थ व काम की प्रधान साधिका मानी गई है। आत्मनिर्भर भारत के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक नागरिक निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करे, दूसरों के हितों की रक्षा भी उसी प्रकार करे जिस प्रकार वह परिवार की रक्षा करता है। देश सुरक्षित होगा तभी धर्म, संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार एवं सुख-शांति जीवित रह सकती है। जो देश आत्मनिर्भर नहीं हो पाते वे सबल देशों के द्वारा गुलाम बना लिए जाते हैं।

पराधीनता प्रत्येक क्षेत्र, काल में सर्वाधिक दु:खप्रद मानी गई है। कदाचित् पराधीनता के साथ कोई सुख भी दे तब भी वह सुख स्वाधीनता के दु:ख के पैरों तले दबी धूलि के बराबर है। स्वाधीनता का अभिमान प्रत्येक प्राणी का न केवल जन्मसिद्ध अधिकार है, उसका स्वभाव भी है। हमारी स्वाधीनता को तब तक कोई नहीं छीन सकता जब तक हम आत्मनिर्भर हैं। आत्मनिर्भरता के साथ किया गया प्राणों का विसर्जन भी सुगति का कारण माना जाता है।

देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिये कोई भी एक व्यक्ति तब तक समर्थ नहीं होता जब तक कि उसके समग्र सहयोगी निष्ठापूर्वक उसका साथ देने के लिये कृत संकल्पित न हों। शासक की समग्रता उसके मंत्री मंडल, परिषद, सेना, प्रजा, कोष, पुरोहित, व्यवसायी व महाजनादि से ही पूर्ण मानी जाती है। जिस प्रकार शरीर में आठ अंग होते हैं प्रत्येक अंग का महत्व अपनी-अपनी जगह है उसी प्रकार देश में प्रत्येक वर्ग का महत्व अपनी-अपनी जगह शत-प्रतिशत है। किसी गाड़ी में अनेक पाट्र्स होते हैं कदाचित् एक पार्ट भी कम हो जाये तो गाड़ी समीचीन रूप से गति करने में समर्थ नहीं हो पाती उसी प्रकार देश की किसी भी एक इकाई की उपेक्षा की जाती है तब देश की गति पंगु के समान दिखने लगती है। वृक्ष के सम्पूर्ण विकास के लिए वृक्ष का स्वयं की जड़ों पर आधारित होना अनिवार्य है। स्वाश्रित हुये बिना वह वृक्ष कोंपल, पल्लव, पत्र, पुष्प, फल, छाया, प्राणवायु आदि को देने में समर्थ नहीं होता।

प्रस्तुत ग्रंथ 'आत्मनिर्भर भारत' के लेखक परमपूज्य दिगम्बर जैनाचार्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी श्री वसुनंदी जी मुनिराज हैं, उन्होंने अपनी साधना के समय में से कुछ क्षण निकालकर स्वपर कल्याण की भावना से जो शब्दों का संयोजन किया है वह वर्तमान काल में प्रासंगिक तो है ही इसके साथ-साथ प्रत्येक वर्ग को प्रेरणा देने वाला भी है।

उनकी परिणाम पवित्रता, आध्यात्मिक संपदा, राष्ट्र के प्रति उदात्त चेतना, स्व-पर हितानुबंधी भावना ही मानो सद्विचार व साहित्यसृजन की प्रसव भूमि है। सागर का परिमाण कदाचित् संभव है, किन्तु जिनेन्द्रमुद्रांकित, आगमचक्षु, धर्मोपदेष्टा, सम्यक्चारित्र निष्ठ, स्वाध्याय परायण गुरुदेव के ज्ञान का परिमाण संभव नहीं है। जहाँ से योगी की आध्यात्मिकता का कथन करने वाले आध्यात्मिक ग्रंथ, जिनधर्म के मर्म व सूत्रों का व्याख्यान करने वाले सैद्धान्तिक ग्रंथ, करणीय व्यवहारों की संहिता स्वरूप चरणानुयोग ग्रंथ एवं देश-समाज- संस्कृति व सभ्यता के संरक्षण संवर्धन हेतु अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ तो वहीं वास्तु-ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विषयों पर अपनी कलम चलाकर गुरुवर श्री ने देश को अमूल्य नवनिधि प्रदान की।

राष्ट्र के प्रति जो निष्ठा भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज, दादागुरु आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज में परिलक्षित होती थी वही आज गुरुवर श्री में प्रतिबिम्बित होती है। राष्ट्र शांति महायज्ञ, आर्य संस्कृति, हमारा आर्यावर्त, आत्मनिर्भर भारत जैसा सद्साहित्य उस निष्ठा का ही प्रतिफल है।

इस ग्रंथ का मुखपृष्ठ श्रीमती संगीता जैन, नोएडा के द्वारा तैयार किया गया है एतदर्थ उन्हें व उनके परिवार को जिनशासन की सतत् प्रभावना हेतु सदैव पूज्य गुरुदेव का शुभाशीष। ग्रंथ 'आत्मनिर्भर भारत' का मुख पृष्ठ उन सूत्रों को दर्शा रहा है जिसके कारण भारत देश पूर्णतया आत्मनिर्भर बन सकता है। कृषि, शिल्पादि कला, स्वदेशी, उत्पादन, विभिन्न उद्योग, इन्डस्ट्रीज, शिक्षा, चिकित्सीय

व्यवस्थाएँ आदि एवं भारत का प्राणस्वरूप तथा आत्मनिर्भरता का मूलभूत तत्त्व आध्यात्मिकता को भारत के नक्शे के मध्य वीतरागी मुद्रा के माध्यम से दर्शाया गया है। एवं मानव के दोनों हाथ यहाँ पुरुषार्थ के प्रतीक हैं।

संभव है प्रस्तुत ग्रंथ 'आत्मनिर्भरभारत' का अध्ययन करके निष्पक्ष दृष्टि वाले सुधी पाठकगण निहित सूत्रों में से हंसवत् गुणग्राही दृष्टि बनाकर अच्छाईयों का संग्रहण, अनुपालन एवं प्रसारण करने में निमित्त बनेंगे। आचार्य महोदय ने ग्रंथ में आत्मनिर्भर रूप अपने इष्ट आराध्य को नमस्कार करते हुये अपनी बात को प्रारंभ किया है, मध्य में सभी वर्गों का महत्व दर्शाते हुये कर्त्तव्यपालन की शुभ प्रेरणा दी है एवं अंत में अपने गुरुजनों के प्रति विनम्रता का भाव प्रस्तुत करते हुये गौरवशाली परम्परा का स्मरण किया है। तथा वही गरिमापूर्ण कृति परोक्ष में अपने गुरुवर के हाथ देश के लिये समर्पित करायी है। अंत में ग्रंथकार ने अपनी लघुता व कृतज्ञता को प्रस्तुत करना भी विस्मृत नहीं किया है। हम आशा करते हैं पूर्व में ग्रंथकार द्वारा रचित प्रकाशित कृति की तरह सुधी पाठक इसका भी समादर करेंगे एवं यथेच्छ लाभ लेने का पुरुषार्थ करेंगें।

यद्यपि ग्रंथ संपादन का कार्य दुरुह कार्य माना जाता है क्योंकि संपादक का कर्त्तव्य ग्रंथकार के भावों को पाठक तक पहुँचाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। इस कार्य को सम्पन्न करने का यह हमारा लघु प्रयास है और यह प्रयास भी आचार्य गुरुवर की कृपा दृष्टि का ही प्रतिफल है। सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन है यदि कोई यथोचित सुझाव आप आवश्यक समझते हैं तो विनम्रता पूर्वक प्रस्तुत करने की अनुकंपा करें।

''अलमति विस्तरेण।''

''सर्वेषां मंगलं भवतु''

धर्मो वर्द्धताम्

ॐ ह्रीं नमः

आर्यिका वर्धस्व नंदनी

# प्रस्तावकीय

तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों और वाङ्मय का अवधारण एवं संरक्षण उनके उत्तरवर्ती श्रमणों और उपासकों ने किया है। उन श्रमणों की परंपरा श्रुतधराचार्य, सारस्वताचार्य, प्रबुद्धाचार्य और परम्परा-पोषकाचार्य के रूप में प्राप्त है। अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य वसुनंदी जी महाराज परम्परापोषकाचार्य के रूप में दिगम्बर परम्परा की रक्षा के लिये प्राचीन आचार्यों द्वारा निर्मित ग्रंथों के आधार पर एवं स्वयं के चिंतन से द्रव्य-क्षेत्र-काल और आज के मानव के भावों को दृष्टि में रखकर प्राकृत भाषा में महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रणयन कर रहे हैं। इससे दिगम्बर श्रमण परम्परा को गतिशील बनाये हुए हैं।

आज अनेक ग्रंथों का अनुवाद, संपादन और मौलिक लेखन करके जैन वाङ्मय की अनुपम सेवा करके महान कार्य कर रहे हैं। इधर शताधिक वर्षों से प्राकृत भाषा में ग्रंथों की रचना कम हो रही थी परंतु इस क्षेत्र में अनेक मुनियों, आचार्यों व मनीषियों द्वारा इस भाषा में धार्मिक, सामाजिक एवं नीतिपरक साहित्य सृजन हो रहा है।

विद्वज्जगत् को अत्यंत गौरव है कि श्वेतपिच्छाचार्य पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के प्रियाग्र शिष्य पूज्य आचार्य वसुनन्दी जी महाराज ने प्राकृत भाषा में समाज के सभी वर्गों को अत्यंत उपयोगी धार्मिक सामाजिक, नीतिपरक एवं देश को आत्म निर्भर कैसे और किन-किन साधनों के माध्यम बनाया जा सकता है, इसका समावेश नवीनकृति अप्पणिब्भर-भारदं (आत्मनिर्भर भारत) 96 शीर्षकों में विभक्त कर प्रणय की, जो प्राकृत वाङ्मय की श्री वृद्धि में अपूर्व महनीय योगदान है।

इसका सम्पादन पूज्य आर्यिका वर्धस्वनन्दनी माता जी ने किया है जो वैदुष्यपूर्ण सम्पादन निष्ठता को सिद्ध करता है। यह ग्रंथ प्राकृत भाषा में हैं परन्तु भाषाओं का अर्थ हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में स्पष्ट किया है। अतः सम्पादक को उन भाषाओं का ज्ञान भी आपेक्षित होता है निश्चित रूप से माता जी का भाषात्मक ज्ञान भी अगाध है।

पूज्य आचार्य श्री ने प्राकृत भाषा में जो गाथायें निबद्ध की हैं, वे सूत्र रूप में हैं परंतु विषय का प्रतिपादन स्पष्ट हैं। यह 'आत्म निर्भर भारत' विषयक ग्रंथ प्राकृत भाषा में प्रथम ग्रंथ है जो सभी को गौरवान्वित करने वाला है और प्रत्येक वर्ग के व्यक्तित्व के लिए ग्राह्य है।

आचार्यश्री लिखते हैं कि अप्पणिब्भारत्तं वि परमधम्मो सव्व-जीवाणं' अर्थात् आत्म निर्भरता सभी जीवों का धर्म है इस गाथा को अंग्रेजी एवं सरल संस्कृत भाषा में भी समझाया गया है। देश आत्म निर्भर हो इस भावना के साथ आचार्य श्री ने ग्रंथ को लिखने का महान् पुरुषार्थ किया है। आप लिखते हैं कि जो जितनी अधिक वस्तु, धन, गृह आदि की आकांक्षा करता है और उनमें लीन होता है वह उतना ही पराधीन है योग्य शासक वही है जो अपने स्वाश्रितों को आत्म निर्भर बनाये। आपने आत्म निर्भर बनने के साधन एवं उपाय भी बतलाये हैं।

राजा का आचरण कैसा होना चाहिए बताते हुए लिखते हैं कि आचरण में राजा को स्वयं आत्म निर्भर होना चाहिए क्योंकि उसके आचरण को देखकर जनता भी आत्म निर्भर बनेगी। इस प्रकार आचार्य श्री ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनेक नवीन चिंतन दिये हैं इस चिंतन को पढ़कर मैं स्वयं आश्चर्यचकित हूँ कि आचार्य श्री अहर्निश अभूतपूर्व चिंतन कर व्यक्ति, परिवार, समाज, देश का नया चिंतन निरंतर दे रहे हैं। यह ग्रंथ देश के प्रत्येक नागरिक को पढ़ना चाहिए

विशेष रूप से नेताओं को अवश्य पढ़ना चाहिए जिससे वर्तमान भारत आत्म निर्भर बने ये सूत्र जान सकें और सभी जीव सुखी हो सकें।

इस ग्रंथ को पढ़कर मेरा मन था कि इसके वैशिष्ट्य को विस्तार से बताऊँ परंतु माननीय प्रतिष्ठाचार्य पं. मनोज जी कोठिया ने कहा कि शीघ्र ही चाहिए अतः कालबधि को ध्यान में रखकर मैं इतना कहना चाहता हूँ कि इस लॉक डाउन के समय में लोग बेरोजगारी से परेशान हैं अतः इस ग्रंथ को मार्गदर्शक मानकर व्यक्ति कैसे आत्म निर्भर बनकर देश को आत्मनिर्भर बनाये इसमें यह ग्रंथ महान उपकारी सिद्ध होगा और आचार्य श्री का तो महान उपकार है ऐसी परिस्थिति में समयोचित कृति का प्रणयन किया यह ग्रंथ चार भाषाओं में होने से अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं ऐसे महान नवीन चिंतक आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी महाराज के विद्वत्ता विभासक श्री चरणों में कोटिशः नमोस्तु करता हूँ और इस ग्रंथ की महान विदुषी सम्पादिका पूज्य 105 आर्यिका रत्न वर्धस्व नंदनी माताजी को त्रिबार वन्दामि करता हूँ। पूज्य माता जी इसी प्रकार जिनवाणी की अहर्निश सेवा करती रहे ऐसी मंगल भावना के साथ

**गुरुभक्त**

**डां. शीतलचन्द्र जैन**

**पूर्व प्राचार्य श्री दि. जैन आ.सं. महाविद्यालय, जयपुर**

# पुरोवाक्

डॉ. श्रेयांसकुमार जैन

अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैनइनस्त्रि-परिषद् आगम और आध्यात्म के वेत्ता शताधिक ग्रंथों के रचयिता तथा उपदेष्टा आचार्यप्रवर श्री वसुनन्दी महाराज ने प्राकृत भाषा में लोक कल्याण हेतु 'आत्मनिर्भर भारत' नामक प्रासंगिक कृति का सृजन कर राष्ट्र को समर्पित किया है। यह रचना वर्तमान की मांग है क्योंकि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का पुरजोर प्रयास भारत को आत्मनिर्भर बनाने का चल रहा है। उपयोग की प्रत्येक वस्तु का निर्माण भारत में ही हो जिससे रोजगार बढ़ेगा और बेरोजगारी समाप्त होगी। इसी उद्देश्य की पूर्ति करने में मार्गदर्शन की भूमिका का इस 'आत्मनिर्भर भारत' नाम की कृति से भी कार्य होगा। इसमें लोक के विज्ञाता आचार्य श्री वसुनन्दी जी ने प्रत्येक क्षेत्र में कार्य-उद्योग करने की शिक्षा प्रदान की है।

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करके उसे अपने परिवेश से उचित समायोजन करने के अनुकूल बनाने वाली विद्यग विद्या प्राप्ति का तात्पर्य केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं है, उसे अपने चारों ओर के वातावरण को भी आंख खोलकर देख लेना चाहिए जिससे उसके ज्ञान में विविधता और उसके अवलोकन में सूक्ष्मदर्शिता आ सके, उसे विद्या प्राप्ति में किसी भी प्रकार की जाति पाति का भेदभाव नहीं रखना चाहिए। विद्या प्रत्येक कार्यक्षेत्र में व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने में सहकारी होती है। विद्या-शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य कुशल सुशिक्षित सदाचारी व्यापारदक्ष स्वार्थत्यागी और कर्तव्य परायण बनाना है। स्वावलम्बी बनकर ही राष्ट्र के समुन्नयन में योगदान किया जा सकता है। व्यवसाय उद्योग स्वालम्बी होना चाहिए। व्यसाय-उद्योग के बिना राष्ट्र अधूरा है।

कृतिकार की प्रेरणा है कि न भाषा न शिक्षा न व्यवसाय के लिए परावलम्बी बनो अपितु सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनो इसी से स्वयं का विकास है और राष्ट्र का भी विकास है।

ग्रन्थ लेखक आचार्यवर्य श्री वसुनन्दी महाराज कृति में अपनी भावना व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

**अप्पणिब्भरो जो कोवि सो सुह-हेदू अप्पसंतुट्ठो।**
**अप्पणिब्भरो देसो होज्ज कंखेमि सुहभावे हि॥**

जो कोई भी आत्मनिर्भर होता है, वह आत्म संतुष्ट व स्व-पर सुख का हेतु होता है। देश आत्मनिर्भर हो शुभ भावनाओं से युक्त हो ऐसी आकांक्षा करता हूँ।

ग्रन्थकार अपनी भावना व्यक्ति करने के साथ ग्रन्थ लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट किया है।

**सुहं संती समिद्धी वड्ढेदु सक्कला सक्किदी सया।**
**वोच्छामि सवरहिदाय अप्पणिब्भरभारदगंथं॥**

देश में सुख शांति व समृद्धि हो। सत्कला व संस्कृति का वर्द्धन हो। अत: स्व-पर हित के लिए मैं (आचार्य वसुनन्दी) आत्मनिर्भर नामक ग्रन्थ को कहता हूँ।

ग्रन्थ की विषय वस्तु को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता है कि ग्रन्थ में आत्मनिर्भरता के लिए अनेक उपाय दर्शाये गये हैं। आत्मनिर्भरता को परमधर्म स्वीकार कर सभी क्षेत्रों में और सभी कालों में आत्म-निर्भर होने की प्रेरणा प्रदान की गई है।

आत्म निर्भर ही सुखों का भोक्ता होता है। ग्रन्थ में कहा भी है–

**सुगिहत्थो होज्ज अप्पणिब्भरो किंचिवि सजण-णिब्भरो य।**
**जो सो हु जेत्तिय-अप्प-णिब्भरो तेत्तिय-सुहभोत्तू॥**

अच्छे समीचीन गृहस्थ को आत्मनिर्भर होना चाहिए। किञ्चित् स्वजनों पर भी। जो जितना अधिक आत्मनिर्भर होता है, वह उतना अधिक सुख का भोक्ता होता है।

आत्मनिर्भरता से स्वयं का तो विकास होता है, साथ ही राष्ट्र के विकास में भी सहयोग मिलता है। राष्ट्रीय विकास जन समाज को भटकाव से बचाता है। अनादिकाल से आत्मनिर्भर की शिक्षा ऋषियों, मुनियों, शिक्षकों ने दी है। शिक्षक साहित्यकार की भूमिका आत्मविकास के लिए भी मानी गई है। समाज और शासन को अनुशासित करने की भूमिका में भी वेद, पुराण, उपनिषद् आदि का बहुत बड़ा योगदान है उनमें दर्शाया गया है कि समाज कुप्रवृत्तियों से बचकर वस्तु निर्माण में प्रवृत्ति करे जिससे कार्यक्षमता बढ़ती है और आत्मनिर्भरता आती है।

जैन शासन में तो आत्मनिर्भरता की बात को बताने के लिए भगवान् श्री आदिनाथ ने छः प्रकार के कर्मों की व्यवस्था को समझाकर कर्मभूमि का उपदेश दिया था जैसा कि आदिपुराण में कहा भी गया है—असि मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, विद्या–षट् शिक्षाएँ है। वहीं बताया गया कि विद्या मनुष्यों को यश, कल्याण, धन आदि प्रदान करती है। यह कामधेनु और चिन्तामणि रत्न है। यही धर्म, अर्थ तथा कामरूप फल से सहित सम्पदाओं को उत्पन्न करती है। विद्या ही मनुष्यों का बन्धु है। विद्या ही मित्र है। विद्या ही आत्म कल्याण करने वाली है। विद्या ही साथ जाने वाला धन है और विद्या धन ही समस्त प्रयोजनों को सिद्ध करता है।

इसीलिए कृतिकार द्वारा कहा गया है कि प्रत्येक काल में मंत्र तंत्रादि विद्या सुखवर्द्धक होती है। अंकों के द्वारा त्रिकालवर्ती वस्तुओं को जानने के लिए अंक विद्या विशिष्ट है। जिन वचनों के अनुसार अंकों में सर्व ज्ञान विद्यमान है। संसार में विद्यमान प्रत्येक वस्तु यथायोग्य प्रभाव छोड़ती है व ग्रहण करती है अतः वास्तुविद्या उपादेय है। इस प्रकार आचार्य श्री जिनसेन का अनुसरण करते हुए पुराण साहित्य के विशिष्टता अध्येता आचार्य श्री विद्या को आत्मनिर्भरता का प्रमुख कारण बताते हैं। विविध विद्याएँ लोक में विद्यमान हैं उन विद्याओं का आश्रय लेकर ही आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज ने आत्मनिर्भर

बनने के लिए धनार्जन करने की प्रेरणा प्रदान की है। उनका मानना है कि मानव समाज में निर्धनता एक अभिशाप है। जब तक समाज में विषमता रहेगी शांति नहीं होगी और जब तक सम्पत्ति एवं सुख-साधनों का कुछ लोगों के हाथों में एकाधिकार है, तब तक विषमता रहेगी, शांति नहीं रहेगी। विश्व-शांति एवं सुख-समृद्धि के लिए यह एकाधिकार समाप्त होना चाहिए। समाज हित के लिए अपनी आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना ही तो अपरिग्रहवाद है। जो धन आदि के संग्रह में अधिक संलिप्त रहता है वही परिग्रहाकांक्षी पराधीन होता है। ग्रन्थकार पराधीन व्यक्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं–

**जो कंखदे जावइय-अहियवत्थूणि धण-गिह-जीवा वा।**
**तेसु होदि संलीणो तावइयो परायत्तो सो॥**

जो जितनी अधिक वस्तु, धन, गृह अथवा जीवों की आकांक्षा करता है, उनमें लीन होता है, वह उतना ही अधिक पराधीन होता है। स्वाश्रितों को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। केवल धन का सहयोग करना उचित नहीं है क्योंकि केवल धन का सहयोग उन्हें सुख शांति नहीं दे सकता। सुख-शांति के लिए कार्य-कुशल बनाना अवाश्यक है। तभी वह आत्म निर्भर बन सकते हैं। वे क्षेत्रानुसार कार्य करके आत्मनिर्भर बन सकते हैं। विविध कलाओं में दक्ष ज्ञान-विज्ञान में पारङ्गत आचार्य श्रीवसुनन्दी महाराज ने इस 'आत्मनिर्भर भारत' नामक ग्रंथ में कृषि से पाषाण से पारस्ठ प्राप्ति की कला सिखलायी है वे कहते हैं कि पाषाण बहुल क्षेत्र में जहाँ पहाड़ गुफा आदि होती हैं, जहाँ पानी का अभाव है जिस क्षेत्र में कृषि कार्य नहीं हो सकता उस क्षेत्र में निवास करने वालों को पाषाण के भवन, मंदिर, स्तूप, मूर्ति, मानस्तम्भ, चित्रकारियों, शिलालेख आदि के माध्यम से धनार्जन करना चाहिए और आत्मनिर्भर बनना चाहिए।

इसी प्रकार उन्होंने लकड़ी के खिलौने और मूर्तियाँ आदि बनाने की प्रेरणा प्रदान की है। वे देश की समृद्धि के लिए लिखते हैं–

**जस्सिं खेत्तम्मि बहुल-कट्ठाणि तम्मि णिम्माणेज्ज सया।**
**कट्ठस्स उवयरणं हु सुह-समिद्धीण सग-देसस्स॥**

जिस क्षेत्र में बहुत काष्ठ अर्थात् लकड़ियाँ हो अपने देश की सुख समृद्धि के लिए वहाँ काष्ठ के उपकरणों का निर्माण करना चाहिए।

आत्मनिर्भर बनने के लिए ग्रन्थकार पाषाण के उपकरण निर्माण की प्रेरणा देते हुए मूर्ति निर्माण की कला को भी आत्मनिर्भर बनने के लिए निमित्त बताते हैं–

**णाणाविह-खिल्लणाणि णिम्माणेज्जा बहुविह मुत्तीओ।**

नाना प्रकार के खिलौनों, बहुत प्रकार की मूर्तियों का निर्माण करना चाहिए। गृह भवन प्रकृति के दृश्य सदा स्व-पर सुख का कारण होते हैं।

विविध कलाओं के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा इस 'आत्मनिर्भर भारत' नाम की कृति में बताकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प्रज्ञा-प्रतिमा के धनी आचार्य श्री वसुनन्दी महाराज ने मनाव समाज का बहुत बड़ा उपकार किया है। वे नाना विद्याओं में निपुण है। शिष्यों के अनुग्रह में भी दक्ष है। विविध भाषाओं के ज्ञाता हैं यही हेतु है कि उन्होंने प्राकृत भाषा में अनेक कृतियों का सृजन किया है। उनके द्वारा प्राकृत भाषा में ही लिखी यह आत्मनिर्भर कृति लोक में आत्मनिर्भरता की शिक्षा प्रदान कर समाज और शासन के लिए दिशा दर्शन देगी।

# अनुक्रमणिका


| क्र० | विषय | पृष्ठ सं. | क्र० | विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | मंगलाचरण | 1 | 18. | क्षेत्रानुकूल कार्य | 18 |
| 2. | सिद्ध वंदना | 2 | 19. | पाषाणक्षेत्रानुकूल कर्म | 19 |
| 3. | जिनागम स्तुति | 3 | 20. | शिलालेख | 20 |
| 4. | ग्रंथोद्देश्य | 4 | 21. | पाषाणाद्योपकरण निर्यात | 21 |
| 5. | आत्मनिर्भरता परमधर्म | 5 | 22. | विभिन्नोपकरण निर्माण | 22 |
| 6. | मेरी भावना | 6 | 23. | मूर्ति निर्माण | 23 |
| 7. | भावी परमात्मा | 7 | 24. | काष्ठोपकरण निर्माण | 24 |
| 8. | भोगी व योगी | 8 | 25 | क्षेत्रानुकूल कृषि | 25 |
| 9. | पापिष्ठ व धर्मी | 9 | 26 | पशुपालन | 26 |
| 10. | आत्मनिर्भर ही सुखभोक्ता | 10 | 27 | धातुओं का उपयोग | 27 |
| 11. | पराधीन कौन? | 11 | 28. | वातावरणानुकूल कृषि | 28 |
| 12. | स्वाश्रितों को बनाएँ आत्मनिर्भर | 12 | 29. | शुभ प्रेरणा | 29 |
| | | | 30. | विद्या का सदुपयोग | 30 |
| 13. | संघर्ष से हर्ष | 13 | 31. | अंकविद्या | 31 |
| 14. | अनुभव ही महानिधि | 14 | 32. | वास्तु विद्या | 32 |
| 15. | अनुभव से श्रेष्ठता | 15 | 33. | महत्त्वपूर्ण वास्तुकला | 33 |
| 16. | योग्य स्वामी | 16 | 34. | सुविद्या का फल | 34 |
| 17. | अयोग्य शासक | 17 | 35. | यथा कारण तथा कार्य | 35 |

| क्र० | विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 36. | विश्वशांति कारक | 36 |
| 37. | प्रकृति संयोजन ही धर्म | 37 |
| 38. | कर्त्तव्यपालन महाधर्म | 38 |
| 39. | राजधर्म | 39 |
| 40. | आचरण का प्रभाव | 40 |
| 41. | लघु उद्योग | 41 |
| 42. | स्वजन वृद्धि ही स्ववृद्धि | 42 |
| 43. | उभयभ्रष्ट | 43 |
| 44. | मातृभूमि घातक | 44 |
| 45. | देश सुरक्षित तो सब सुरक्षित | 45 |
| 46. | देशरक्षा | 46 |
| 47. | सहयोगी भी आवश्यक | 47 |
| 48. | महापुरुष वृत्ति | 48 |
| 49. | मर्यादित शासक | 49 |
| 50. | आत्मनिर्भरता हेतु कर्तव्यपालन | 50 |
| 51. | आत्मनिर्भरता | 51 |
| 52. | परतंत्रता-दु:खजननी | 52 |
| 53. | स्वतंत्रता का दु:ख भी श्रेष्ठ | 53 |
| 54. | विरोध नहीं सहयोग | 54 |
| 55. | श्रेष्ठ क्षेत्र | 55 |
| 56. | सेवा धर्म | 56 |
| 57. | पवित्रता सुख हेतु | 57 |
| 58. | नि:स्वार्थ शिक्षा | 58 |
| 59. | देश का मेरुदंड | 59 |
| 60. | व्यापार से समृद्धि | 60 |
| 61. | व्यवसाय का महत्त्व | 61 |
| 62. | व्यवसाय-सुखकारक | 62 |
| 63. | राजकीय व्यवस्थापक | 63 |
| 64. | उचित ब्याज | 64 |
| 65. | आवश्यक धन वितरण | 65 |
| 66. | धन द्वारा समाज समृद्ध | 66 |
| 67. | अति-इति: द्वयघातक | 67 |
| 68. | आत्मनिर्भरता कब? | 68 |
| 69. | अपरिग्रह | 69 |
| 70. | स्वदेशी वस्तु | 70 |
| 71. | उत्पादन विधि | 71 |
| 72. | सर्वहितार्थ वस्तु निर्माण | 72 |
| 73. | उत्तम, मध्यम व जघन्य नर | 73 |
| 74. | दान | 74 |

| क्र० | विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 75. | सहयोग क्रम | 75 |
| 76. | संयुक्त परिवार | 76 |
| 77. | शक्तिवर्द्धन | 77 |
| 78. | अधिकार हनन-पाप | 78 |
| 79. | स्वानपेक्षी | 79 |
| 80. | धर्मी कौन? | 80 |
| 81. | धर्म का प्रभाव | 81 |
| 82. | प्रकृति प्रकोप कहाँ? | 82 |
| 83. | जीएँ व जीने दें | 83 |
| 84. | मादक पदार्थ घातक | 84 |
| 85. | कारण व कार्य पवित्र | 85 |
| 86. | पवित्र भी अपवित्र | 86 |
| 87. | निर्दोष साधनों से महान् कार्य | 87 |
| 88. | असमर्थ साधन | 88 |
| 89. | विपरीत कारण | 89 |
| 90. | जैसी करनी वैसी भरनी | 90 |
| 91. | यथा तथा | 91 |
| 92. | सर्व हित भावना | 92 |
| 93. | हित कारक | 93 |
| 94. | संयम | 94 |
| 95. | संयम का महत्त्व | 95 |
| 96. | दुःख जननी व सुख जनक | 96 |
| 97. | पाप मूल | 97 |
| 98. | आसक्ति ही मूर्च्छा | 98 |
| 99. | दुर्भाव प्रक्षालक जल | 99 |
| 100. | वात्सल्य | 100 |
| 101. | भाव प्रभाव | 101 |
| 102. | दुष्ट में भी सज्जनता संभव | 102 |
| 103. | वस्तुओं का संस्कार | 103 |
| 104. | आत्मशांति बीज | 104 |
| 105. | दुःख हेतु | 105 |
| 106. | स्पर्धा | 106 |
| 107. | उत्साह व स्वास्थ्य कारक | 107 |
| 108. | गुणों से चयन | 108 |
| 109. | संस्कारविहीन कुलीन भी निंद्य | 109 |
| 110. | गुणों से पूज्यता | 110 |
| 111. | परोपकारी | 111 |

| क्र० | विषय | पृष्ठ सं. | क्र० | विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| 112. | विनयशील | 112 | 127. | अज्ञान का फल | 127 |
| 113. | नृपस्वभाव | 113 | 128. | उत्तमवर्गीय जन | 128 |
| 114. | हित वारक | 114 | 129. | मध्यमवर्गीय जन | 129 |
| 115. | सज्जन स्वभाव | 115 | 130. | जघन्यवर्गीय जन | 130 |
| 116 | प्रकृति भी सहयोगी | 116 | 131. | प्रत्येक वर्ग अति महत्त्वपूर्ण | 131 |
| 117. | अनधिकारी | 117 | 132. | आत्मानुशासित | 132 |
| 118. | पापी नहीं, पाप त्याज्य | 118 | 133. | स्वाश्रित सदा सम्मानीय | 133 |
| 119. | आत्मनिर्भर भारत का सृजन | 119 | 134. | आत्मनिर्भर ही समृद्ध | 135 |
| 120. | क्षमापात्र | 120 | 135. | आधार विहीन | 136 |
| 121. | अहिंसा अत्यावश्यक | 121 | 136. | सुदृढ़ आधार | 137 |
| 122. | अन्याय | 122 | 137. | समायोजक शासक | 138 |
| 123. | दोषी कौन? | 123 | 138. | ग्रंथकार की लघुता | 139 |
| 124. | प्रकृति न्यायधर्मा | 124 | 139. | अंतिम मंगलाचरण | 140 |
| 125. | कर्त्तव्य पालन | 125 | 140. | प्रशस्ति | 143 |
| 126. | करणीय | 126 | | | |

॥ॐ॥

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय – डॉ. हेडगेवार भवन, महाल नागपुर

दूरभाष: (0712) 2723003, 2720150 फैक्स नं. 2721589, Email-sachivalay@hedgewarbhavanngp.in

पौष कृ. 13, युगाब्द 5122 — दिनांक – 09 फरवरी, 2021

दिल्ली

आदरणीय संजय जी,

सादर नमस्कार

आप सभी सानन्द, स्वस्थ, कुशल होंगे।

आपके द्वारा दिनांक 21-12-2020 को भेजा गया पत्र तथा पुस्तक की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई।

'आत्मनिर्भर भारत' पुस्तक के लेखन द्वारा श्रद्धेय आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज महाराज जी ने एक अत्यन्त समयोचित कार्य सम्पन्न किया है।

आत्मनिर्भर होने के लिए स्वयं की आत्मा को जानना समझना अनिवार्य है। उसी ज्ञान के प्रकाश में होनेवाले विकास को तथा उसमें स्व-निर्भरता को आत्मनिर्भरता कहा जायेगा। विश्व में प्रचलित मान्यताओं को प्रमाण मानकर खड़ा करने की होड़ में लग जाना तो मात्र अंधानुकरण तथा परतन्त्र मानसिक दासता का ही कारक बनेगा।

भारत की आत्मा आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता पर आधारित स्वधर्म तथा सांस्कृतिक परम्परा सनातन काल से भारत का विश्व को सुपरिचित रूप है। उस आधार पर दृढ़ रह कर ही भारत स्वतंत्र व समर्थ होता आया है। इसलिए आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में लगे सभी को आध्यात्मिकता के सूत्र से भारत की स्व-निर्भरता एकात्मता व सामर्थ्य को पुष्ट करने वाला जीवनपथ ग्रहण करना पड़ेगा।

भारत में वर्तमान में विद्यमान आध्यात्मिक आचार्यों में एक आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज महाराज जी ने उस जीवन पथ को अपने वाङ्मय में प्रवाहित कर वर्तमान समय की महती आवश्यकता को पूर्ण किया है। उनके श्रीचरणों में कृतज्ञता पूर्वक प्रणाम।

ग्रंथ के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रकाशन में लगे सभी को अनेक शुभकामनाएँ।

भवदीय

मोहन भागवत

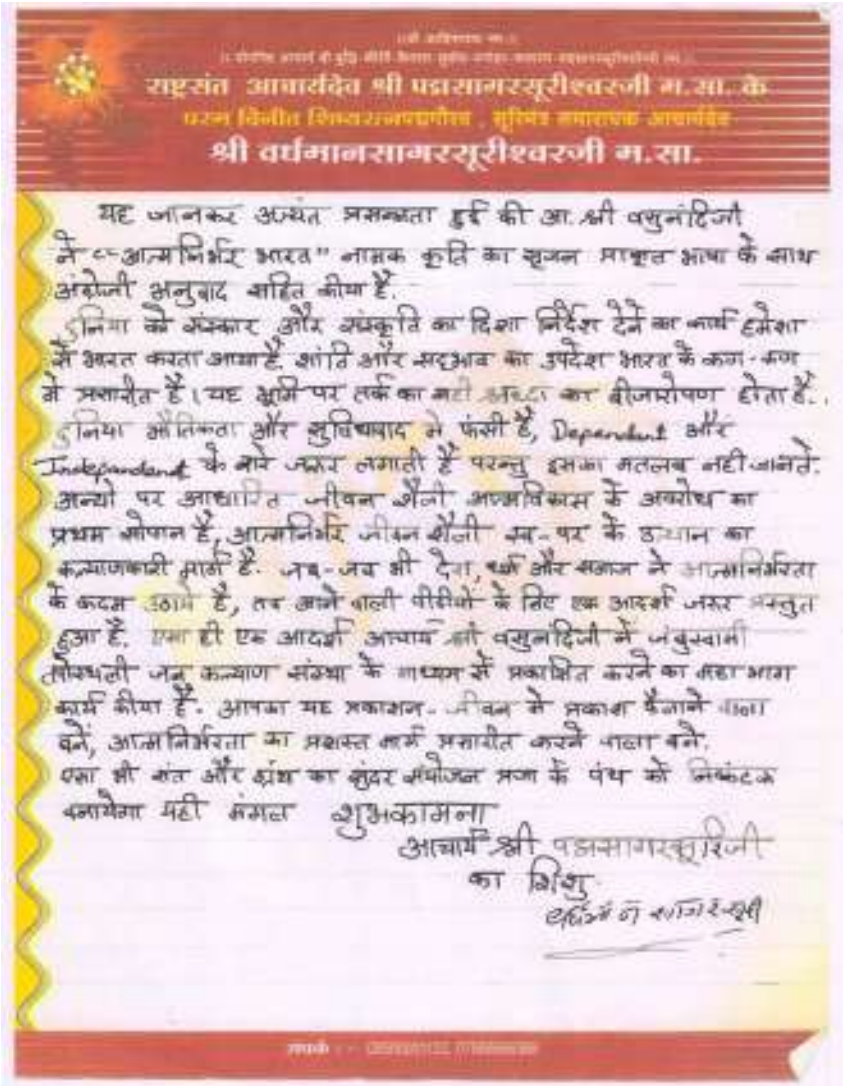

राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के

**श्री वर्धमानसागरसूरीश्वरजी म.सा.**

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई की आ. श्री वसुनंदिजी ने "आत्मनिर्भर भारत" नामक कृति का सृजन प्राकृत भाषा के साथ अंग्रेजी अनुवाद सहित कीया है.

दुनिया को संस्कार और संस्कृति का दिशा निर्देश देने का कार्य हमेशा से भारत करता आया है. शांति और सद्भाव का उपदेश भारत के कण-कण मे समाहीत है। यह भूमि पर तर्क का नहीं श्रद्धा का बीजारोपण होता है.

दुनिया भौतिकता और सुविधावाद मे फंसी है, Dependent और Independent के नारे जरूर लगाती है परन्तु इसका मतलब नहीं जानते. अन्यो पर आधारित जीवन शैली आत्मविकास के अवरोध का प्रथम सोपान है, आत्मनिर्भर जीवन शैली स्व-पर के उत्थान का कल्याणकारी मार्ग है. जब-जब भी देश, धर्म और समाज ने आत्मनिर्भरता के कदम उठाये है, तब आने वाली पीढीयों के लिए एक आदर्श जरूर प्रस्तुत हुआ है. ऐसा ही एक आदर्श आचार्य श्री वसुनंदिजी ने जंबुस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था के माध्यम से प्रकाशित करने का बड़ा भारी कार्य कीया है. आपका यह प्रकाशन जीवन मे प्रकाश फैलाने वाला बने, आत्मनिर्भरता का प्रशस्त मार्ग प्रसारीत करने वाला बने.

ऐसा ही संत और ग्रंथ का सुंदर संयोजन प्रजा के पंथ को निष्कंटक बनायेगा यही मंगल शुभकामना

आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी
का शिष्य
वर्धमानसागरसूरी

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

दिनांक 11.01.2021

## संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि **श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था, भरतपुर (राजस्थान)** द्वारा दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य **श्री वसुनन्दी जी मुनिराज** द्वारा लिखित **'आत्मनिर्भर भारत'** नामक कृति प्राकृत भाषा में **प्रकाशित** की **जा** रही है।

आज प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है जिसके लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं भी चलाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री की यह कृति 'आत्मनिर्भर भारत' बनाने के संकल्प के बारे में देशवासियों को जागरूक करने की दिशा में सहायक सिद्ध होगी।

मैं आचार्य श्री वसुनन्दी जी को उनकी कृति 'आत्मनिर्भर भारत' के लिए हार्दिक शुभेच्छा प्रेषित **करता** हूं तथा पुस्तक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

राजनाथ सिंह

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012285, +91 11 23019000, Fax : +91 11 23019403
E-mail : rm@mod.nic.in

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग;
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highways;
Micro, Small and Medium Enterprises
Government of India

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज जी ने **'आत्मनिर्भर भारत'** नामक लघुकाय कृति का सृजन प्राकृत भाषा में किया है।

भारतीय संस्कृति पुरातनकाल से प्राणिमात्र के सुख-शांति की सृजक व संरक्षक रही है। आत्मनिर्भरता भी धर्म का एक सम्बल रूप है। किसी भी देश की समुन्नति, समृद्धि एवं बहुमुखी विकास के लिए इस प्रकार की सोच महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करती है। राष्ट्र के सम्यक समुन्नयन में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका शासक की होती है उतनी ही भूमिका स्वपर कल्याण में रत साधु संतों की भी होती है।

मैं आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज जी एवं श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूं।

**'आत्मनिर्भर भारत'** पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(नितिन गडकरी)

**दिनांक:** 21 दिसम्बर, 2020
**स्थान:** नई दिल्ली

Room No. 921, Transport Bhawan, 1, Parliament Marg, New Delhi – 110 001, Tel.: (RTH) 011-23710121, 23711262 (O), 23719023 (F),
Room No. 169, Udyog Bhawan, Rafi Marg, New Delhi – 110 011, Tel.: (MSME) 011-23061666, 23061739 (O), 23063141 (F),
E-mail: nitin.gadkari@nic.in; website: www.morth.nic.in / https://msme.gov.in

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
*Ramesh Pokhriyal 'Nishank'*

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज जी ने 'आत्मनिर्भर भारत' नामक श्रेष्ठ कृति का सृजन प्राकृत भाषा में किया।

भारतीय संस्कृति मूलतः 'धर्म' द्वारा निर्देशित है। 'धर्म' के भारतीय परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में महर्षि व्यास का कथन है – "धारणात् धर्म इत्याहु" अर्थात धर्म वह है जिसे धारण किया जाता है। समाज में रहते हुए व्यक्ति जीवन के प्रति स्वयं के व्यक्तित्व में जिन मानवीय गुणों को धारण करता है, वही धर्म है। धर्म को सदैव व्यापक अर्थ में स्वीकार करना चाहिए क्योंकि यह मानवता के प्रति व्यक्तिगत और सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक, सांसारिक तथा पारलौकिक सभी कार्यों में विभिन्न कर्तव्यों के पालन में निहित होता है। धर्म को धारण कर व्यक्ति का अस्तित्व एवं व्यक्तित्व दोनों पूर्ण हो जाते हैं। धर्म जीवन के प्रति सर्वव्यापक, सर्वदेशीय और सर्वकालिक दृष्टिकोण बनाता है इसीलिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी मानव जीवन के लिए धर्म को एक महान शक्ति बताया और कहा- "धर्म वह शक्ति है जो व्यक्ति को बड़े-बड़े संकटों में भी ईमानदार बनाये रखती है और यह इस संसार में दुखी व्यक्ति की आशा का अन्तिम सहारा है।"

आत्मबल व्यक्ति के मनोबल को सशक्त बनाकर उसे आत्मनिर्भर बनाता है। कोरोना जैसी वैश्विक आपदा के समय भी इसी आत्मबल ने व्यक्ति को उत्साह प्रदान किया है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' का उद्घोष राष्ट्र की समुन्नति, समृद्धि और बहुमुखी विकास के लिए किया है। राष्ट्र निर्माण के इस महती कार्य में हमारे मनीषियों और आचार्यों की भूमिका स्तुत्य है। 'आत्मनिर्भर भारत' नामक प्राकृत भाषा में मूलतः रचित तथा संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में अनुदित यह ग्रन्थ निःसंदेह 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhawan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698 Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in

थावरचन्द गेहलोत
THAAWARCHAND GEHLOT
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

कार्यालय : 202, सी विंग, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली-110115
Office : 202, 'C' Wing, Shastri Bhawan,
New Delhi-110115

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री जम्बूस्वामी जन कल्याण संस्था बोलखेड़ा, कामां, भरतपुर, राजस्थान के सानिध्य में "आत्म निर्भर भारत" नामक शीर्षक एक "लघुकाय" पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें दिगम्बर जैन संप्रदाय के आदरणीय आचार्य वसुनंदी जी महाराज ने प्राकृत भाषा में लेखन किया है ।

विदित है कि प्रत्येक देश का अपना एक साहित्य होता है, जिसका देश के सर्वांगीण विकास में उतना ही महत्वपूर्ण स्थान होता है, जितना कि कमल आदि पुष्पों के विकास में, सूर्य के प्रकाश का ।

मुझे उम्मीद है कि भारत सरकार के उदघोषित अभियान में यह "लघुकाय" पुस्तक भी सहयोगी सिद्ध होगी । मैं इस पुस्तक के सफलतम प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ ।

(थावरचंद गेहलोत)

LIEUTENANT GOVERNOR
JAMMU & KASHMIR

RAJ BHAVAN
SRINAGAR-190001

## संदेश

श्री जंबूस्वामी जन कल्याण संस्था, बोलखेड़ा, कामां, भरतपुर, राजस्थान के सानिध्य में 'आत्म निर्भर भारत' शीर्षक की लघुकाय पुस्तक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि इस पुस्तक में दिगम्बर जैन संप्रदाय के आदरणीय आचार्य वसुनंदी जी महाराज ने प्राकृत भाषा में लेखन कर आशीर्वाद प्रदान किया है।

देश के सर्वांगीण विकास में आत्म निर्भर भारत सिर्फ एक नारा नहीं है, बल्कि एक जिम्मेदारी है जिसे प्रत्येक सजग नागरिक को पूरी श्रद्धा एवं तन्मयता से निभाना है। और, चूंकि पुस्तकें हमारे समाज और देश में हो रहे क्रांतिकारी बदलाव को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है, इसलिए मैं इसे एक सराहनीय प्रयास मानता हूँ।

मैं प्रस्तुत पुस्तक की सफलता के लिए पूर्णरूपेण आश्वस्त हूँ कि यह रचना लोगों द्वारा अवश्य सराही जाएगी। साथ ही भविष्य के लिए श्री जंबूस्वामी जन कल्याण संस्था को शुभकामनाएँ देता हूँ।

मनोज सिन्हा

( मनोज सिन्हा)

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

दिनांक 01-01-2021

## संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा **'आत्मनिर्भर भारत'** नामक कृति का सृजन मूलभाषा प्राकृत में किया गया है।

यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि यह कृति संस्कृत, हिंदी व अंग्रेजी भाषा में अनुवादित है। आशा है कृति, राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में लोगों के लिए सार्थक सिद्ध होगी।

मैं संस्था द्वारा समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए किए जाने वाले प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ और 'कृति' की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

(अरविन्द केजरीवाल)

सत्यमेव जयते

राम निवास गोयल
Ram Niwas Goel

अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा
Speaker, Delhi Vidhan Sabha

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष : 23890140, 23890150
फैक्स : 23890375
Old Secretariat, Delhi - 110054
Tel. : 23890140, 23890150
Fax : 23890375

पत्रसंख्या-1(1)/अवि/2020/ 654

दिनांक : 29 दिसंबर, 2020

## संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव की बात है कि दिगम्बर जैन समुदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा प्राकृत भाषा में सृजित की गई 'आत्मनिर्भर भारत' नामक कृति का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसका संस्कृत, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है, जो कि पुरातन काल से इसी धरा के युग-वासियों की सृजक, संवर्धक एवं पोषक रही है। इसकी सहिष्णु प्रकृति ने ही इसे दीर्घ आयु एवं स्थायित्व प्रदान किया है और साथ ही इसे जीवन-पद्धति की संज्ञा भी दी गई है जहाँ अलग-अलग धर्मों एवं परंपराओं के लोग रहते हैं।

निःसंदेह, राष्ट्र के उत्थान एवं कल्याण में साधु-संतों की एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिनका मार्गदर्शन समय-समय पर तत्कालीन शासकों को प्राप्त होता रहा है और यह अत्यंत गर्व एवं सम्मान की बात है कि इसी परिप्रेक्ष्य में आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' नामक कृति का सृजन किया गया है।

मैं इस प्रकाशन की सफलता हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

(राम निवास गोयल)
29/12/2020

श्री संजय कुमार जैन,
संरक्षक,
श्री वसुनन्दी ज्योतिषाचार्य
जन कल्याण संस्था (रजि.),
बीसलपुर (कामां), भरतपुर, राजस्थान।

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT. I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आईन्दिपूर्वा,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली–110002
Email: [illegible]

D.O. No. [illegible]
Date: 25/11/2020

**संदेश**

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री जंबूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था बोलखेड़ा, कामां, भरतपुर, राजस्थान के सानिध्य में "आत्म निर्भर भारत" नामक शीर्षक एक "लघुकाय" पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें दिगम्बर जैन संप्रदाय के आदरणीय आचार्य वसुनंदी जी महाराज ने प्राकृत भाषा में लेखन किया है।

मुझे उम्मीद है यह पुस्तक भारत के साहित्य प्रेमियों एवं समस्त देशवासियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। इस अवसर में अपनी शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूं।

मनीष सिसोदिया

अनिल विज

अ॰शा॰ पत्र क्र॰ 992

गृह, शहरी स्थानीय निकाय, स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान, आयुष, तकनीकी शिक्षा एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, हरियाणा, चण्डीगढ़।

दिनांक : 05/01/2021

## संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज जी ने **'आत्मनिर्भर भारत'** नामक लघुकाय कृति का सृजन प्राकृत भाषा में किया है ।

भारतीय संस्कृति पुरावैदिक काल से ऋषिराज के शुद्ध शांति की पूजक व संवाहक रही है । आत्मनिर्भरता भी धर्म का एक सम्यक रूप है । किसी भी देश की समुन्नति, समृद्धि एवं बहुमुखी विकास के लिए इस प्रकार की सोच महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करती है । राष्ट्र के समग्र समुन्नयन में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका शासक की होती है, उतनी ही भूमिका स्वपर कल्याण में रत साधु संतों की भी होती है ।

मुझे उम्मीद है कि भारत सरकार के उद्घोषित अभियान में यह **'लघुकाय'** पुस्तक भी सहयोगी सिद्ध होगी । मैं इस पुस्तक के सफलतम प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अनिल विज)

**DR. ANIL JAIN**
Member of Parliament
(Rajya Sabha)

Residence : D-344, I-B Lane,
Anupam Garden, Sainik Farm,
South Delhi-110068
Mobile : 9810121907
Tel. : 011-29536776
E-mail : aniljain.dr@gmail.com

AJO/388/2020

Date :-05/01/2021

# Message

It is a great pleasure to know that under the aegis of Shri JAMBU SWAMI JAN KALYAN SANASTHA, BOL KHEDA, KAMAAN, Bharatpur, Rajasthan, a book called "ATAMNIRBHAR BHARAT" is being published, which has been written in Prakrit language by venerable Sh. Acharya Vasunandi Ji of Digambar Jain community. Acharya Shree Ji ko Naman.

Every attempt in scholarship and literary pursuits occupy a stellar place in a nation's building and intellectual aggrandisement of its population. It is like a veritable elixir of life for all the living beings.

I believe that this book will be immense contributory value in contributing to intellectual traction to the Government of India's clarion call of "ATAMNIRBHAR BHARAT".

My best wishes for the publications of this book.

Dr. Anil Jain
Member of Parliament
Rajya Sabha

Chief Whip
Aam Aadmi Party, Rajya Sabha
Member :
- Parliamentary Standing Committee on Commerce, Rajya Sabha
- Committee on Papers Laid on the Table, Rajya Sabha
- Committee of Parliament on Official Language
- Consultative Committee for the Ministry of Labour & Employment, Govt. of India

Ref. No. MP/RS/12/1023

सुशील कुमार गुप्ता
Sushil Kumar Gupta
संसद सदस्य (राज्य सभा)
Member of Parliament
(Rajya Sabha)

मुख्य सचेतक
आम आदमी पार्टी, राज्यसभा
सदस्य :
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

Dated: 18/12/2023

## शुभकामना संदेश

प्रिय श्री आर सी गर्ग जैन जी,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि दिगंबर जैन संप्रदाय के आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज जी के द्वारा भारतीय संस्कृति पर आधारित "आत्मनिर्भर भारत" नामक लघुकाय कृति का सर्जन किया है। पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परम्परा की भूमि है। इस कृति के माध्यम से आचार्य जी ने धर्म व कर्म के साथ अहिंसा और दया की भावना भी जगायी है। यह रचना अवश्य ही समाज में समृद्धि एवं सर्वांगीण विकास में एक सुयोग्य प्रतिनिधि की तरह सहायक सिद्ध होगी तथा सामाजिक व धार्मिक भावनाएं सर्व समाज में अवश्य ही एक विशेष स्थान प्राप्त करेगी। इस लघु कृति का सृजन मूलभाषा प्राकृत के साथ संस्कृत, हिंदी व अंग्रेजी में अनुवादित किया जा रहा है, जिससे देश के हर नागरिकों को समझ आ सके। देश के विकास में जैन समाज की बहुत अहम भागीदारी है तथा आत्मनिर्भर भारत की लघु कृति से भारतीयों नागरिकों में दया और सद्भाव के निर्माण की क्षमता विकसित होने की प्रेरणा मिलेगी।

आपके द्वारा प्रकाशित यह रचना भारतीय नागरिकों के लिए मार्गदर्शक बने यही मेरी अभिलाषा तथा शुभकामनाएं हैं।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ० सुशील गुप्ता)

श्री आर सी गर्ग जैन
अध्यक्ष
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था (रजि०)
बोलखेड़ा (कामां)
भरतपुर, राजस्थान

Camp Office : 18, Feroz Shah Road, New Delhi - 110001, Phone: 011-[illegible]
Residence : [illegible], East Punjabi Bagh, New Delhi-110026, Phone: 011-[illegible]
E-mail : [illegible]@sansad.nic.in, [illegible]@gmail.com

**रमेश बिधूड़ी**
संसद सदस्य
दक्षिण दिल्ली (लोक सभा)
सभापति:
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस संबंधी स्थायी समिति
सदस्य:
अन्य पिछड़ा वर्ग संबंधी समिति,
[illegible] संबंधी राष्ट्रीय बोर्ड
सह-प्रभारी, भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश

कार्यालय : कमरा सं. 115, 'बी'-ब्लॉक,
नई संसदीय सौध विस्तार,
दिल्ली-110 001
दूरभाष : 011-23410232, 23035761
टेलीफैक्स : 011-23410253


दि. 26 सितंबर, 2020

# शुभकामना संदेश

जो देश जितने अधिक आत्मनिर्भर हैं उतने ही अधिक विकासशील सुखद व समृद्ध माने जाते हैं भारत आत्मनिर्भर बने और विश्व के सन्मुख आदर्श देश व गुरु देश के रूप में स्वीकार किया जाए , इसके लिए प्रत्येक भारतीय नागरिक को आत्मनिर्भरता का जीवन जीना चाहिए और विदेशी वस्तुओं की पराधीनता से मुक्त होना चाहिए दिगंबर जैन संप्रदाय के श्रेष्ठ व आदर्श आचार्य वसुनंदी जी महाराज ने पुरातन प्राकृत भाषा में आत्मनिर्भर भारत ग्रंथ का लेखन किया है भारत सरकार के द्वारा उदघोषित अभियान में यह पुस्तक भी सहयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सफलतम प्रकाशन के लिए श्री जंबू स्वामी जन कल्याण संस्था बोलखेड़ा,कामा ,भरतपुर, राजस्थान को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं और श्रेष्ठ विचारों के संयोजक एवं विराट व्यक्तित्व के धनी पूज्य दिगंबराचार्य संत श्री वसुनंदी जी के चरणों में सविनय नमोस्तु प्रस्तुत करता हूं



(रमेश बिधूड़ी)

निवास: 179 तुगलक हाउस, गांव तुगलकाबाद, नई दिल्ली-110 044, दूरभाष: 011-26054499 फैक्स: 011-29965888
48, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-110003, दूरभाष: 011-24654499, 24611650
ई-मेल: rameshbidhuri@yahoo.in

**GAUTAM GAMBHIR**
Member of Parliament
Lok Sabha
East Delhi

सत्यमेव जयते

Member
Parliamentary Standing Committee
on Urban Development

Ref. MP/ED/GG-3591/MSG

Date 08/10/2020

## सन्देश

अति प्रसन्नता का विषय है कि आत्मनिर्भर निर्भर भारत के उद्देश्य हेतु आपके द्वारा "आत्मनिर्भर" शीर्षक से एक ग्रंथ का प्रणयन किया गया है।

यह ग्रंथ अपने उद्देश्य की पूर्ति करे व ग्रंथ के प्रकाशन पर सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

भविष्य में भी आत्मनिर्भता के उद्देश्य से आप अनेक जनहित व समाजहित में निरन्तर इसी प्रकार कार्य करते रहे ऐसी आशा है।

धन्यवाद

गौतम गंभीर

2, Jagriti Enclave, Main Vikas Marg, Delhi - 110092
Tel. 011-22140150, 43619405 E-mail : mpofficeeastdelhi@gmail.com

**अनिल फिरोजिया**
सांसद (लोकसभा)
उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र

निवास : 5, [illegible], उज्जैन
मो. 8120003009
Email : ujjainmp22@gmail.com

क्रमांक

दिनांक 21/12/2020

**- संदेश -**

हर्ष का विषय है कि श्री जंबूस्वामी जनकल्याण संस्था बोलखेड़ा, भरतपुर राजस्थान के सानिध्य में **"आत्म निर्भर भारत"** पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसे दिगम्बर जैन संप्रदाय के पूज्य आचार्य वसुनंदी जी महाराज ने प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध किया है, प्रत्येक देश की अपनी संस्कृति एवं साहित्य होता है जो देश एवं समाज विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है।

**"आत्म निर्भर भारत"** शीर्षक की यह **"लघुकाय"** पुस्तिका समस्त पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, पुस्तिका प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को मेरी शुभ मंगलकामनाएं।

अनिल फिरोजिया

ZAKIR KHAN
CHAIRMAN

ਦਿੱਲੀ ਘੱਟ ਗਿਣਤੀ ਕਮਿਸ਼ਨ
दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग دہلی اقلیتی کمیشن
DELHI MINORITIES COMMISSION
GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
C-BLOCK, 1st FLOOR, VIKAS BHAWAN, NEW DELHI-110002
Phone : 23370829
E-mail : [illegible]
Website : [illegible]

# संदेश

मैंने अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज के द्वारा रचित **"आत्मनिर्भर भारत"** नामक पुस्तक का अध्ययन किया जिसके उपरांत मुझे आभास हुआ कि आचार्य जी भारत की संप्रभुता एवं इसकी संस्कृति से कितना अधिक प्रेम करते हैं। उन्होंने इस पुस्तक में भारतवासियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की युक्तियों का वर्णन किया है। उन्होंने इस पुस्तक में लिखा है कि जो मनुष्य आत्मनिर्भर नहीं है वह पराधीन हो जाता है। हमारी स्वाधीनता को तब तक कोई नहीं छीन सकता जब तक हम आत्मनिर्भर हैं। स्वाधीनता के बिना सभी प्रकार के सुख व सम्पत्ति निरर्थक है। निःसंदेह यह पुस्तक पाठकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज को उनके इस अद्भुत कार्य के लिए बधाई देता हूं।

(जाकिर खान)
**अध्यक्ष, दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग**

आतिफ रशीद
उपाध्यक्ष
ATIF RASHEED
Vice-Chairman

भारत सरकार
Government of India
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग
National Commission For Minorities

Dated: 01 /03/21

This is my pleasure to write about the book **"AATAMNIRBHAR BHARAT" authored by Jain Aacharya Shri. Vasunandi Ji Muniraaj.**

I would like give many congratulations to respected Jain Aacharya Shri Vasunandi ji muniraj. Aatamnirbhar ideology is also a direction of any religion it's very essential for all round development for community.

This book gives a strong inspiration to become self-reliant or aatamnirbhar.

My warm greetings and good wishes!

Yours sincerely,

**(Atif Rasheed)**

Shri. Pratham Mittal Jain Ji,
Advocate & Global Lawyer,
Supreme Court of India

Office Add.:- कक्ष संख्या 301, ब्लॉक–3, (तीसरी मंजिल), सी जी ओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
Room No. 301, Block-3, (3rd Floor), CGo Complex, Lodhi Road, New Delhi-110003
दूरभाष / Tel.: 011-24363641, फैक्स / Fax: 011-24363301, 24366410, Mob.: 8899424848 (Personal)
Email: atif.rasheed@nic.in, atifrasheed1995@gmail.com, Website: www.ncm.nic.in
Residence Add.: 194/27, St. No. 5, Ghaffar Manzil, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025

सचिन पायलट
विधायक-टोंक

निवास :
11, सिविल लाईन्स, जयपुर।
फोन : 0141-2220000
[illegible]

दिनांक : 25-12-2020

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' नामक लघुकाय कृति का मूलभाषा प्राकृत में सृजन किया गया है। साथ ही इस कृति को संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवादित भी किया गया है।

मैं इस अवसर पर आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज को उनकी उक्त रचना के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए पुस्तक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

सद्भावी

( सचिन पायलट )

**श्री संजय कुमार जैन,**
संरक्षक, श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली
जन कल्याण संस्था,
बोलखेड़ा (कामां), जिला भरतपुर।

दूरभाष: 011-23063522
011-23019080
वेबसाइट : www.inc.in

# अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

**देवेन्द्र यादव**
प्रभारी : उत्तराखण्ड
स्थायी सदस्य कांग्रेस कार्यसमिति

24, अकबर रोड,
नई दिल्ली-110011

17 सितम्बर, 2020

## सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज 'आत्मनिर्भर भारत' नामक लघुकाय कृति का प्रकाशन करने जा रहे हैं। सदियों से हमारे देश में सन्तों, मुनियों तथा ऋषियों का, राष्ट्र के बहुमुखी विकास के लिए बहुत योगदान रहा है। तत्कालीन राजाओं और शासकों को उनके राज्यों को पूर्ण विकसित करने तथा प्रजा को सुखी रखने के लिए अनेकों महत्वपूर्ण सुझाव देते रहते थे। आज की परिस्थिति में भी हमारे देश को ऐसे महत्वपूर्ण सुझावों एवं मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता है। मैं आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के इस महत्वपूर्ण प्रयास के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

मैं 'आत्मनिर्भर भारत' नामक लघुकाय कृति के प्रकाशक मण्डल के सभी सदस्यों को इस के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(देवेन्द्र यादव)

**श्री आर० सी० शर्मा,**
**अध्यक्ष,**
**श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जनकल्याण संस्था (पंजी०)**
**बोलखेड़ा (कामां)**
**जिला–भरतपुर (राज०)**

आवास : 301, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, दूरभाष : 011-45783698, 9213666471
ई-मेल : devendrayadavoffice@gmail.com

Scanned with CamScanner

दूरभाष: 23792376, 23019080
एक्स. : 456
ई-मेल : officesrsurjewala@gmail.com
वेबसाईट : www.inc.in

# अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

रणदीप सिंह सुरजेवाला
महासचिव

24, अकबर रोड,
नई दिल्ली-110011

दिसम्बर, 2020

## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा "श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था (पंजीकृत)", बौलखेड़ा (कामां), जिला भरतपुर (राजस्थान) के तत्वाधान में **'आत्मनिर्भर भारत'** नामक लघुकाय कृति का सृजन मूलभाषा प्राकृत में किया गया है, साथ ही संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में अनुवादित भी है।

मेरी ओर से **'आत्मनिर्भर भारत'** कृति के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करें।

(रणदीप सिंह **सुरजेवाला**)

**श्री संजय कुमार जैन,**
संरक्षक, "श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था (पंजीकृत)",
बौलखेड़ा (कामां), जिला भरतपुर
(राजस्थान)

Phone : 011-23018277
011-23019080
Website : www.inc.in

# ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE

**KULJIT SINGH NAGRA, MLA**
In-charge, Nagaland, Sikkim & Tripura
Permanent Member-CWC

24, AKBAR ROAD
NEW DELHI-110 011

17 दिसम्बर, 2020

## सन्देश

मुनिराज जी को कोटि कोटि नमन, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन के आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज 'आत्मनिर्भर भारत' नामक लघुकाय कृति का प्रकाशन करने जा रहे हैं। सदियों से हमारे देश में सन्तों, मुनियों तथा ज्ञानियों का, राज्य के बहुमुखी विकास के लिए बहुत योगदान रहा है। तत्कालीन राजाओं और शासकों को उनके राज्यों को पूर्ण विकसित करने तथा प्रजा को सुखी रखने के लिए अनेकों महत्वपूर्ण सुझाव देते रहते थे। आज की परिस्थिति में भी हमारे देश को ऐसे महत्वपूर्ण सुझावों एवं मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता है। मैं आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के इस महत्वपूर्ण प्रयास के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

मैं 'आत्मनिर्भर भारत' नामक लघुकाय कृति के प्रकाशक मण्डल के सभी सदस्यों को कृत के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

K.S. Nagra

(कुलजीत सिंह नागरा)

श्री आर० सी० गर्ग,
अध्यक्ष
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जनकल्याण संस्था (पंजी०)
बोलखेड़ा (कामां)
जिला–भरतपुर (राज०)

**Resi.** : H. No. 397, Phase-3A, Mohali, Chandigarh-160055 Mob. : 09888000020
E-mail : officeksnagra@gmail.com, Website : www.kuljitnagra.com

# बहुजन समाज पार्टी

## दिल्ली प्रदेश

केन्द्रीय कार्यालय :
4, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड,
नई दिल्ली -110001
फोन : 011-[illegible],
फैक्स : [illegible]

प्रान्तीय कार्यालय :
[illegible]
[illegible]
नई दिल्ली-[illegible]
फोन : 011-[illegible]

क्रमांक :

दिनांक : 19-01-2021

संदेश

भारतीय संस्कृति पुरावैदिक काल से प्राणीमात्र के सुख–शांति के सृजक व संवर्द्धक रही है। प्रारंभ में षट्कर्मोपदेश व अहिंसा, करुणा का उपदेश दिया। आत्मनिर्भरता भी धर्म का एक सम्यक रूप है। किसी भी देश की समुन्नति, समृद्धि एवं बहुमुखी विकास के लिए इस प्रकार की सोच महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करती है। राष्ट्र आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक आदि सर्वावस्थाओंमें स्वाधीन हो, इस प्रकार की प्राणी मात्र के प्रति हितकारिणी भावना से प्रेरित होकर वर्तमानकालीन भारत सरकार ने 'भारत आत्मनिर्भर बने' इस प्रकार का उद्घोष किया है।

राष्ट्र के सम्यक संतुलन में जितनी भूमिका स्वपर कल्याण में रत साधु संतों की भी होती है। प्रत्येक काल में देश की सुरक्षा व संवर्द्धन में निर्ग्रन्थ गुरुओं का निर्देशन तत्कालीन शासकों को प्राप्त हो रहा है। इसी दृष्टि से दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आर्चा श्री वसुनन्दी जी मुनिराज ने 'आत्मनिर्भर भारत' नामक लघुकाय कृति का सृजन मूलभाषा प्राकृत में किया है व साथ ही संस्कृत, हिंदी व अंग्रेजी भाषा में अनुवादित है।

यह कृति भारतीय सुधी नागरिकों के हाथों तक पहुंचे तथा वे राष्ट्र के सर्वांगिण विकास में सहयोगी बन सकें। अतः कृति के कुशल प्रकाशन व राष्ट्र हित के लिए आपसे निवेदन है कि अपनी शुभकांक्षाएं प्रेषित कर हमें कृतार्थ करें।

19.1.21

अध्यक्ष

Tarak Singh
Member, [illegible] B.A.-D
Sewerage & Drainage (Including
Drainage Pumping Station),
SC (Mechanical), [illegible]
Councillor, Ward No. - 118

THE KOLKATA MUNICIPAL CORPORATION
Central Municipal Office
5, S. N. Banerjee Road • Kolkata - 700 013
Office Ph.: [illegible]
[illegible]
email: [illegible]

Ref. No. : ..............  Date: [illegible]

Message

It gives me great pleasure to know that under the aegis of Shri Jambu Swami Jain Kalyan Sanstha Bol Kheda, Kamaan, Bharatpur, Rajasthan a booklet called '[illegible]' is being published, which has been written in Sanskrit language by venerable Acharya Vasunandi Ji of Digambar Jain community.

Every attempt in scholarship and literary pursuit occupy a stellar place in a nation's building and intellectual aggrandisement of its population. It is like a veritable elixir of life for the living beings.

I am personal conviction that this book will be immense contributory value in contributing to intellectual traction to the Government of India's clarion called [illegible].

My best wishes for the publication of this booklet.

TARAK SINGH
Member, Board of Administrators
Kolkata Municipal Corporation

Resi.: [illegible], Jyotish Roy Rd. • Kolkata-700 053 • ☎: [illegible]

M. சந்திரபிரபா B.Sc., D.P.T., M.A., M.L.A.
[illegible]
விருதுநகர் மாவட்டம்
செல் : 93841 87842, 96558 58203

[illegible]
விருதுநகர் மாவட்டம் - 626 [illegible]

நாள் 30/12/[illegible]

வணக்கம்

ஸ்ரீ ஐயப்ப சுவாமி [illegible] கம்பளம் விரித்த, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] சுவாமிகள் உதவியுடன் அருணோதய பாரத் என்று [illegible] மாதாந்திர மொழியில் டிசம்பர் [illegible] [illegible] சேர்ந்த [illegible] வைகுண்ட அய்யா அவர்களைப் [illegible] புத்தகத்தை வெளியிடுவது எனக்கு மிகுந்த மகிழ்ச்சி அளிக்கிறது.

இந்திய அரசாங்கத்தின் அங்கீகாரம் [illegible] அருணோதய பாரத் என்ற புத்தகம் [illegible] ஒரு நேர்மையான செய்தியை சொல்லும் [illegible] [illegible] என்று நான் [illegible] நம்புகிறேன். இந்த [illegible] வெற்றி பெற எனது வாழ்த்துக்கள்.

அன்புடன்
M. [signature] 30/12/[illegible]

நன்றி

M. CHANDRAPRABHA
Member of Legislative Assembly
SRIVILLIPUTTUR CONSTITUENCY
Virudhunagar

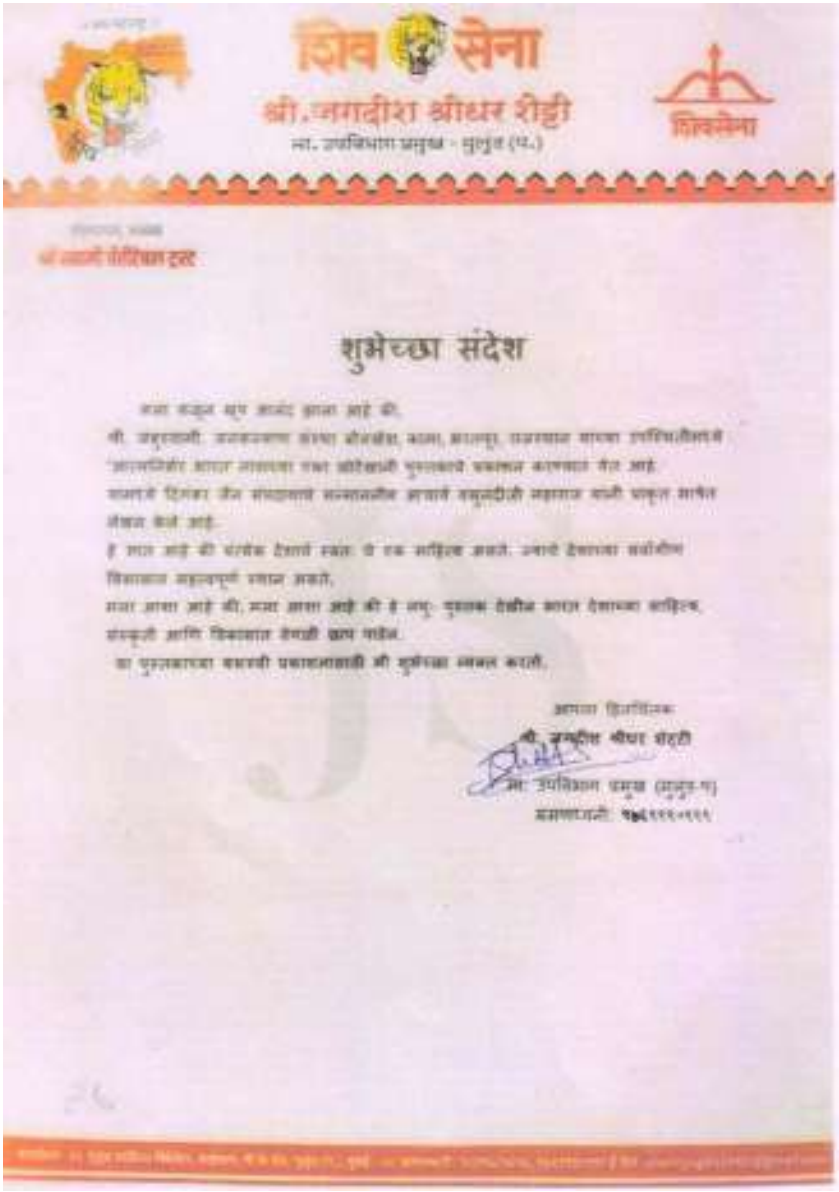

# शिव सेना

श्री. जगदीश श्रीधर शेट्टी

मा. उपविभाग प्रमुख - मुलुंड (प.)

शिवसेना

## शुभेच्छा संदेश

मला कळून खूप आनंद झाला आहे की,
श्री. [illegible] उपविभाग[illegible]
[illegible] पुस्तकाचे प्रकाशन [illegible] करत आहे.
[illegible]
लेखन केले आहे.
हे सत्य आहे की प्रत्येक देशाचे स्वप्न हे एक साहित्य असते. ज्याचे देशाच्या सर्वांगीण
विकासात महत्त्वपूर्ण स्थान असते.
मला आशा आहे की, मला आशा आहे की हे [illegible] पुस्तक [illegible] देशाच्या साहित्य,
संस्कृती आणि विकासात [illegible].
या पुस्तकाच्या यशस्वी प्रकाशनासाठी मी शुभेच्छा व्यक्त करतो.

आपला हितचिंतक

श्री. जगदीश श्रीधर शेट्टी

मा. उपविभाग प्रमुख (मुलुंड-प)

भ्रमणध्वनी: [illegible]

॥ [illegible] ॥

# आलोक कुमार

एडवोकेट

कार्याध्यक्ष - विश्व हिन्दू परिषद

संरक्षक - [illegible]

पूर्व उपकुलपति - दिल्ली विश्वविद्यालय


## सन्देश

मैंने अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य 108 वसुनंदी जी मुनिराज के द्वारा लिखित पुस्तक 'आत्मनिर्भर भारत' की पाण्डुलिपि देखी है. आमतौर पर आत्मनिर्भर भारत को एक आर्थिक दृष्टी से ही देखा जाता है. स्वदेशी बनाना, खरीदना और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार; यही आत्मनिर्भर भारत का अर्थ माना गया है.

पुस्तक में और उसकी प्रस्तावना में आत्मनिर्भरता को उसके गंभीर आध्यात्मिक अर्थ में समझाया गया है. गीता के शब्दों में 'अनपेक्ष' होकर व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति की निर्भरता से मुक्त होकर अखंड, अनंत, आनंद प्राप्त होता है. यह आनंद विषय और इन्द्रियों के संयोग से नहीं है बल्कि आत्मबुद्धिप्रसादज है. इसी की साधना आत्मनिर्भरता है.

व्यक्ति आत्मनिर्भर होता है जब वह अपने अन्दर के आत्मतत्त्व का साक्षात्कार कर लेता है और केवल उसी की शरण में रहता है. उसका योगक्षेम भी फिर भगवान वहन करते हैं.

मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का व्यापक रूप से स्वागत होगा, स्वाध्याय होगा. स्वाध्याय करने वाले लोग इसकी विषय वस्तु का अभ्यास करेंगे और इसको अपने जीवन और आचरण में उतारेंगे.

विद्वान लेखक को प्रणाम.

आलोक कुमार, एडवोकेट


W-99, ग्रेटर कैलाश 1, नई दिल्ली-110 048

फोन : (कार्यालय) 011-46170656, (घर) 011-42041376 मो. : 098101 27735

ई-मेल : akl.alokkumar@gmail.com

Prof. B. R. Dugar
Vice-Chancellor

# Jain Vishva Bharati Institute

A University dedicated to Oriental Studies & Human Values

जैविभासं./कु.का./2020/53                                                        दिनांक: 17 दिसम्बर, 2020

प्रतिष्ठा में,

श्री आर.सी. गर्ग जी,
अध्यक्ष, श्री जम्बू स्वामी तपोस्थली जन कल्याण सोसा.,
बोलखेड़ा ( कामा ), जिला-भरतपुर, राजस्थान।

महोदय,

'आत्मनिर्भर भारत' पुस्तक के सृजन के अवसर पर पूज्य आचार्यश्री की वन्दना करते हुए उनके प्रति समादर का अर्घ्य समर्पित है - देश चिंतन के इस प्रयोग को रेखांकित करने हेतु।

संस्कृति के संवर्धन एवं समाज में वैचारिक क्रांति द्वारा इस महान् देश की आत्मनिर्भरता की संकल्पना को मूर्त रूप दे रही आचार्यश्री की चेतना से, सामाजिक और राष्ट्रीय चिंतन के निमित्त इस कृति का सृजन [illegible] उनकी [illegible] की कल्याणिनी अपनी स्वाभाविक गति से प्रवाहित होगी, [illegible] को [illegible] रखने में [illegible] करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। परमपूज्य आचार्य श्री 108 वसुनंदीजी एक ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने अपनी वीतराग साधना के [illegible] को [illegible] की साधना से परिपोषित किया है। [illegible] करते हुए [illegible] कभी [illegible] नहीं होने दिया, [illegible] एवं [illegible] में द्वैत का भाव [illegible] नहीं होने दिया, एक अखण्ड मानव-जीवन को [illegible] से [illegible] के अनन्त [illegible] से दीपित करने का मार्ग [illegible] किया है, जो आत्मोन्नयन के साथ-साथ सम्यक् विकास के लिए सकारात्मक विचार-शक्ति [illegible] के मार्ग को भी प्रशस्त करता है। पुस्तक के प्रयोजन, [illegible] का सृजन करने की [illegible] का [illegible] करते हैं, [illegible] का, जो [illegible] में [illegible] जाती है - गुरुवाणी।

गुरुवाणी की [illegible] में [illegible] की भांति सरल प्रवाह है और उनके [illegible] में [illegible] भी। इस [illegible] कृति के माध्यम से उनके विचार जनकल्याणकारी बनें, यही मेरे चित्त के शुभभाव हैं और उनके पाद-पद्मों की [illegible] भी।

आशीष,

( प्रो. बच्छराज दूगड़ )
कुलपति

# वात्सल्य ग्राम


दीदी माँ
साध्वी ऋतम्भरा जी
*अधिष्ठात्री*


दिनांक : 22 सितम्बर 2020

प्रति,
श्री संजय जैन
मंत्री – श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था
बोलखेड़ा, भरतपुर (राजस्थान)

हमारा महान भारत कभी भी किसी पर निर्भर नहीं रहा बल्कि प्राचीनकाल में 'सोने की चिड़िया' कहलाने वाले हमारे इस देश पर सारी दुनिया निर्भर थी। हमारे पूर्वजों के उन्नत विज्ञान और कला-कौशल का डंका सारी दुनिया में बजा करता था। यह हमारे ऋषि-मुनियों के वैज्ञानिक अनुसंधानों का ही परिणाम था कि मानव जीवन के लिए जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्यात उस युग में भी हम किया करते थे, जब परिवहन साधनों की भी सहज उपलब्धता नहीं थी। तब से लेकर आज तक हमारी यह आत्मनिर्भर परम्परा गंगा के समान अविरल प्रवाहित है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि आत्म निर्भर भारत की इसी झाँकी का सुन्दर दर्शन दिगम्बर जैन समुदाय के आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज के ग्रंथ 'आत्म निर्भर भारत' के रूप में होने जा रहा है। प्राकृत भाषा के साथ ही संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में इसका अनुवाद निश्चित रूप से पाठकों तक भारत की आत्मनिर्भरता संबंधी अनेक रोचक जानकारियाँ पहुँचा सकेगा।

पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी की लेखनी को नमन करते हुए मैं इस ग्रंथ की वांछित सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना करती हूँ। वात्सल्य ग्राम से मुझे सभी बंधु-भगिनियों को शुभाशीर्वाद सहित -

(दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा)


[illegible]
[illegible]
[illegible]
e-mail : info@vatsalyagram.org, Web : www.vatsalyagram.org

**Pramod.Vasave,IRS**
**Commissioner**

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, कच्छ (गांधीधाम)
[illegible]
कच्छ (गांधीधाम) - [illegible]
Office of the Commissioner of Central Goods & Service Tax,
Kutch (Gandhidham)
GST Bhavan, Plot No.82, Sector 8, Opp. Ramlila Maidan,
Kutch (Gandhidham) - 370201
Tel : +91 2836 256755 Fax : +91 2836 25 6792

## MESSAGE

It gives me great pleasure to know that under the aegis of Shri Jambu Sawmi Jan Kalyan Sanstha, Bol Kheda, Kamaan, Bharatpur, Rajasthan, a booklet called "आत्मनिर्भर भारत" is being published, which has been written in Prakrit language by venerable Acharya Vasunandi Ji of Digambar Jain community.

Every attempt in scholarship and literary pursuits occupy a stellar place in a nation's building and intellectual aggrandisement of its population. It is like a veritable elixir of life for all the living beings.

I am of personal conviction that this book will be of immense contributory value in contributing to intellectual traction to the Government of India's clarion call of "आत्मनिर्भर भारत".

My Best Wishes for the publication of this booklet.

(Pramod A. Vasave)

प्रमोद वसावे
Pramod Vasave
आयुक्त
Commissioner
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर
Central Goods & Service Tax
कच्छ (गांधीधाम)
Kutch, Gandhidham

Plot No.82, Sector 8, Opp. Ramlila Maidan, Kutch (Gandhidham) - 370201
Website: www.centralexcisekutch.gov.in, E-mail:- commr-cexkutch@nic.in

RAJAN DATT
I.R.S

अपर आयुक्त
सीमा शुल्क,
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं
सी.जी.एस.टी. क्षेत्र
चण्डीगढ़

ADDITIONAL COMMISSIONER
CUSTOMS CENTRAL EXCISE &
CGST ZONE,
ZONE, CHANDIGARH

## MESSAGE

It gives me great pleasure to know that under the aegis of Shri Jambu Swami Jain Kalyan Sanstha, Bol Kheda, Kaman, Bharatpur, Rajasthan, a booklet called "आत्मनिर्भर भारत" is being published, which has been written in Prakrit language by venerable Acharya Vasunandi Ji of Digambar Jain community.

Every attempt in scholarship and literary pursuits occupy a stellar place in a nation's building and intellectual aggrandisement of its population. It is like a veritable elixir of life for all the living beings.

I am of personal conviction that this book will be of immense contributory value in contributing to intellectual traction to the Government of India's clarion call of "आत्मनिर्भर भारत".

My Best Wishes for the publication of this booklet.

Rajan Datt

केन्द्रीय राजस्व भवन, प्लाट नं. 19, सैक्टर 17-सी, चण्डीगढ़ – 160 017
CENTRAL REVENUE BUILDING PLOT NO. 19, SECTOR 17-C, CHANDIGARH
दूरभाष / Phone : 0172-2702913 फैक्स / Fax : 0172-2726378, ईमेल / E-mail : rajan.dutt@gov.in

आकृति राणा भा.प्र.से.
AAKRITI RANA I.A.S
सहायक आयुक्त सिरसी
उप-विभाग दण्डाधिकारी
उप-विभाग, सिरसी-581 401
Assistant Commissioner &
Sub-Divisional Magistrate
Sirsi, Sub-Division, Sirsi-581 401

सत्यमेव जयते

Mobile No:0277862749
Ph: 08384-226382(O)
Fax:08384-226382
E-mail: acsirsi@gmail.com

Date: 18-12-2020

# MESSAGE

*******

It is a matter of great pleasure to know that Shri Vasunandiji Muniraj, the Acharya of Digambar Jain is going to publish a small work called **'Self-reliant India'**. For centuries, saints, sages and scholars have contributed a lot to the all-round development of the state. The then kings and rulers used to give many important suggestions to make their kingdoms fully developed and to keep the subjects happy. Even in today's situation, our country desperately needs such important suggestions and guidance. I express my heartfelt thanks to Acharya Shri Vasunandiji Muniraj for his significant efforts. I send my best wishes to all the members of the publisher of a small work called **'Self-reliant India'** for the successful publication.

(Aakriti Rana)

# PARSHWANATH VIDYAPEETH

(Recognized by Banaras Hindu University as an External Research Centre)

I. T. I. ROAD, KARAUNDI, VARANASI- 221005 (INDIA)

Email: pvpvaranasi@gmail.com

Website: www.pv-edu.org

0542-2575890


## शुभाशंसा

आदरणीय श्री संजय जैन
ट्रस्टी
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था
बोलखेड़ा (कामां)
जिला- भरतपुर (राज.)

दिनांक २० जनवरी २०२१

महोदय,

भारतीय संस्कृति की दो समानान्तर धारायें- ब्राह्मण और श्रमण अनादिकाल से प्रवहमान हैं। एक प्रवृत्तिमार्गी तो दूसरी धारा निवृत्तिमार्गी रही है किन्तु दोनों धाराओं ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में अपने धर्म-दर्शन और साहित्य के माध्यम से विशिष्ट योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है कि वह धर्म को जीवन का आवश्यक अंग मानते हुये व्यक्ति का पाथेय निर्धारित करती है। श्रमणधारा के प्रतिनिधि दर्शन जैन दर्शन ने तदनुरूप ही यह उद्घोष किया कि व्यक्ति अपने भाग्य का स्वयं ही शिल्पी है, विधाता है। श्रमण परम्परा का यह उद्घोष अनायास ही नहीं था अपितु तीर्थंकरों की एक अविच्छिन्न परम्परा, उनकी वाणी तथा भगवान् महावीर का आदर्श उनके समक्ष था। 'आत्मानं विद्धि' और 'स्वावलम्बनवृत्ति' की साधना का ध्येय मानने वाला जैन धर्म-दर्शन यह मानता है कि आत्मोन्नति तथा आत्मनिर्भरता को अपनाकर ही व्यक्ति अपना तथा देश का समुन्नत विकास कर सकता है। आज की सरकार भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है। सरकार का यह प्रयास निश्चय ही श्लाघ्य है।

जैन धर्म-दर्शन में जैनाचार्यों की एक लम्बी परम्परा रही है जिन्होंने व्यक्ति के साथ-साथ समष्टि के कल्याण की बात की और उसे चरित्र में उतारने के लिये अनेक सत्साहित्य की रचना की। संत स्वयं को केवल समाज के लिये नहीं अपितु समस्त प्राणिमात्र को समर्पित कर राष्ट्र के विकास को गति देते हैं। दिगम्बर परम्परा की संतपरम्परा के मूर्धन्य विद्वान, सन्तत्व के आचरण में जी रहे आचार्यप्रवर वसुनन्दि की समाजोपयोगी रचना 'आत्मनिर्भर भारत' विद्वानों के समक्ष है। प्राकृत में रचित यह लघुकाय रचना जो अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवादित है, में आचार्यश्री ने यह प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है कि भारत 'आत्मनिर्भर' बनकर एक बार पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आचार्यश्री की यह कृति राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में मील का पत्थर साबित होगी।
सादर प्रणति।

(डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय)
संयुक्त निदेशक
पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
ESTABLISHED BY PARLIAMENT BY NOTIFICATION NO. 232 OF 1916

Kamalesh Dutta Tripathi
Chancellor
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha, Maharashtra
Centenary Chair Professor
Bhasha Adhyayan Kendra

शुभाशंसा 17.01.2021

इस महान् देश भारत की चिन्तन परंम्परा में ' स्वतन्त्रता तथा आत्मनिर्भरता ' की अवधारणा का अनुस्वर इसके सभी विचार प्रस्थानों में अनुगुंजित होता रहा है। अनादिश्रुति परंम्परा में ' अदीना स्याम ' अर्थात् सर्वदा ' अदीन ' अर्थात् ' आत्मनिर्भर ' रहने की प्रार्थना की गयी है। आप्तवचपरंम्परा में काश्मीरीय शिवाद्वयवाद शिवा अर्थात् परतत्व की प्रथम शक्ति ' स्वातन्त्र्य ' का उद्घोष करता है। बौद्ध परम्परा ' अप्पदीपो भव ' के लिए प्रेरित करती है।

इस क्रम में जैन परम्परा भी ' तपस् ' के मार्ग से उस परम स्वातन्त्र्य तथा ' आत्मनिर्भरता ' के आदर्श को मुखरित करती है। किन्तु ' आत्मनिर्भरता ' के इस प्रत्यय को दिगम्बर जैन मुनि श्री आचार्य श्री १०८ वसुनंदी जी मुनिराज ने ' अप्पणिच्चर-आरद्द ' नामक प्राकृत आर्या में रचित अपने ग्रंथ में जिस प्रकार निरूपित किया है , वह अत्यन्त स्पृहणीय है।

आत्मनिर्भरता और स्वतन्त्रता केवल आध्यात्मिक साधना में नहीं , अपितु हमारी व्यक्तिगत , व्यावहारिक और सामाजिक क्रियाशीलता में , कृषि , उद्योग और राष्ट्रीय निर्माण के क्षेत्र में तथा सद्गृहस्थ के दिनप्रतिदिन के आचार में अभिव्यक्त और चरितार्थ हो , इसका सुंदर निरूपण मुनिराज जी ने अपनी कृति में किया है । मुनिवर की यह कृति भारतीय समाज और नवोदय की ओर उन्मुख भारतदेश को अजस्र प्रेरणा प्रदान करेगी । इस कृति का स्वागत समस्त हिन्दी जगत् करेगा , यह हमारा विश्वास है ।

वंदन-नमन।

कमलेश दत्त त्रिपाठी

## अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, दिल्ली प्रदेश

| महावीर गोयल | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|
| 9810059714 | 9311098350 | 9810131968 | 9810290781 | 9999464042 |
| चेयरमैन | अध्यक्ष | महामंत्री | कोषाध्यक्ष | मुख्य सलाहकार |

दिनांक- 23.12.2020

### शुभकामना संदेश

प्रति,

श्री संजय जैन

न्यासी - श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली जन कल्याण संस्था

बोलखेड़ा, भरतपुर (राजस्थान)

हमारा महान भारत कभी भी किसी पर निर्भर नहीं रहा बल्कि प्राचीनकाल में "सोने की चिड़िया" कहलाने वाले हमारे इस देश पर सारी दुनिया निर्भर थी । हमारे पूर्वजों के उन्नत विज्ञान और कला - कौशल का डंका सारी दुनिया में बजा करता था । यह हमारे ऋषि - मुनियों के वैज्ञानिक अनुसंधानों का ही परिणाम था की मानव जीवन के लिए श्रेष्ठतम वस्तुओं का निर्यात उस युग में भी हम किया करते थे जब परिवहन साधनों की भी सहज उपलब्धता नहीं थी । तब से लेकर आज तक हमारी यह आत्मनिर्भर परम्परा गंगा के समान अविरल प्रवाहित है ।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि आत्म निर्भर भारत कि इसी झाँकी का सुन्दर दर्शन दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के ग्रंथ "आत्म निर्भर भारत" के रूप में होने जा रहा है। प्राकृत भाषा कि आत्मनिर्भरता संबंधी अनेक रोचक जानकारियाँ पंहुचा सकेगा। पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी की लेखनी को प्रणाम करते हुए मैं इस ग्रंथ की वांछित सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ । प्रकाशन से जुड़े सभी बंधु - भगिनियों को शुभाशीर्वाद सहित ।

महावीर गोयल

(चेयरमैन दिल्ली प्रदेश)

561, प्रथम तल, [illegible], दिल्ली-51 9205492657, 9311098350
E-mail : [illegible]@gmail.com • Matrimonial E-mail : [illegible]@gmail.com
Job E-mail : [illegible]@gmail.com • Website : [illegible]
Facebook : https://www.facebook.com/Akhil-Bhartiya-Agarwal-Sangthan-Delhi-Pradesh-[illegible]

# अप्पणिब्भर-भारदं

## मंगलाचरण

**सुद्धप्प-गुण-णिब्भरा, णमामि तिलोयपुज्ज-सव्वजोगी।**
**अप्पणिब्भरो होदुं, सव्वहिदंकरा तिजोगेहि॥1॥**

**शुद्धात्म गुणों पर निर्भर, सर्व हितंकर, तीनों लोकों में पूज्य सभी योगियों को आत्म निर्भर होने के लिए तीनों योगों से सदा नमस्कार करता हूँ।**

I always bow to all those yogis who are reliant on pure virtues, are all beneficial and are revered in all the three worlds, to be self-reliant.

**शुद्धात्मगुणाश्रित-सर्वहितंकर-त्रैलोक्यपूज्य-सर्वयोगिमुनीश्वरा नात्मनिर्भरो भवितुं त्रियोगैः सर्वदा नमामि।**

## सिद्ध वंदना

**सव्व-पर-दव्वादो य, रहिदा दव्व-भाव-णोकम्मादो।**
**सगप्पस्स गुण-सहाव-णिब्भरा सया वंदणीया॥2॥**

**सभी पर द्रव्यों से रहित, द्रव्यकर्म, भावकर्म व नोकर्मों से रहित, अपनी आत्मा के गुण व स्वभाव पर निर्भर सिद्धपरमेष्ठी सदा वंदनीय हैं।**

The Siddhas (liberated souls) who are unshackled from all alien elements, disengaged from Dravya Karma, Bhava Karma and nokarmas, and reliant on self-virtues and qualities are always revered.

**सर्वपरद्रव्यरहितान्ण द्रव्यभावनोकर्मरहितान् शुद्धात्मनः गुण-स्वभावेषु निर्भरान् सिद्धपरमेष्ठीनः सर्वदा वंदनीयाः।**

## जिनागम स्तुति

**जिणदेवेहि पणीदं, विसिट्ठमुणि-गणहरेहि संगहिदं।**
**आइरियाइ-लिहिदं च, जिणागमं परियंदामि हं॥3॥**

**जिनेन्द्र देवों के द्वारा प्रणीत, गणधर आदि विशिष्ट मुनियों के द्वारा संग्रहीत व आचार्यों आदि के द्वारा लिखित जिनागम की मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) स्तुति करता हूँ।**

I eulogize the Jingama (Holy script of Jain) that is propounded by the Jinendra Devas, compiled by Gandhars or learned Munis and written by Acharyas.

**जिनदेवप्रणीतं विशिष्टमुनिगणधरदेवैः संग्रहीतमाचार्यादिलिखितं जिनागमं स्तौम्यहम्।**

## ग्रंथोद्देश्य

**सुहं संती समिद्धी, वड्ढेदु सक्कला सक्किदी सया।**
**वोच्छामि सवरहिदाय, अप्पणिब्भर-भारद-गंथं।।4।।**

**देश में सुख, शांति व समृद्धि हो। सत्कला व संस्कृति का वर्द्धन हो। अतः स्व-पर हित के लिए मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) 'आत्मनिर्भर भारत' नामक ग्रंथ को कहता हूँ।**

May there be happiness, peace and prosperity in the country. May true art and culture prevail. Therefore, I (Acharya Vasunandi Muni) recount the "Atma Nirbhar Bharat" Granth for the benefit of self and others.

**देशे सुखं शांतिः समृद्धिश्च भवेयुः। सत्कला संस्कृतिश्च वर्धेताम् अतः स्वपरहिताय ''आत्मनिर्भर-भारतं'' ग्रंथं कथयाम्यहं।**

## आत्मनिर्भरता परमधर्म

**अप्पणिब्भरा होज्जा, सव्व-जीवा सव्व-खेत्त-यालेसु।**
**अप्पणिब्भरत्तं अवि, परम-धम्मो सव्वजीवाण॥5॥**

**सभी क्षेत्र व कालों में सभी जीवों को आत्म निर्भर होना चाहिए। आत्मनिर्भरता भी सभी जीवों का परम धर्म है।**

Every being at every time and place should be self-sufficient. Self-sufficiency is also the ultimate religion for every creature.

**सर्वजीवा आत्मनिर्भराः भवेयुः सर्वक्षेत्रकालेसु। यतः आत्मनिर्भरता हि सर्वजीवानां परमधर्मोऽस्ति।**

## मेरी भावना

**अप्प-णिब्भरो जो को, वि सो सुह-हेदू अप्प-संतुट्ठो।**
**अप्पणिब्भरो देसो, होज्ज कंखेमि सुहभावेहि॥6॥**

**जो कोई भी आत्मनिर्भर होता है वह आत्म संतुष्ट व स्व-पर सुख का हेतु होता है। 'देश आत्मनिर्भर हो' शुभ भावनाओं से युक्त हो मैं ऐसी आकांक्षा करता हूँ।**

Anyone who is self-dependent is self satisfied and is the behalf of happiness for self and others. I aspire with good emotions that my nation becomes self-dependent.

**य आत्मनिर्भरः स आत्मसन्तुष्टः स्वपरसुखहेतुश्च भवति देश आत्मनिर्भरो भवेत् शुभभावै इच्छाम्यहम्।**

## भावी परमात्मा

**आरंभ-संग-रहिदो, जोगी मिच्छत्तय-हीणो जो सो।**
**रयणत्तयजुदो अप्प-संलीणो भयवदो भावी॥7॥**

**जो योगी आरंभ-परिग्रह से रहित है, मिथ्यात्रय अर्थात् मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान व मिथ्याचारित्र से हीन है, रत्नत्रय से युक्त है, आत्मा में लीन है वह भावी परमात्मा है।**

The ascetic who is free of "Arambh Parigraha" (Activity causing pain and sufferings to other and accumulation), "Mithyatraya" that is "Mithyadarshan" (wrong belief), "Mithyagyan" (false knowledge), and "Mithyacharitra" (erroneous character), is endowed with "Ratnatraya"(Right belief, True knowledge and upright character), and engrossed in his soul is to-be, God.

**य आरंभसंगमिथ्यात्रयरहितः रत्नत्रययुक्तः आत्मलीनश्च सो भावीपरमात्मेति।**

## भोगी व योगी

**परत्थेसु रयदे जो, हवेदि जोगी सो कहं सुद्धो हु।**
**भोगी रच्चदि णियमा, तह परदव्वत्थभावेसुं॥8॥**

**भोगी नियम से परद्रव्य, पर पदार्थ व परभावों में रंजायमान होता है। जो पर पदार्थों में रंजायमान होता है वह योगी शुद्ध कैसे हो सकता है? अर्थात् नहीं हो सकता!**

How can a "Yogi" (hermit) who indulges in alien elements be a pure ascetic? "Bhogi" (the one who enjoys pleasure) by nature indulges in alien substances and corrupt emotions.

**पंचेन्द्रियविषयभोक्ता परद्रव्यार्थभावेषु रमते। यः परपदार्थेष्वनुरक्तः कथं शुद्धो भवति सो योगी?**

## पापिष्ठ व धर्मी

**कुभावत्थेसु रच्चदि, कुणरो पाविट्ठ-अहोगदिपत्तो।**
**तव्विवरीओ णेयो, सज्जण-उवयारगो धम्मी॥9॥**

**जो कुभाव व कुपदार्थों में रंजायमान होता है वह कुनर, पापिष्ठ अधोगति का पात्र होता है। उसके विपरीत जो कुपदार्थ व कुभावों में रंजायमान नहीं होता उसे सज्जन, उपकारक व धर्मी जानना चाहिए।**

Anyone who revels in sins, vices and immoral elements, is a subject of diabolical abjection. Whereas, the one who does not indulge in such things should be identified as gentle, benefactor and devout.

**यः कुभावार्थेसु रमते सः कुनरो पापिष्ठो दुर्गतिपात्रः तद्विपरीतः कुपदार्थभावेषु न लीयते सज्जनोपकारको धर्मिष्ठश्च।**

## आत्मनिर्भर ही सुखभोक्ता

**सुगिहत्थो होज्ज अप्प-णिब्भरो किंचिवि सजण-णिब्भरो य।**
**जो सो हु जेत्तिय-अप्प-णिब्भरो तेत्तिय-सुहभोत्तू॥10॥**

**अच्छे, समीचीन गृहस्थ को आत्म निर्भर होना चाहिए, किंचित् स्वजनों पर भी। जो जितना अधिक आत्म निर्भर होता है वह उतना अधिक सुख का भोक्ता होता है।**

An ideal person should be self-dependent and slightly dependent on kinsfolk too. The more a person is self-reliant, the more blissful he is.

**सद्गृहस्था आत्मनिर्भराः भवेयुः किंचित् स्वजनेष्वपि। यो यावदात्मनिर्भरो तावदेव सुखभोक्ता भवति।**

## पराधीन कौन?

**जो कंखदे जावइय-अहियवत्थूणि धण-गिह-जीवा वा।**
**तेसु होदि संलीणो, तावइयो परायत्तो सो॥11॥**

**जो जितनी अधिक वस्तु, धन, गृह अथवा जीवों की आकांक्षा करता है, उनमें लीन होता है वह उतना ही अधिक पराधीन होता है।**

The more someone is occupied by the want of more things, money, estate and other beings, the more he is dependent.

**यो यावद्वस्तुधनगृहजीवान् वा वांछत्यैव तद्द्रव्येषु लीयते सः तावद् पराधीनः।**

## स्वश्रितों को बनाएँ आत्मनिर्भर

**गेहसामी करेज्जा, सावण्णा अप्पणिब्भरा सया हु।**
**मेत्त-मत्थसाउज्जं, ताण ण संति-सुहाण हेदू॥12॥**

**गृहस्वामी को अपने आश्रितों को सदा ही आत्म निर्भर करना चाहिए। मात्र अर्थ का सहयोग उनके लिए सुख-शांति का हेतु नहीं है। अर्थात् स्वाश्रितों को मात्र अर्थ सहयोग ही न करें अपितु आत्मनिर्भर बनाएँ।**

A homemaker should always make the ones dependent on him self-reliant. Financial support is not the only important thing to attain peace and happiness. Therefore, one should not only financially support them but also make them self reliant.

**गृहस्वामी सर्वदा स्वाश्रितानात्मनिर्भरः कुर्यात् अर्थसहयोगमात्रं न शांतिसुखानां कारणमिति।**

## संघर्ष से हर्ष

**जदवि आरंभयाले, होदि संघस्सो जीवणे णियमा।**
**अंतिमयालम्मि परं, सुट्ठु फलं होदि ण संकेज्ज॥13॥**

**यद्यपि आरंभकाल में जीवन में संघर्ष नियम से होता है किंतु अंतिम समय में फल श्रेष्ठ होता है, इसमें शंका नहीं करनी चाहिए।**

Although there are a lot of struggles and pitfalls in life initially, we shouldn't doubt that the result would be the greatest in the end.

**यद्यप्यारम्भे जीवने संघर्षो भवत्यैव किन्तु अंते वरेण्यफलं न शङ्केतीति।**

## अनुभव ही महानिधि

**संघस्सो णो कया वि, होदि कट्ठ-दुहाण हेदू मेत्तं।**
**देदि अणुभवं णिच्चं, अणुभवो विस्स-महाणिही हु॥14॥**

**संघर्ष कभी भी कष्ट व दु:खों का कारण मात्र नहीं होता। वह संघर्ष नित्य अनुभव देता है और अनुभव विश्व की महानिधि है।**

The struggle is not merely a cause of pain and sorrow. This struggle is a constant source of experience, and this experience is the most treasured belonging in the world.

**सङ्घर्षः कदापि कष्टदु:खाणां कारणं न भवति। सङ्घर्षोऽनुभवं ददाति। विश्वस्य महानिधि अनुभवोऽस्तीति।**

## अनुभव से श्रेष्ठता

**तावइय-वर-गुरू सो, होदि जावइय-अहिय-अणुभवी जो।**
**अणुभवहीणं मणदे, को गुरु-रक्ख-पुज्जा मित्तं॥15॥**

**जो जितना अधिक अनुभवी होता है वह उतना अधिक श्रेष्ठ गुरु होता है। अनुभवहीन को कौन गुरु, रक्षक, पूज्य या मित्र मानता है? अर्थात् कोई नहीं।**

The more experienced (veteran) one is, the more superior preceptor he is. Who considers an inexperienced one as a mentor, protector, revered or friend? i.e. none.

**यो यावदनुभवी सो तावत् श्रेष्ठगुरुः भवति। कोऽनुभवहीनो मन्यते गुरु-रक्षक-पूज्य-मित्राणि च।**

## योग्य स्वामी

**करेज्जा णयर-सामी, सगणयरवासी अप्पणिब्भरा हु।**
**अप्पणिब्भरो करिदुं, ण हु सक्को सो कहं जोग्गो॥16॥**

**नगर स्वामी को स्वनगरवासियों को आत्मनिर्भर करना चाहिए। जो नागरिकों को आत्म निर्भर करने में समर्थ नहीं है वह योग्य स्वामी कैसे हो सकता है?**

The city's leader should make his inhabitants self-dependent. How can one who cannot make his citizens self-dependent be a suitable head?

**नगरस्वामी स्वनगरवासिनः आत्मनिर्भरः कुर्यात्। यः नगरवासिनः आत्मनिर्भरः कर्तुं न समर्थः सः योग्यस्वामी कथम्?**

## अयोग्य शासक

**कंखेदि सासगो जो, सगावण्णा सय सायत्त-करणं।**
**अप्प-णिब्भरत्तं णो, ताण कंखेदि अजोग्गो सो॥17॥**

**जो शासक स्वाश्रितों को सदा स्वाधीन अर्थात् अपने आधीन करने की आकांक्षा करता है, उनके लिए आत्म-निर्भरता की आकांक्षा नहीं करता वह शासक अयोग्य है।**

A leader who seeks to subjugate the citizens dependent on him and does not wish for their self- sufficiency is an inept ruler.

**यः शासकः स्वाश्रितान् स्वाधीनः कर्तुमिच्छति तेभ्यः आत्म निर्भरतां न कांक्षति सोऽयोग्यशासकः।**

## क्षेत्रानुकूल कार्य

**जत्थ सहज-णिप्पण्णं, जं कज्जं तं करेज्ज तत्थ सया।**
**होज्जा असंभवो जं, कज्जं तं णेव खलु कयाइ॥18॥**

**जहाँ जो कार्य सहज निष्पन्न हो सके वहाँ सदा वह कार्य करना चाहिए। जहाँ जो कार्य असंभव हो वहाँ वह कार्य कदाचित् भी नहीं करना चाहिए।**

Where that work can be done efficiently, it should be done there. Sometimes, where the task seems impossible, it should never be done there.

**यत्कार्यं यत्र निष्पन्नं भवेत्तत्र सदा तत्कार्यं कुर्यात्। यत्र यत्कार्यमसंभवं तत्र तं कदापि न।**

## पाषाणक्षेत्रानुकूल कर्म

**पासाण-बहुलखेत्ते, णीराभावो होज्ज गिरि-गुहादी।**
**किसी हु तम्मि खेत्तम्मि, णो सक्का तं णो करेज्जा॥19॥**
**करेज्ज तम्मि खेत्तम्मि, पासाद-मंदिर-गिह-थूव-मुत्ती।**
**माणत्थंभं च सिलालेहं पहुदी णिम्माणेज्ज॥20॥**
**मुत्तीउ अणेय-विहा, णेरइय-सुर-माणुस-तिरियाणं च।**
**पसु-पक्खीणं अहवा, पागदिक-ठाणादि-चित्ताणि॥21॥**

**पाषाण बहुल क्षेत्र में जहाँ पहाड़, गुफा आदि होती हैं, जहाँ पानी का अभाव होता है उस क्षेत्र में कृषि शक्य नहीं है, उसे वहाँ नहीं करना चाहिए। उस क्षेत्र में प्रासाद, मंदिर, गृह, स्तूप, मूर्ति, मानस्तंभ और शिलालेख आदि का निर्माण करना चाहिए। मूर्तियाँ अनेक प्रकार की होती हैं–नारकी, देव, मनुष्य व तिर्यंचों की पशु-पक्षियों की अथवा प्रकृति स्थान आदि के चित्र भी।**

A farmer should not practice agriculture in rocky areas like mountains and caves where there is a scarcity of water. Temples, palaces, houses, domes, sculptures, Maanstambh or Shilalekh, etc., should be sculpted there. Sculptors are of various kinds, hell-dwellers, gods, humans, birds and animals, and sceneries etc.

**पाषाणबहुलक्षेत्रे यत्र गिरिगुफादयः भवन्ति। नीराभावश्च विद्यते न कृषिः संभवा तत्र। तां न कुर्यात्तत्र। तत् क्षेत्रे प्रासादमंदिरगृहस्तूपमूर्तिमानस्तंभशिलालेखान्निर्मीयेत। अनेकधा मूर्तयः–नारकिदेवमनुष्यतिर्यञ्चपशुपक्षीनाञ्च प्राकृतिकस्थानादि-चित्राण्यपि वा।**

## शिलालेख

**सगदेसस्स सक्किदिं, सक्कारं सव्वदा उक्किरेज्जा।**
**इदिवित्तं महापुरिस-जीवणं पासाणखंडेसु॥22॥**

**पाषाणखंडों पर सदा अपने देश की संस्कृति, संस्कार, इतिहास व महापुरुषों का जीवनवृत्त उत्कीर्ण करना चाहिए।**

The culture, values, history and biographies of the great men of our country should be engraved on stones.

**पाषाणखंडेषु देशस्य संस्कृतिसंस्कारेतिवृत्तानि महापुरुषाणां जीवनवृत्तमुत्करणीयानि।**

## पाषाणाद्योपकरण निर्यात

**सग-उक्किट्ठ-कलाए, बहुविह-पासाणाइ-उवयरणाणि।**
**णिम्माणिय णिज्जादु य, लहेज्जा अहिय-धणं जेणं।।23।।**

**अपनी उत्कृष्ट कला से बहुत प्रकार के पाषाण आदि के उपकरणों का निर्माण कर उन्हें निर्यात करना चाहिए जिससे अधिक धन प्राप्त किया जा सके।**

One should create many objects out of stone, etc., with one's fine art and export them so they can acquire more wealth,

**स्वोत्कृष्टकलया बहुविधपाषाणादीनामुपकरणानि निर्मित्वा तानि निर्यातव्यानि। येनाधिकधनं प्राप्नुयात्।**

## विभिन्नोपकरण निर्माण

**जम्मि खेत्ते उवयरण-णिम्माणजोग्गा वरमिदिगा तम्मि।**
**सवर-आजीविगाए, णिम्माणेज्जा उवयरणाणि।।24।।**

**जिस क्षेत्र में उपकरण निर्माण के योग्य उत्कृष्ट मिट्टी आदि हो वहाँ स्व-पर आजीविका के लिए उपकरणों का निर्माण करना चाहिए।**

The place where there is desirable soil, etc., for making equipment, equipment should be manufactured there for the livelihood for self and others.

**यत्र उपकरणनिर्माणयोग्यमृतिकादयः भवेत्तत्र स्वपरजीविको-पकरणानि निर्मीयेत्।**

## मूर्ति निर्माण

**णाणाविह-खिल्लणाणि, णिम्माणेज्जा बहुविह-मुत्तीओ।**
**सवर-सुह-कारणं सय, देस्सा गिह-भवण-पयडीणं।।25।।**

**नाना प्रकार के खिलौनों, बहुत प्रकार की मूर्तियों का निर्माण करना चाहिए। गृह, भवन, प्रकृति के दृश्य सदा स्वपर सुख का कारण होते हैं।**

Various types of toys, numerous sculptures should be formed. The vision of home, house, and nature is always a basis for happiness for all.

**नानाविधक्रीडनकानि मूर्तयश्च निर्मीयेत। गृह-भवन-प्राकृतिकदृश्याण्यपि सदा स्वपर-सुख-कारणमस्तीति।**

## काष्ठोपकरण निर्माण

**जस्सिं खेत्तम्मि बहुल-कट्ठाणि तम्मि णिम्माणेज्ज सया।**
**कट्ठस्स उवयरणं हु, सुह-समिद्धीण सग-देसस्स॥26॥**

**जिस क्षेत्र में बहुत काष्ठ अर्थात् लकड़ियाँ हों, अपने देश की सुख व समृद्धि के लिए वहाँ काष्ठ के उपकरणों का निर्माण करना चाहिए।**

The site where there is a plethora of wood, wood equipment should be made there for the prosperity of our country.

**देश-समृद्ध्यै यस्मिन् क्षेत्रे बहुकाष्ठानि विद्यन्ते काष्ठोपकरणानि निर्मीयेरन्।**

## क्षेत्रानुकूल कृषि

**जाइ किसीए जोग्गा, जा भूमी ताए ववेज्जा सया।**
**तज्जोग्गं धण्णं खलु, जेण सुट्ठु बहुफलं लहेज्ज॥27॥**

**जो भूमि जिस कृषि के योग्य हो उसमें सदा उस योग्य धान्य ही बोना चाहिए। जिससे श्रेष्ठ बहुत फल प्राप्त किया जा सके।**

The land that is congruent to that farmer, fitting crops should be sown there, so that the best fruits are bored.

**या भूमिः यस्याः कृषियोग्याः तस्यां तद्योग्य-धान्यमेव वपनीयम्। येन बहुफलमुपलभेत्।**

## पशुपालन

**पसुपालणं वड्ढणं, सहजं सुलहं खलु जत्थ खेत्तम्मि।**
**ते तत्थ पालिदव्वा, वड्ढिदव्वा सुसमिद्धीए॥28॥**

**जिस क्षेत्र में पशुओं का पालन व संवर्द्धन सहज सुलभ हो, देश की सुसमृद्धि के लिए उन्हें उस क्षेत्र में पाला जाना चाहिए तथा संवर्द्धित भी किया जाना चाहिए।**

The area where the rearing of animals and their enhancement is easy and convenient, They should be reared and developed in that area for the accomplishment of the country.

**यस्मिन् क्षेत्रे पशुपालनं संवर्द्धनञ्च सहजं सुलभम्। देशस्य समृद्धयै तस्मिन् क्षेत्रे पशुपालनं भवेद् परिवर्धयेच्च।**

## धातुओं का उपयोग

**होंति जस्सिं खेत्तम्मि, अयस-तंब-सुवण्ण-पहुदी धादू।**
**धादूण कुणिय सुद्धिं, तत्थ करेज्ज वर-मुवजोगं।।29।।**

**जिस क्षेत्र में लोहा, ताँबा, स्वर्णादि धातुएँ होती हैं वहाँ धातुओं की शुद्धि कर उनका श्रेष्ठ उपयोग करना चाहिए।**

The domain where iron, copper, gold and other metals are present, they should be used there optimally after refining.

**यत्र लोहताम्रस्वर्णप्रभृतिधातवःजायते तत्र तान् शोधयित्वा वरमुपयुञ्जीत।**

## वातावरणानुकूल कृषि

**बहुजलं जम्मि खेत्ते, पइडि-आदी वि होज्जा अणुऊला।**
**करेज्ज तम्मि खेत्तम्मि, किसिं फलादीण ताण ताण॥30॥**

**जिस क्षेत्र में बहुत जल हो, प्रकृति आदि भी अनुकूल हो उस क्षेत्र में उन-उन फलादि की कृषि करनी चाहिए।**

The area where there is plenty of water and favourable climate, those type of fruits should be cultivated there.

**यस्मिन् क्षेत्रे बहुजलं प्रकृत्याद्यनुकूला तस्मिन् क्षेत्रे तथायोग्यफलादीनां कृषिः कुर्यात्।**

## शुभ प्रेरणा

**भारद-मुक्खकज्जाणि, किसिं ववसायं तहा सिप्प-कलं।**
**जोदिस-णच्चाइ-कला, सव्वदा चिय उच्छाहेज्जा॥31॥**

**भारत के मुख्य कार्य कृषि, व्यवसाय, शिल्प कला, ज्योतिष तथा नृत्यादि कलाओं को सदा प्रोत्साहित या उत्साहित करना चाहिए।**

Bharat's principal occupations like agriculture, business, sculpture art, astrology, dance and other arts should always be encouraged.

**वृषिव्यापारशिल्पज्योतिषनृत्यादिकलाः उत्साहयितव्याः प्रोत्साहितं करणीयम्।**

## विद्या का सदुपयोग

**मंत-तंताइ-विज्जा, सुह-वड्ढवआ पत्तेय-यालम्मि।**
**जो कुणदि दुरुवजोगं, विज्जा अहिसाव-रूवा सा॥32॥**

**प्रत्येक काल में मंत्र-तंत्रादि विद्या सुख वर्द्धक होती है। जो इसका दुरुपयोग करता है वह विद्या उनके लिए अभिशाप रूप हो जाती है।**

The knowledge of "Mantra- Tantra" (Incantations) is always a source of bliss at all times. The one who misuses them, it becomes a curse for them.

**मंत्रतंत्रादिविद्या सर्वदा सुखवर्धिनी। यो दुरुपयोगं करोति तस्मै विद्या अभिशापरूपमिति।**

# अंकविद्या

**अंकविज्जा विसिट्ठा, णादुं अंकेहि तियालवत्थूणि।**
**अंकेसु सव्वणाणं, विज्जदि जिणवयणणुसारेण॥33॥**

अंकों के द्वारा त्रिकालवर्ती वस्तुओं को जानने के लिए अंक विद्या विशिष्ट है। जिनवचनों के अनुसार अंकों में सर्व ज्ञान विद्यमान है।

Numerical knowledge is special and necessary to know something at all times by numbers. According to the Jain sayings, all knowledge exists in numbers.

**अंकैर्विशिष्टा त्रिकालवस्तूनि जानितुमंकविद्या, जिनवचनानुसारमंकेषु विद्यते सर्वज्ञानमिति।**

## वास्तु विद्या

**संसारे विज्जंतं, पत्तेय-वत्थुं गहेदि मुंचेदि।**
**जहाजोग्गं पहावं, वत्थु-विज्जा तमुवादेया॥34॥**

संसार में विद्यमान प्रत्येक वस्तु यथायोग्य प्रभाव छोड़ती व ग्रहण करती है अतः वास्तु विद्या उपादेय है।

Everything in the world leaves its effect and influence. Hence, knowledge of "Vaastu" (architecture) is valuable.

**संसारे विद्यमानानि प्रत्येकं वस्तूनि यथायोग्यं प्रभावं करोति गृह्णाति च अतः वास्तुकलोपादेयेति।**

## महत्वपूर्ण वास्तुकला

**वत्थुविज्जा होदि खलु णिमित्तं च सुहदुहाण जीवाणं।**
**मण्णदि ण जो णिमित्तं, णेयो मुक्खो सो मूढेसु॥35॥**

वास्तु विद्या जीवों के सुख-दु:ख की निमित्त होती है। जो निमित्त को नहीं मानता वह मूर्खों में मुख्य जानना चाहिए।

"Vastu" knowledge is the cause of happiness and sorrow for all beings. The one who does not believe in the instrumental cause, is the greatest of the fools.

**वास्तुविद्या जीवेभ्यः सुखदु:खानां निमित्तभूता। यः निमित्तं न मन्यते सः मूढेषु मुख्यः ज्ञातव्यः।**

## सुविद्या का फल

**पत्तेययाले कला, संगीद-साहिच्चाइ-सुविज्जा य।**
**भणिदा वत्तकारणं, सुह-संति-चित्तरंजणाणं।।36।।**

प्रत्येक काल में कला व संगीत, साहित्य आदि सुविद्या आरोग्य, सुख, शांति व चित्तरंजन (मनोरंजन) की कारण कही गई हैं।

Art, music, literature and right cognition are said to be the foundation of sound health, happiness, peace and enjoyment at all times.

**कलासंगीतसाहित्यादि-सुविद्याःण आरोग्यसुखशांतिमनोरंजनाणाञ्च कारणमुच्यते।**

## यथा कारण तथा कार्य

**णाणेण णाण-विड्ढी, अण्णाणेण वड्ढेदि अण्णाणं।**
**अग्गिणा तहा अग्गी, सोक्खं सोक्खेण णियमेणं॥37॥**

ज्ञान से ज्ञान की वृद्धि होती है, अज्ञान से अज्ञान की वृद्धि होती है, अग्नि से अग्नि की तथा नियम से सौख्य से सौख्य की वृद्धि होती है।

Just like knowledge increases knowledge, ignorance leads to ignorance, and fire to fire, similarly, happiness fosters happiness.

**ज्ञानेन ज्ञानमज्ञानेनाज्ञानमग्निनाग्निः सौख्येन सौख्यञ्च वर्धते।**

## विश्व शांति कारक

**सवर-हिद-भावणाए, परिहरेज्ज सया पाव-कज्जाइं।**
**विणा पाव-परिहारं, णेव संभवो सुहं संती॥38॥**

स्वपर हित की भावना से सदा पाप कार्यों का परिहार करना चाहिए। पाप परिहार के बिना देश में सुख व शांति शक्य नहीं है।

One should always abstain from sinful acts for the common welfare of all. Peace and happiness are not possible in the country without refraining from sinful deeds.

**स्वपरहितभावैः सदा पापकार्याणि परिहरेत्। पापपरिहारं विना देशे सुखं शान्तिश्च न संभवा।**

## प्रकृति संयोजन ही धर्म

**धम्मो विसुद्ध-सुहदो, पयडि-रक्खगो सय खेमंकरो हु।**
**पइडि-संजोअणं तह, धम्मो णेव पइडि-विरुद्धो॥39॥**

धर्म विशुद्ध, सुखद, प्रकृति का रक्षक व सदा क्षेमंकर ही होता है। प्रकृति का संयोजन धर्म है। कोई भी धर्म प्रकृति विरुद्ध नहीं होता।

Religion is always pure, blissful, protector of nature and auspicious. Religion is to keep up with nature. No religion is against nature.

**धर्मः सर्वदा विशुद्धः सुखदः प्रकृतिरक्षकः क्षेमंकरो भवति। प्रकृत्याः संयोजनं धर्मः। कोऽपि धर्मः न प्रकृतिविरुद्धः।**

## कर्त्तव्यपालन महाधर्म

**कत्तव्व-पालणं सय, महाधम्मो पत्तेयं जीवस्स।**
**परम-सच्च-णिट्ठाए, सुधम्मी पालदि कत्तव्वं।।40।।**

प्रत्येक जीव के लिए कर्त्तव्य का पालन करना महाधर्म है। सुधर्मी परम सत्यनिष्ठा से कर्त्तव्यों का पालन करता है।

Every being's highest religion is to fulfil their duty. Pious men deliver their duty faithfully.

**कर्त्तव्यपालनं महाधर्मो प्रत्येकं जीवस्य कृते। धर्मिष्ठः परमसत्यनिष्ठया कर्त्तव्यं पालयति।**

## राजधर्म

**रायेण पालिदव्वो, सगधम्मो परमायंस-णिट्ठाइ।**
**जह रायस्स हु भावो, तहा संभवो पया-भावो।।41।।**

राजा के द्वारा परम आदर्श व निष्ठा के साथ अपने धर्म का पालन किया जाना चाहिए। जैसा राजा का भाव होता है वैसा प्रजा का भाव भी संभव होता है।

The king should perform his duties with upright ideals and utmost devotions. The way the king's intentions are, the citizens' emotions are also shaped so.

**राज्ञा परमादर्शनिष्ठया निजधर्मः पालनीयः। यथा राज्ञो भावस्तथा प्रजायाः संभवो।**

## आचरण का प्रभाव

**रायो होदु सव्वदा, अप्पणिब्भरो बहि-सुहं उज्झित्तु।**
**चरणं हु महापहाव-जुदं णिवस्स जह पयाइ तह॥42॥**

राजा बाह्य सुख का त्याग कर सर्वदा आत्मनिर्भर होवे। आचरण महाप्रभाव से युक्त होता है। जैसा राजा का आचरण होता है वैसा प्रजा का भी आचरण होता है।

A ruler should always renounce luxuries and become self-dependent. Conduct has the most powerful impact. As the king's conduct, so is his subjects'.

**बाह्यसुखं परित्यज्य राजा सर्वदात्मनिर्भरो भवेत्। महाप्रभावयुक्तमाचरणम्। यथा नृपाचरणं भवति तथा प्रजायारपि।**

## लघु उद्योग

**लहु-उज्जोग-कज्जाणि, वड्ढेज्जा लहु-धण-विणिजोगेणं।**
**सगो सगो होदि सया, अंतम्मि अवरो चिय अवरो।।43।।**

लघु धन विनियोग से सदा लघु उद्योग कार्यों को बढ़ाना चाहिए। अंत में अपना सदा अपना ही होता है और दूसरा-दूसरा ही होता है।

A small amount of money should be invested in small-scale industries. In the end our's will always remain ours. What is other's can never become ours.

**लघूद्योगकार्याणि वर्धेत लघुधनविनियोगेन। अंते स्वकीयसमृद्धिः स्वकीयैव भवत्यवराया अवरा च।**

## स्वजन वृद्धि ही स्ववृद्धि

**सगाणं पडिपिल्लणं, उच्छाहेण दाएज्ज साउज्जं।**
**सगाण विड्ढी मणेज्ज, सग-विड्ढी णो संकणीया।।44।।**

अपनों के लिए उत्साह से प्रेरणा व सहयोग देना चाहिए। अपनों की वृद्धि अपनी ही वृद्धि माननी चाहिए। इसमें कोई शंका नहीं करनी चाहिए।

We should always give inspiration and support with excitement to our people. Our loved ones' prosperity should be considered ours. There should be no doubt about it.

**स्वजनेभ्यः उत्साहेन नुदेत् सहयुञ्जीत च स्वजनवृद्धिः स्ववृद्धिः मन्येत, विषयेऽस्मिन्न शङ्केत।**

## उभयभ्रष्ट

**सजणा उविक्खंति जे, बहु-विस्सासेण परासिदा होंति।**
**ते होंति उहय-भट्ठा, ताणं सहकारी णो को वि।।45।।**

जो स्वजन की उपेक्षा करते हैं व बहुत विश्वास से पराश्रित होते हैं वे उभय भ्रष्ट होते हैं। कोई भी उनका सहयोगी नहीं होता।

The ones who don't support or ignore their own people and are depend on others faithfully, they become adulterous. No one ever helps them.

**ये स्वजनानुपेक्षन्ते पराश्रिताःभवन्त्यतिविश्वासेन च ते उभयभ्रष्टाः भवन्ति न कोऽपि सहयुङ्क्ते तेषाम्।**

## मातृभूमि घातक

**मादु-भूमि-घादगो हु, जो सो मण्णे मादा-घादगोव्व।**
**णो होदि सग-देसस्स, धम्म-सजणाणं होज्ज कहं।।46।।**

जो मातृभूमि का घातक होता है। वह माँ के घातक के समान माना जाता है। जो अपने देश का नहीं होता, वह धर्म व स्वजनों का कैसे हो सकता है?

The one who is the destroyer of his motherland is like a slayer of his mother. How can someone not faithful to his native land, be to his people and religion.

**मातृभूमिघातकः मातृघातक इव मन्यते। यस्य न स्वदेशं प्रति निष्ठा सः धर्मस्वजनानां कथं भवितुं शक्नोति?**

## देश सुरक्षित तो सब सुरक्षित

**होदि देससुरक्खिदो, जदा तदा सव्व-सुरक्खिदा होज्ज।**
**सजणा धम्म-सक्किदी, मज्जादा पइण्णादी तह।।47।।**

जब देश सुरक्षित होता है तब सब सुरक्षित होते हैं। देश के सुरक्षित होने पर स्वजन, धर्म, संस्कृति, मर्यादा तथा प्रतिज्ञा आदि सब सुरक्षित होते हैं।

Everyone is secured when the nation is safe. Our people, religion, culture, dignity and vows are all protected when our country is safe.

**यदा देशः सुरक्षितः तदा सर्वसुरक्षिताः। देशस्य सुरक्षिते सति स्वजनधर्मसंस्कृतिमर्यादा प्रतिज्ञाश्च रक्षन्ति।**

## देशरक्षा

**उज्झित्तु अण्णभावं, रक्खेदि जह जोगी अप्पधम्मं।**
**गेहीहि रक्खिदव्वो, सग-देसो सया कुडुंबं व॥48॥**

जिस प्रकार योगी अन्य भावों का त्याग कर आत्म धर्म की रक्षा करता है उसी प्रकार स्व परिवार के समान गृहस्थों के द्वारा सदा अपने देश की रक्षा की जानी चाहिए।

Just as a yogi-ascetic safeguards his religion by giving up all others things or thoughts, householders should always protect their country like their own family.

**योगी यथा इतरभावान् त्यक्त्वात्मधर्मं रक्षति तथैव गृहस्थैः स्वकुटुम्बवत् स्वदेशः रक्षितव्यः।**

## सहयोगी भी आवश्यक

**विणा किरणेहि अक्को, णत्थि सक्को पज्जोयिदुं भूमिं।**
**सहकारिं विणा तहा, कोवि रायो ण होदि सफलो।।49।।**

जिस प्रकार किरणों के बिना सूर्य भूमि को प्रकाशित करने में शक्य नहीं है उसी प्रकार सहयोगी के बिना कोई भी राजा सफल नहीं होता।

Just as the Sun is incapable of illuminating Earth without its rays, a ruler is unsuccessful without cooperation.

**सूर्यो यथा रश्मिभिर्विना देवितुं शक्नोति तथैव सहायकैर्विना कोऽपि नृपः सफलः न भवति।**

## महापुरुष वृत्ति

**महापुरिसा भुंजंति, सुह-दुह-संपत्ति-विपत्ति पहुदी य।**
**चंदो वड्ढदि झिज्जदि णेव तारगा कया वि॥50॥**

महापुरुष ही सुख, संपत्ति व विपत्ति आदि को भोगते हैं। जैसे चंद्रमा ही वृद्धिंगत होता है व क्षीण होता है तारे कभी भी नहीं।

Only genuine men experience happiness, sorrow, accomplishment and difficulties. Just as the moon only reduces and grows back, but the stars don't.

**मात्रं महापुरुषाः भुञ्जते सुख-दुःख-समृद्धि-विपत्तीश्च यथा चंद्रः वर्धते क्षीयते च, न तारकाः कदापि।**

## मर्यादित शासक

**सायरोव्व हु सासगो, रयणं व गंभीर-बहुगुणपुंजो।**
**णो लंघदि मज्जादं, किअंत-पडिऊल-ठिदीए वि॥51॥**
**णदी-आदी सुक्कंति, पलावो वि णियमेण होदि तासु हि।**
**सायरो णेव सुक्कदि, णो गहेदि पलावरूवं च॥52॥**

शासक सागर के समान गंभीर व रत्न के समान बहुत गुणों का पुंज होता है। वह शासक कितनी प्रतिकूल स्थिति में भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता।

नदी आदि ही शुष्क होती हैं और बाढ़ भी नियम से उनमें ही आती है। सागर न ही सूखता है, न ही बाढ़ रूप ग्रहण करता है।

A leader should be as solemn as the ocean and as skilled as a gem. He does not surpass his decorum even in the most adverse situations.

Only rivers dry up and flood. The ocean never dries up or floods.

**शासकः सागरवत् गंभीरः रत्नसदृशः बहुगुणपुंजो भवति। सः कियद् प्रतिकूलतायामपि मर्यादां न समुल्लङ्घते।**

**नद्यादयः शुष्यन्ति तास्वेव जलप्लावनमपि भवति किन्तु सागरः न।**

## आत्मनिर्भरता हेतु कर्त्तव्यपालन

**पत्तेयं णागरिओ, पालेज्जा अप्पणिब्भरं होदुं।**
**सगकत्तव्वं णिच्चं, तेण विणा कहं सफलत्तं।।53।।**

प्रत्येक नागरिक को आत्म निर्भर होने के लिए नित्य अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। उसके बिना सफलता कैसे हो सकती है?

Every citizen should carry out their duties to become self-reliant. How can they achieve success without it?

**प्रत्येकं नागरिक आत्मनिर्भरो भवितुं निजकर्त्तव्यं पालयेत्। तं विना साफल्यं कथम्?**

## आत्मनिर्भरता

**अप्प-णिब्भरत्तं तह, धम्मो सीलो पत्तेयजीवस्स।**
**अप्प-णिब्भरो णो जो, मिदोव्व खलु पराहीणो सो॥54॥**

आत्म निर्भरता प्रत्येक जीव का धर्म और शील (स्वभाव) है। जो आत्म निर्भर नहीं है वह मृत के समान पराधीन ही है।

Self-sufficiency is a religion and nature for every being. The one who is not self-reliant (is not able to do anything) is dependant like corpse.

**आत्मनिर्भरता प्रत्येकं जीवस्य धर्मःस्वभावश्च, यः नात्मनिर्भरः सः किल मृतवद् पराधीनः।**

## परतंत्रता दुःखजननी

**पारतंतस्स सुहं वि, ण समं सातंतस्स दुहं कया वि।**
**जह तह अहस्स खंडो, सरिसो णेव उवरि खंडस्स॥55॥**

जिस प्रकार नीचे का खंड ऊपर के खंड के समान कभी नहीं हो सकता, उसी प्रकार परतंत्रता का सुख कदापि स्वतंत्रता के दुःख के समान भी नहीं है।

Just like the upper segment can never be the same as the lower section, the happiness of dependency can never be the same as the misery of freedom.

**अधस्तलो न भवति यथा कदाप्युर्ध्वतलसमस्तथा पारतन्त्र्य सुखं न स्वातंत्र्यदुःखमिव।**

## स्वतंत्रता का दुःख भी श्रेष्ठ

**सातंतस्स दुहं अवि, सुहं पारतंतस्स सुहं च दुहं।**
**भयवदस्स उवएसो, जे मणंति धम्म-पेम्मी ते॥56॥**

स्वतंत्रता का दुःख भी सुख है और परतंत्रता का सुख भी दुःख है ऐसा भगवान् का उपदेश है, जो ऐसा मानते हैं वे धर्मप्रेमी हैं।

Even the sorrow of freedom is happiness and happiness of subjugation is sorrow. This is the preaching of God and the one who believes it, is religious.

**स्वातंत्र्यदुःखमपि सुखं पारतंत्र्यसुखमपि दुःखञ्च एतादृशः जिनोपदेशः। मन्यन्ते ये धर्मनिष्ठास्ते।**

## विरोध नहीं सहयोग

**ण बाहेज्ज परोप्परे, आवसियं चिय करेज्ज साउज्जं।**
**सगं वड्ढिदुं जयिदुं, परं इमा सस्सदा णीदी॥57॥**

अपनी वृद्धि के लिए और दूसरों को जीतने के लिए परस्पर में विरोध नहीं करना चाहिए, सहयोग अवश्य ही करना चाहिए। यह शाश्वत नीति है।

One should never rebel against others and constantly support. This is a golden rule to win others and enhance one's growth.

**स्ववर्धितुं परं जेतुञ्च मिथः न विरुन्ध्यात्, अवश्यमेव सहयुञ्जीत शाश्वतनीतिरिति।**

## श्रेष्ठ क्षेत्र

**जम्मि खेत्तम्मि वेज्जो, विज्जंते सेवगो तह सहाई।**
**तम्मि वड्ढेज्ज वत्तं, सव्वसाहणं जहाजोग्गं॥58॥**

जिस क्षेत्र में वैद्य, सेवक तथा सहयोगी विद्यमान हैं उस क्षेत्र में आरोग्य व यथायोग्य सर्वसाधन वृद्धिंगत होते हैं।

The area where there are doctors, servants and aides, required resources and sound health always increases in that area.

**वैद्य-सेवक-सहायकाश्चण यत्र विद्यन्ते तत्रारोग्य-योग्य साधननानि च वर्धन्ते।**

## सेवा धर्म

**समत्थ-णरो जो को वि, दुगुंछा-रहिदो सवच्छलभावो।**
**जस्स उवयार-धम्मो, सो अणुवज्जदु पहु-सेववव्व॥59॥**

जो कोई भी नर, समर्थ, ग्लानि या जुगुप्सा से रहित, वत्सल भाव से सहित होता है, जिसके लिए उपकार ही धर्म है, वह प्रभु की सेवा के समान सबकी सेवा करे।

The man free from all worldly pleasures, replete with affection, and for whom service is religion, he should support or service others like worshipping God.

**नरो यः समर्थः निर्विजुगुप्सः सवत्सलश्च भवति यस्मै उपकारः किल धर्मोऽस्ति सः प्रभुसेवावत् सर्वान् सेवते।**

## पवित्रता सुख हेतु

**ण कया वि सुह-कारणं, मलिणत्तं रोय-कारणं णिच्चं।**
**तम्हा मण-वयण-काय-भावा होज्ज पवित्ता सया॥60॥**

मलिनता कभी भी सुख का कारण नहीं होती, वह नित्य रोग का कारण है इसीलिए मन, वचन, काय व भाव सदा पवित्र होने चाहिए।

Profanity can never be a genuine cause of happiness. It is the basis of constant ill-health. Hence, mind, speech and body should always be pure.

**मलिनता कदापि न सुखकारणं भवति। सा नित्यं रोगकारणम्। अतः मनवचनकायभावाश्च सदा पवित्रं भवेयुः।**

## निःस्वार्थ शिक्षा

**णिसत्थभावेण दिंतु, सुसिक्खं सलाहगाराहिवत्ता।**
**जेणं होज्ज भारदं, अप्पणिब्भरो इमो देसो॥61॥**

सलाहकार व वकील निःस्वार्थ भाव से सुशिक्षा दें, जिससे यह 'भारत' देश आत्मनिर्भर हो सके।

Advisors and lawyers should provide good education altruistically. So that this country "Bharat" can become self-dependent.

**मन्त्रदाताधिवक्तारौ निःस्वार्थभावेन सुशिक्षा दातव्या। येन भारतमात्मनिर्भरः भवेत्।**

## देश का मेरुदंड

**मेरुकरंडगोव्व खलु, ववसायी मण्णे देसस्स सया।**
**तेहिं विणा समायो, जीवणं विणा मेरुदंडं॥62॥**

व्यवसायी सदा देश की रीढ़ की हड्डी के समान माने जाते हैं। उनके बिना समाज वैसी ही है जैसे मेरुदंड के बिना जीवन।

Businessmen are always considered as the backbone of a nation. A nation without them is like a life without a spine.

**वार्त्तिकाः देशस्य मेरुदंडवद् मन्यन्ते। तैर्विना समाजः मेरुदंडं विना जीवनसदृशः।**

## व्यापार से समृद्धि

**वड्ढेज्ज जम्मि खेत्ते, वावारो होदि देसो समिद्धो।**
**जहा तडागम्मि णीर-विड्ढीए पउमपुप्फाइं॥63॥**

जिस क्षेत्र में व्यापार वृद्धिंगत होता है वह देश वैसे ही समृद्ध होता है जैसे सरोवर में नीर की वृद्धि से कमल पुष्प विकसित होते हैं।

A country prospers when its industries flourish like replenishment of water in the ponts makes lotuses blossom.

**यत्र व्यवसायः सम्वर्धते तत्र देशोऽपि। यथा सरोवरे नीरवृद्ध्या जलजाः विकसन्ति।**

## व्यवसाय का महत्त्व

**णहं पज्जण्णाविअं, जदा तदा अयाली सया मण्णे।**
**जह तह जाणेज्ज विणा, ववसायं समायो देसो॥64॥**

जिस प्रकार जब आकाश बादलों से आच्छादित होता है तो वह दुर्दिन माना जाता है उसी प्रकार व्यापार के बिना सदा समाज व देश जाना जाता है।

Just as a sky overcast with clouds is a rainy day, society or country without business is known.

**यथा मेघैः नभो व्याप्नोति तद्दुर्दिनं मन्यते तथैव व्यवसायं विना समाजो देशो वा।**

## व्यवसाय-सुखकारक

**पज्जत्त-णाणजुदो य, जोगी सुविट्ठिजुदहरिदखेत्तं च।**
**कस्स सुहं णो हु देदि, सपज्जत्तधणं ववसायी॥65॥**

पर्याप्त ज्ञान से युक्त योगी, सुवृष्टि से युक्त हरित क्षेत्र व पर्याप्त धन से युक्त व्यवसायी किसके लिए सुख नहीं देते अर्थात् सबके लिए सुख देते हैं।

To whom can an ascetic with complete knowledge, green fields with adequate rainfall, and businessman with enough money not give happiness? They can proffer satisfaction tc all.

**पर्याप्तज्ञानयुक्तयोगी, सुवृष्टियुक्तहरितक्षेत्रं, पर्याप्तधनयुक्त वार्त्तिकश्च कस्मै न सुखं ददति?**

## राजकीय व्यवस्थापक

**जदि होंति सच्चणिट्ठा, ववत्थावगा सया रायकेरा।**
**णियमेण तत्थ खेत्ते, सस्सदा सुह-संती वसेदि॥66॥**

यदि राजकीय व्यवस्थापक सदा सत्यनिष्ठ होते हैं तो नियम से उस क्षेत्र में शाश्वत सुख शांति बसती है।

If the state administrators are always veracious, then eternal peace and happiness predominate in that area.

**यदि शासनाधिकारिणः सत्यनिष्ठाः भवेच्चेत्तस्मिन् क्षेत्रे सुखं शान्तिश्च विद्यते।**

## उचित ब्याज

**होज्ज कलंतर-मुचिदं, अइकलंतरं सोसदि उवभोत्ता।**
**कलंतरं अइणूणं, जदि गिहत्थ-पमादी णियमा॥67॥**

ब्याज उचित होना चाहिए। यदि ब्याज अधिक होता है तो वह उपभोक्ताओं का शोषण करता है और यदि ब्याज अतिन्यून होता है तो गृहस्थ नियम से प्रमादी हो जाता है।

The interest on loan should be appropriate. If it is more, it becomes a source of exploitation of people and if, less then people become ignorant or careless.

**कलान्तरमुचितं भवेद् यद्यधिकं भवेच्चेत् उपभोक्तृन् शोषयन्ति यदि न्यूनतमं भवेच्चेत् गृहस्थो प्रमत्तो भवत्येव।**

## आवश्यक धन वितरण

**धण-आदाउ-पदायग-महाजणा दाएज्ज सय समूहो।**
**जेत्तिय-धण-मावसियं, जदा तदा तेत्तियं जणाण॥68॥**

धन के आदान व प्रदान करने वाले महाजनों व समूह-संस्थाओं को लोगों के लिए जब जितना धन आवश्यक हो उतना देना चाहिए।

The people who lend money like moneylenders or organizations like banks, should always provide the required sum to people in need.

**धनादातृप्रदातृमहाजनैः संस्थाभिश्च जनेभ्यः आवश्यकधनं दातव्यम्।**

## धन द्वारा समाज समृद्ध

**सस्सियो उचिदसमये, सिंचदि सखेत्तं जहेच्छ-णीरेण।**
**जह तह धणेण कुणंतु, समाय-समिद्धो महाजणा॥69॥**

जिस प्रकार से कृषक उचित समय में यथेच्छ नीर से अपने खेत का सिंचन करता है उसी प्रकार महाजन धन के द्वारा समाज को समृद्ध करें।

Just as a farmer irrigates his fields at the correct time with the appropriate amount of water, similarly prominent men should also prosper the society by bestowing money.

**यथा कृषको यथेष्टजलेन यथासमये क्षेत्राणि सिञ्चति तथा धनेन महाजनाः समाजं संवर्धेत्।**

## अति-इति : द्वयघातक

**अइणीरं वि घादगं, फसल-घादगो तह णीराभावो।**
**धणाहियारी विअरदु, समायं दु जहाजोग्गं तं॥70॥**

अति नीर भी फसल का घातक है व नीर का अभाव भी फसल का घातक है। उसी प्रकार अधिक धन भी घातक है और धन अभाव भी। अत: धन के अधिकारी समाज में यथायोग्य धन वितरित करें।

Just as an excess of water is harmful to the crops and, so is a lack of water, financial officers should also distribute wealth in the society accordingly.

**क्षेत्रेऽतिजलमपि यथा कृषिघातकं नीराभावोऽपि च तथा धनाधिकारिभिः यथायोग्यं धनं वितरेत्।**

## आत्मनिर्भरता कब?

**अप्पणिब्भरं हविदुं, भारदं तदा होज्ज जदा सक्कं।**
**गिही संजमं धरंति, सगणंत-णिरत्थग-कंखेसु॥71॥**

आत्मनिर्भर होने के लिए भारत तब ही समर्थ हो सकता है जब गृहस्थ अपनी अनंत निरर्थक आकांक्षाओं पर संयम धारण करें।

"Bharat" can only become independent if the earthly people end their futile desires and attain temperance.

**भारतमात्मनिर्भरो भवितुं तदैव समर्थो यदा गृहस्थाः स्वकीयानंतनिरर्थककांक्षाः रुन्धन्ति।**

## अपरिग्रह

**अपरिग्गहो खलु महाधम्मो तं पालंते सय जोगी।**
**गेही जहासत्तीइ, पालदु एयदेसरूवेण॥72॥**

अपरिग्रह निश्चय से महाधर्म है, योगी उसका सदा पालन करते हैं। गृहस्थ यथाशक्ति एकदेश रूप से इसका पालन करें।

"Aparigraha" (non-accumulation) is the greatest of religion and ascetics always follow it. Householders should also follow it partially.

**अपरिग्रहः महाधर्मो, योगिनस्तं पालयन्ति गृहस्थाः यथा शक्ति एकदेशव्रतं पालयेत्।**

## स्वदेशी वस्तु

**सदेसे उप्पण्ण-वर-दव्वाणि महामंडिदं करेज्जा।**
**तं हु वत्थु-संवड्ढण-कारणं तं समिद्धि-हेदू।।73।।**

अपने देश में उत्पन्न उत्कृष्ट द्रव्यों को महिमामंडित करना चाहिए, वह वस्तु के संवर्द्धन का कारण है और वस्तु का संवर्द्धन समृद्धि का हेतु है।

The ace quality metals obtained in our country should be venerated. They are the cause of enrichment of goods and goods of prosperity.

**स्वदेशोत्पन्नोत्कृष्टद्रव्याणि प्रशंसनीयानि। तद्वस्तुसंवर्द्धनस्य कारणं, वस्तुसंवर्द्धनं समृद्धिकारणञ्च।**

## उत्पादन विधि

**वत्थु-णिम्माणओ सय, उग्गहेज्जा सुट्ठु अइ-वत्थूइं।**
**लाइअं होज्ज णूणं, जहालाह-मुवभोत्तू लहदु॥74॥**

वस्तु निर्माताओं को श्रेष्ठ अधिक वस्तुओं का निर्माण करना चाहिए, उसमें लागत न्यून हो जिससे उपभोक्ता यथालाभ प्राप्त कर सकें।

ण

Producers should make large quantities of high-quality products. It should have the lowest cost possible so that the consumers can benefit the most out of it.

**वस्तुनिर्मातारः श्रेष्ठाधिकवस्तूनि निर्मीयेत यस्मिन् व्ययःन्यूनो भवेद् येन उपभोक्तारः अतिलाभं प्राप्नुयात्।**

## सर्वहितार्थ वस्तु निर्माण

**वत्थुणिम्माणओ णो, उग्गहेज्ज धण-संगह-भावणाइ।**
**सयल-हिदत्थं जदि ते, बहुपुण्णं पावदि णियमेण॥75॥**

वस्तु निर्माता को धन संग्रह की भावना से निर्माण नहीं करना चाहिए। यदि वे सभी के हित के लिए वस्तु निर्माण करते हैं तो नियम से बहुत पुण्य प्राप्त करते हैं।

A producer should not create a commodity with the intention of financial profit. If they manufacture goods for the well being of all, they attain virtue by ground.

**वस्तुनिर्मातारः धनसंग्रहभावनया न सृजेत्। यदि ते सर्वहिताय सृजेच्चेदतिशयपुण्यं लभन्ते।**

## उत्तम, मध्यम व जघन्य नर

**जहण्ण-णरो कंखेदि, वत्थूणि धणं तह इंदिय-सोक्खं।**
**मज्झिमो धणं जणं च, उत्तमो कंखदि सव्व-हिदं॥76॥**

जघन्य नर (मनुष्य) वस्तु, धन व इंद्रिय सुख की आकांक्षा करता है, मध्यम धन व जन की तथा उत्तम मनुष्य सर्व हित की आकांक्षा करता है।

A flagitious man desires for things, wealth, and bodily pleasure, a mediocre man wants wealth and people while a superior man only aspires the common welfare.

**जघन्यनरो वस्तुधन-सुखानि च कांक्षति मध्यमः धनं जनञ्चुत्तमस्तथा च सर्वहितमिति।**

## दान

**दयारो पुव्वक्खरो, मयारो पच्छा वण्णमालाए।**
**दाणं हु पढम-धम्मो, अणंतरं मग्गणं हवेदि॥77॥**

वर्णमाला में 'द' कार पूर्व अक्षर है व 'म' कार उसके पश्चात् आता है अर्थात् दान प्रथम धर्म है माँगना उसके बाद होता है।

In Hindi alphabets, "द" comes before "म", meaning, charity is the supreme religion. Demanding comes after that.

**वर्णमालायां दकारो पूर्वाक्षरः मकारश्च अनंतरमायाति अर्थात् दानं प्रथमधर्मो तदनंतरं याचना भवति।**

## सहयोग क्रम

**साउज्जं दाएज्जा, पढमो अणंतरं तं जायेज्जा।**
**जो हु देदि सहकारं, तस्स सव्वदा सव्वजणा वि॥78॥**

सर्वप्रथम सहयोग देना चाहिए पश्चात् सहयोग माँगना चाहिए। जो सर्वदा सहयोग देता है उसके लिए सभी लोग भी सहयोग देते हैं।

We should always provide our co-operation foremost, and ask for it later. The one who is always rendering his help to others gets cooperation from everyone else.

**प्रथमतः सहयोगं कुर्याद् पुनो यच्छेच्च यः सहकरोति सर्वदा तस्मै सर्वे सहयोगं ददाति।**

## संयुक्त परिवार

**अज्ज वि भारद-देसे, होज्ज संजुत्त-कुडुंब-मावसियं।**
**एयल-णरो उहट्टदि णो सहजदाए संजुत्तं।।79।।**
**भिण्ण-भिण्ण-जलबिंदू, भंसदि मरुभूमीइ सहजदाए।**
**तडाग-णीरं खयिदुं, जह तह ण खमो अक्कतावो।।80।।**

आज भी भारत देश में संयुक्त परिवार आवश्यक है। एक व्यक्ति नष्ट हो सकता है किंतु संयुक्त रूप से रहने वाले नर सहजता से वैसे ही नष्ट नहीं हो सकते जैसे मरुभूमि में भिन्न-भिन्न जल की बूंदें नष्ट हो जाती हैं किंतु सूर्य का ताप सहजता से सरोवर के नीर को नष्ट करने में समर्थ नहीं होता।

Even today, joint families prevail in India. A single person can be defeated, but a person with the support of a family can never be brought down simply. Just as individual water droplets easily get lost on barren land, but the searing heat of the sun can never dry up an ocean.

**अद्यापि भारतदेशे संयुक्तकुटुम्ब आवश्यकः, एककः नश्यति परं संयुक्तकुटुम्बः न सुलभेन। यथा पृथक्-पृथक् जल बिन्दवः मरुस्थले सहजतया विनश्यति किन्तु सूर्यतापः सरोवरनीरं न नष्टुं शक्नोति।**

## शक्तिवर्द्धन

**साउज्ज-भावणाए, कज्जावायण-सत्ती वच्छलेण।**
**वड्ढदि सुभावणा-जुद-जणाण पइडी वि सहकारी॥81॥**

वात्सल्य व सहयोग की भावना से कार्य संपादन की शक्ति वृद्धिंगत होती है। अच्छी भावना से युक्त लोगों की प्रकृति भी सहयोगी होती है।

Work power is fueled by feelings of affection and support. People having good thoughts have a helpful nature as well.

**वात्सल्यसहकारयो र्भावै: कार्यसंपादनशक्तिर्वर्धते। सद्भावयुतजनानां प्रकृतिरपि सहकारी भवति।**

## अधिकार हनन -पाप

**कया वि णेव करेज्जा, कस्स वि खलु हणणं अहियाराणं।**
**अहियाराण हणणं वि, हणणं व धम्म-धण-जणाणं।।82।।**

कभी भी किसी के भी अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए, अधिकारों का हनन भी धर्म, धन व लोगों के हनन के समान होता है।

One should never violate other's rights. Violating other's right is equal to outraging religion, wealth and people.

**कस्याप्यधिकारं न हन्यात् कदापि, अधिकारहननमपि धर्मधनजनानां हननमिव जानीत।**

## स्वानपेक्षी

**पराणवेक्खियो णेव, होज्ज कया वि कत्तव्व-पालणम्मि।**
**सगाणवेक्खिय-हवणं, सवर-हिदस्स हेदू मुक्खं॥83॥**

कर्त्तव्य पालन करने में कभी भी परानपेक्षी नहीं होना चाहिए। स्वानपेक्षी होना स्वपर हित का मुख्य हेतु है।

One should never depend on others to fulfil their duties, being self-reliant is the primary basis for everyone's happiness.

**कर्त्तव्यपालने न कया पि परानपेक्षी भवेत् स्वपरहितस्य मुख्यहेतुः स्वानपेक्षतेति।**

## धर्मी कौन?

**फल-कंखाइ विणा जे, कत्तव्वं पालंते ते धम्मी।**
**कंखा-जुद-धम्मो णो, देदि कयावि वर-णिव्वाणं॥84॥**

जो फल की आकांक्षा के बिना कर्त्तव्य का पालन करते हैं वे धर्मी हैं। कांक्षा से युक्त धर्म कभी भी श्रेष्ठ निर्वाण को नहीं दे सकता।

The one who performs his duties without thinking of the result is devout. Faith, including purposes, can never provide supreme salvation.

**फलाकाङ्क्षया विना यः कर्त्तव्यं पालयते सो धर्मिष्ठः। सकाङ्क्षधर्मः कदापि न ददाति श्रेष्ठनिर्वाणम्।**

## धर्म का प्रभाव

**उवसंगहणं वसणं, जाण जे सुभावजुद-धम्मी जत्थ।**
**वसंति तत्थ सक्का हु, वारिदुं पइडि-पकोवं अवि॥85॥**

उपकार करना जिनका व्यसन है और जो अच्छी भावना से युक्त हैं, धर्मी हैं वे जहाँ रहते हैं वहाँ वे प्रकृति के प्रकोप को भी रोकने में समर्थ होते हैं।

The ones who are indulged in kindness, have immaculate emotions and are religious, they are capable of preventing even a natural calamity.

**उपकरणं यस्य व्यसनं तथा च यः सद्भावयुतः धर्मिष्ठश्च सो यत्र वसति रुणद्धि तत्र प्रकृतिप्रकोपम्।**

## प्रकृति प्रकोप कहाँ?

**लोयमज्जादा-धम्म-सक्किदि-पयडीणं च विरुद्धं जे।**
**समायरंति हिंसंति, होज्जा पयडि-पकोवो तम्मि॥86॥**

जो लोकमर्यादा, धर्म, संस्कृति, प्रकृति के विरुद्ध आचरण करते हैं, हिंसा करते हैं वहाँ प्रकृति प्रकोप होता है।

The ones who live against societal dignity, religion, culture and nature and commit violence, there is a natural calamity.

**यः लोकमर्यादा-धर्मसंस्कृतिप्रकृतीनां विरुद्धः चरति, हिनस्ति च, तत्र प्राकृतिक-प्रकोपो भवतीति।**

## जीएं व जीने दें

**सयं जीवदु सुहेणं, अण्णाण होज्ज जीविदुं णिमित्तं।**
**अप्प-णिब्भर-भारदे, णो भक्खेज्ज कस्स वि मंसं॥87॥**

स्वयं सुखपूर्वक जीवें व अन्यों के लिए भी जीने में निमित्त बनें। आत्म निर्भर भारत में किसी को किसी का माँस नहीं खाना चाहिए।

Live tranquilly and aid others in leading their lives happily, too. In an "Aatm-Nirbhar" ( self-dependent) Bharat, no one should eat any other beings' flesh.

**सुखेन स्वयं जीवेदन्येभ्योऽपि निमित्तभूतो भवेत्। कस्यापि मांसं न भुञ्जीत कोऽप्यात्मनिर्भर-भारते।**

## मादक पदार्थ घातक

**धी-पलिमंथु-वत्थूणि, मादगादी णो गहेज्ज सज्जणा।**
**मज्जादा-तण-धणाण, धम्म-णासगाणि जं ताइं॥88॥**

अच्छे लोगों को बुद्धि के लिए सर्वथा घातक, मादक आदि वस्तुओं को ग्रहण नहीं करना चाहिए क्योंकि वे मर्यादा, शरीर, धन व धर्म की नाशक हैं।

Good people should not use intoxicating substances, especially for the good of memory because they damage dignity, body, wealth and religion.

**सज्जनाः सर्वथा घातकमादकादिवस्तूनि न भुञ्जीत यतोहि तानि वस्तूनि तन-धन-धर्म-मर्यादानाञ्च घातकानीति।**

## कारण व कार्य पवित्र

**पवित्त-कज्जाणि ताण, सिद्धीइ होज्ज कारणं वि तहेव।**
**अपूद-कारणेहि णो, संभवो खलु पूदकज्जाणि॥89॥**

कार्य पवित्र हों व कार्यों की सिद्धि के कारण भी उसी प्रकार पवित्र होने चाहिए। अपवित्र कारणों से पवित्र कार्य संभव नहीं हैं।

Both the purpose of work and the work itself should be pure. Pure deeds cannot be fulfilled by impure means or reasons.

**कार्यं पवित्रं भवेत् कार्यसिद्धि-कारणमपि च।**
**अपवित्रकारणैर्पवित्रकार्यमसंभवम्।**

## पवित्र भी अपवित्र

**अक्केण असंभवो हु, इंद-सुहायरस्स सीयलबिंदू।**
**पूदकज्जं-मपूदं व, होज्ज वि अपूदकारणेहिं॥90॥**

जिस प्रकार सूर्य से इंद्र सुधाकर अर्थात् चंद्र की शीतल बिंदु प्राप्त होना असंभव है उसी प्रकार अपवित्र कारणों से पवित्र कार्य भी अपवित्र के समान होता है।

Just like the pleasant moonlight cannot be provided by the scorching sun, a pure action done with corrupt intention is equivalent to an impure action.

**सूर्येणासंभवा यथा चन्द्रिका तथैव अपवित्रकारणै-र्पवित्रकार्यमपि न भवति।**

## निर्दोष साधनों से महान् कार्य

**होज्ज महा-उद्देसं, पूरिदुं जावइय-महाकज्जाणि।**
**ताइवय-विसिट्ठाइं विणिद्दोस-साहणे हवणे॥91॥**

महान् उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जितने महान् कार्य होते हैं, विनिर्दोष साधनों के होने पर वे उतने ही विशिष्ट होते हैं।

As many great works are done for the accomplishment of great motives, they become more special by being facilitated by pure resources.

**महोद्देश्यानां संपत्ते यावद् महाकार्याणि भवन्ति विनिर्दोष साधने सति तानि तावद्विशिष्टान्येव।**

## असमर्थ साधन

**जो परं दूसिदूणं, कंखेदि खलु सगगुणवड्ढणं सो।**
**बुड्डित्तु अग्गिकुंडे, णंदं सुहसीयलणीरस्स॥92॥**

जो दूसरों को दोष देकर अपने गुणों के वर्द्धन की आकांक्षा करता है, मानो वह अग्नि कुंड में डूबकर सुखद-शीतल नीर के आनंद की आकांक्षा करता है।

The one who aspires to develop one's qualities but blaming others is like someone wishing for cold water amidst burning in a fire.

**यः परं दूषयित्वा स्वगुणवर्द्धनमिच्छति सोऽग्निकुंडं निमज्य सुखद-शीतलजलानंदमिच्छति।**

## विपरीत कारण

**इंगालं अण्णाणं, देदि तस्स णो रयदि रत्तगब्भो।**
**कुव्वदि पर-अहिदं जो, कहं संभवो सुहिदं तस्स॥93॥**

जो दूसरों के लिए कोयला देता है उसके हाथों में मेहंदी नहीं रंगती। उसी प्रकार जो दूसरों का अहित करता है उसका हित कैसे संभव हो सकता है अर्थात् दूसरों का अहित करने वाले का हित नहीं होता।

Just as someone who gives coal to others, cannot get the colours of "Mehandi" in their hands. Similarly, how can his things happen in his interest, if he causes harm to others? Implying that the one who wrongs others, his interest is not possible.

**यः परेभ्योऽङ्गारं ददाति तस्य करेसु रक्तगर्भा न रज्यते तथैव पराणाम हितं करोति तस्य हितं कथं संभवम्?**

## जैसी करनी वैसी भरनी

**आयंसोव्व जीवणं, मण्णे फुडं बिंबं व सगकम्मं।**
**बिंबं व पडिबिंबं हु जह कुणदि तह भुंजेदि फलं॥94॥**

जीवन दर्पण के समान व अपना कर्म स्पष्ट बिंब के समान माना जाता है। जो जिस प्रकार का कार्य करता है वह उसी प्रकार के फल को भोगता है क्योंकि जैसा बिंब होता है वैसा ही प्रतिबिंब होता है।

Life is like a mirror and our actions are like object. As one does, so shall he reap. Reflection is only as good as the object.

**जीवनमादर्शसदृशः स्वकर्माणि च स्पष्ट-बिम्बमिव। यो यथाकार्यं करोति तथैव फलं भुङ्क्ते यतोहि यथा बिम्बं तथा प्रतिबिम्बमिति।**

## यथा तथा

**जह होज्ज णर-वियारो, वत्ता कज्जं पविट्टी वि तहेव।**
**कज्जं कारण-मुहयं, अविणाभावी हु णियमेणं॥95॥**
**तम्हा सया करेज्जा, सुहकज्ज-वत्ता-वियार-पविट्टी।**
**सुहं हु सुद्धस्स तहा, सुद्धं सिव-कारणं जाणह॥96॥**

जिस प्रकार मनुष्य का विचार होता है उसी प्रकार उसकी वार्ता, कार्य, प्रवृत्ति भी होती है। कार्य व कारण दोनों नियम से अविनाभावी होते हैं इसीलिए सदा शुभ कार्य, वार्ता, विचार और प्रवृत्ति करनी चाहिए। शुभ को शुद्ध का व शुद्ध को मोक्ष का कारण जानो।

Just as a man thinks, so become his words, work and nature. Effect and cause are concomitant characteristics. Therefore, one should always perform righteous deeds, speak good, think pure, and have moral character. Goodness is the cause of purity and purity of liberation.

**मनुष्यो यथा चिन्तयति तथैव प्रवर्तते निश्चयेन कार्य-कारणेऽ विनाभावी भवतः, अतः सदैव शुभकार्यालापविचारप्रवृत्तीः करणीयाः। शुभं शुद्धस्य शुद्धञ्च मोक्षस्य कारणम्।**

## सर्व हित भावना

**जो कंखेदि सग-हिदं, सगाणं सव्वदा परजणाणं वि।**
**सो णो करेज्ज कया वि, पर-अहिदं किंचिवि सिविणे वि॥97॥**

जो अपने, अपनों के व दूसरे लोगों के भी हित की आकांक्षा करता है वह स्वप्न में भी कदापि किसी दूसरे का किंचित् भी अहित नहीं करता।

The one who aspires for the good of himself, his people and others, he cannot hurt anyone even in his dreams.

**यः स्व-स्वजन-परेभ्यश्च हितं कांक्षति सः स्वप्नेऽपि किञ्चिदपि न पराहितं करोति।**

## हित कारक

**सुसंगदी सण्णाणं, गुरुसेवा तित्थवंदणं पूया।**
**वेरग्ग-सच्चणिट्ठा, सया हिदकारणं सव्वाण॥९४॥**

सुसंगति, सम्यग्ज्ञान, गुरुसेवा, तीर्थवंदना, पूजा, वैराग्य व सत्यनिष्ठा सदा सभी के हित के कारण हैं।

A sound company, right knowledge, service to mentor, pilgrimage, worship, detachment and honesty are all the cause of welfare.

**सुसंगति-सम्यग्ज्ञान-गुरुसेवा-तीर्थवंदना-पूजा-वैराग्य-सत्य निष्ठाः सर्वदा सर्वहितकारणमिति।**

## संयम

**सुहकरो तियजोगाण, संजमो पत्तेययालखेत्तेसु।**
**उविक्खदि संजमं जो, सो धम्मं जीवणं देसं॥99॥**

तीनों योगों का संयम प्रत्येक काल व क्षेत्र में सुखकर है। जो संयम की उपेक्षा करता है वह धर्म, जीवन व देश की भी उपेक्षा करता है।

Abstinence of the mind, body and soul is the basis of happiness all times and places. He who disregards restraint neglects religion, life and country as well.

**प्रत्येकं कालक्षेत्रयोः त्रियोगसंयमः सुखकरोऽस्ति, यः संयम-मुपेक्षते सो धर्मजीवनदेशानपि।**

## संयम का महत्त्व

**अप्पणिब्भर-देसस्स, सिरणं संजमं विणा संभवो ण।**
**तं जाणदु माहप्पं, तिजोग-संजमस्स तियाले॥100॥**

संयम के बिना आत्म निर्भर देश का निर्माण शक्य नहीं है। इसीलिए तीनों काल में त्रियोग संयम का माहात्म्य जानें।

It is impossible to build self-sufficient "Bharat" without practising restraint. Hence, we should know the importance of inhibition of the three volitions.

**संयमेन विनात्मनिर्भरदेश-निर्माणोऽसंभवो अतः त्रिकालेषु त्रियोग, संयम-माहात्म्यं जानीयाः।**

## दुःख जननी व सुख जनक

**आसत्ती दुह-जणणी, सुहस्स जणगोव्व विरत्तभावो हु।**
**आसत्तीए वड्ढदि, दुहं तह विरत्तीए सुहं॥101॥**

आसक्ति दुःख की जननी है और विरक्त भाव सुख के जनक के समान है। आसक्ति से दुःख तथा विरक्ति से सुख वृद्धिंगत होता है।

Infatuation is the originator of all pains and detachment of bliss. Attachment leads to sorrow and aloofness to happiness.

**आसक्तिर्दुःख-जननी विरक्तिभावः सुख-जनकवच्च।**
**आसक्त्या दुःखं विरक्त्या च सुखं वर्धते।**

## पाप मूल

**आसत्ती अह-मूलो, हेदू लोह-जिम्ह-माण-कोहाण।**
**काम-मोहाण वीयं, उज्झदु तं णिच्चसुह-कंखी॥102॥**

आसक्ति पाप का मूल है, लोभ, क्रोध, मान, माया का हेतु है एवं काम व मोह का बीज है। नित्य सुख के आकांक्षी को उसे छोड़ देना चाहिए।

Infatuation is the basis of sin, cause of greed, anger and ego, and the seed of lust and attachment. A person who wants eternal bliss should give it up.

**पापमूलमासक्तिर्लोभक्रोधमानमायानां कारणं काममोहयो-र्बीजञ्च। सुखाभिलाषी तां त्यजेत्।**

## आसक्ति ही मूर्च्छा

**आसत्ती खलु मुच्छा, संगो चोरिअ-मबंभो ताइ पुण।**
**तत्तो मोसं होज्जा, पुणो हिंसा अवि णियमेणं॥103॥**

आसक्ति निश्चय से मूर्च्छा है। मूर्च्छा से परिग्रह, चोरी, अब्रह्म होता है पुनः उससे झूठ व उससे पुनः हिंसा भी नियम से होती है।

Infatuation is a deep attachment. It leads to accumulation, theft, unchastity, and again one (infatuated soul) deceives and does violence again.

**आसक्तिः किल मूर्च्छा, मूर्च्छया परिग्रहचौर्याब्रह्मेति भवन्ति तेन पुनः मृषाहिंसेऽपि नियमेण।**

## दुर्भाव प्रक्षालक जल

**वच्छल्ल-जलं सक्कदि, काम-थंडिल्ल-मोह-तण्हा-मलं।**
**वेरं दुब्भावं तह, णरस्स पक्खालिदुं णियमा॥104॥**

नियम से वात्सल्य का जल मनुष्य के काम, क्रोध, मोह, तृष्णा बैर व दुर्भावों के मल को प्रक्षालित करने में समर्थ होता है।

The water of affection can wipe out the passion, anger, attachment, enmity and damaging emotions of a human.

**वात्सल्य-जलं हि नरस्य कामक्रोधमोहतृष्णावैर-दुर्भावानां मलं प्रक्षालयितुं समर्थः।**

## वात्सल्य

**अप्पुप्पण्ण-वच्छलं, सुइपेम्मो जम्मि ण किंचिवि कंखा।**
**जत्थ हवेदि तं तत्थ, सव्वा दिस्संति परमप्पा॥105॥**

आत्मा से उत्पन्न वात्सल्य पवित्र प्रेम है, जिसमें किंचित् भी कांक्षा नहीं होती। जहाँ वह वात्सल्य होता है वहाँ सभी परमात्मा दिखाई देते हैं।

The affection from the soul is pure love. It does not have the slightest of desires. Where there is affection, there everyone is perceived as God.

**आत्मोत्पन्नवात्सल्यं पवित्रप्रेमोऽस्ति, यस्मिन् किंचिदपि कांक्षा न भवति। यत्र तद्वात्सल्यं सर्वे तत्र परमात्मा दृश्यन्ते।**

## भाव प्रभाव

**भावेहि लहदि जीवो, पुण्णं पावं धम्ममधम्मं वा।**
**णीरं कद्दमं तहा, जणदि वि तेण सुज्झदि पंको॥106॥**

जीव भावों से ही पुण्य-पाप वा धर्म-अधर्म प्राप्त करता है। जैसे नीर कीचड़ उत्पन्न करता है और उससे ही कीचड़ साफ होती है।

A being commits a sin or a good deed and becomes religious or non religious by emotions. Just like water forms mud, but rinses it as well.

**जीवः भावैरेव पुण्यपापे धर्माधर्मौ वा प्राप्यते यथा पङ्कः नीरं जायते तेनैव शुध्यति च।**

## दुष्ट में भी सज्जनता संभव

**जदि इंगालं तवदे, पुण्णरूवेण तं होज्ज सेदं हु।**
**अवमण्णेज्ज ण दुट्ठा, पायच्छित्तेणं सुद्धा वि॥107॥**

यदि कोयला पूर्ण रूप से तपता है तब वह श्वेत हो जाता है। दुष्टों का भी कभी अपमान नहीं करना चाहिए, प्रायश्चित से वे भी शुद्ध हो सकते हैं।

The coal turns white if it is thawed completely. The sinners should never be insulted as after fitting penance they can get pure.

**यद्यंगारो पूर्णरूपेण तपेच्चेत् श्वेतो भवति कदा दुष्टानपि नो तिरस्कुर्यात् प्रायच्छितेन तेऽपि शुद्धं भवितुं शक्नुवन्ति।**

## वस्तुओं का संस्कार

**भारदम्मि विज्जमाण-णूण-बहुमुल्ल-खणिजाइ-वत्थूण।**
**अप्प-णिब्भर-भारदं, रयिदुं करेज्ज सदुवजोगं।।108।।**
**कट्टु ताण सक्कारं, णूणमुल्लादु करेज्ज बहुमुल्लं।**
**अहिय-वत्थूसुं हवे, णिज्जादु हु सुह-समिद्धीए।।109।।**

आत्मनिर्भर भारत के सृजन के लिए भारत में विद्यमान न्यून व बहुमूल्य खनिज आदि वस्तुओं का सदुपयोग करना चाहिए। उनका संस्कार कर न्यून मूल्य से बहुमूल्य करना चाहिए। जिससे अधिक वस्तुओं के होने पर सुख समृद्धि के लिए उनका निर्यात किया जा सके।

To create a self-reliant "Bharat", the rare and precious minerals, etc., should be utilized suitably. They should be refined to increase their value and exported for tranquility.

**आत्मनिर्भरभारतस्य सृजनाय भारते विद्यमानानां न्यून-बहुमूल्य खनिजादिवस्तूनां सदुपयोगं कुर्यात् तानि संस्कृत्य न्यूनाद् बहुमूल्यं करणीयम्। यस्मादधिकवस्तूत्पादनं भवेच्चेत् तेषां निर्यातः सुख-समृद्ध्यै कर्तुं शक्यते।**

## आत्मशांति बीज

**तुट्ठि-परोवयाराण, भावो होज्ज जहालद्ध-अत्थेसु।**
**अप्पसंति-वीयं सो, अप्पणिब्भर-भारद-हेदू॥110॥**

यथालब्ध पदार्थों में तुष्टि व परोपकार का भाव हो, यही आत्मशांति का बीज है व आत्मनिर्भर भारत का हेतु है।

There should be a sense of satisfaction and service in the acquired things. It is the seed of peace and this is the basis of self-dependent "Bharat".

**यथालब्धपदार्थेषु तुष्टिः परोपकारभावश्च स्यादिदमेव आत्मशान्ति-बीजमात्मनिर्भरभारत-हेतुश्च।**

## दुःख हेतु

**भव-पिंजरम्मि जीवो, णिवसेज्ज सुकोव्व णेव कपोदोव्व।**
**आसत्ति-पुण्ण-कपोद-विट्टी हु अणेय-दुह-हेदू॥111॥**

संसार रूपी पिंजरे में जीव को कबूतर के समान नहीं, तोते के समान निवास करना चाहिए। आसक्ति पूर्ण कबूतर की प्रवृत्ति अनेक दुःखों का हेतु है।

In the cage-like world, the being should be perceived as not a pigeon but a parrot. The pigeon's nature of attachment is the root of all the sorrows.

**जीवो भव-पिञ्जरे कपोतवन्नापितु शुकवद्वसेद्, आसक्ति-पूर्णकापोतवृत्तिर्बहुदुःख-हेतुरिति।**

## स्पर्धा

**सज्जणा सया फद्धं, कुव्वंति गुणाण णेव दोसाणं।**
**गुण-उण्णदीइ फद्धो, होदि दोसो पडण-हेदू हु॥112॥**

सज्जन सदा गुणों की स्पर्धा करते हैं, दोषों की नहीं। स्पर्धा गुणों की उन्नति के लिए होती है, दोष निश्चय से पतन का कारण हैं।

Gentlemen always strive for virtues and not shortcomings. The strive is for the enhancement of qualities. Imperfections are invariably the cause of defeat.

**सज्जनाः सर्वदा गुणेभ्यः न तु दोषेभ्यः स्पर्धंते। गुणानामुन्नत्यै भवति स्पर्धा। दोषः खलु पतनकारणञ्च।**

## उत्साह व स्वास्थ्य कारक

**किड्डा वायामो तह, समो कारणं उच्छाह-सत्थाण।**
**अप्पणिब्भर-भारदे, महत्तं दाएज्ज ताणं वि॥113॥**

क्रीड़ा, व्यायाम व श्रम - उत्साह व स्वास्थ्य का कारण है, आत्मनिर्भर भारत में इनको महत्त्व दिया जाना चाहिए।

Labour, exercise and hard work are the basis of enthusiasm and health. They should be given importance in a self-dependent Bharat.

**क्रीड़ाव्यायामश्रमाः स्वास्थ्योत्साहयोश्च कारणमात्म-निर्भर-भारते एतेभ्यः महत्त्वं दद्यात्।**

## गुणों से चयन

**होज्जा वरस्स चयणं, णरस्स गुण-सुकज्ज-भावणाहि सय।**
**णेव तु कुल-जादीए, सेट्ठत्तं ण णिब्भरं तासु॥114॥**

श्रेष्ठ मनुष्य का चयन गुण, अच्छे कार्य व भावनाओं से होना चाहिए, कुल व जाति से नहीं क्योंकि श्रेष्ठता उन पर निर्भर नहीं करती।

The selection of real human beings should be through his qualities, good-deeds and emotions, not on his caste and creed. Because perfection does not depend on them.

**श्रेष्ठमनुष्यान् गुण-सुकार्य-भावैः चिनुयान्न तु जातिकुलाभ्यां यतो हि श्रेष्ठत्वं तयोः नाश्रितमिति।**

## संस्कारविहीन कुलीन भी निंद्य

**दीवो देदि पयासं, कज्जलं धुम्मं वि तहा णियमेण।**
**कयाइ दुट्ठा दुग्गइ-पत्ता उच्चकुलस्स जीवा॥115॥**

दीपक नियम से प्रकाश, काजल व धुँआ भी देता है। उच्च कुल के जीव भी कदाचित् दुष्ट व दुर्गति के पात्र हो सकते हैं।

A lamp surely gives light, kohl and smoke. Similarly, high-society people are also sometimes wicked and subjects of abjection.

**दीपो यथा प्रकाशाञ्जनधमाश्च ददाति तथैव उच्चकुलीनारपि कदाचिद् दुष्टाः दुर्गतिपात्रञ्च भवितुं शक्नुवन्ति।**

## गुणों से पूज्यता

**सामण्ण-कुलेसु णरा, उप्पण्णा सुकज्ज-गुण-भावेहिं।**
**होज्ज महा जह पंके, पउमं णो हरदि कस्स मणं॥116॥**

सामान्य कुलों में भी उत्पन्न मनुष्य सुकार्य, गुण व भावों से महान् होते हैं जैसे कीचड़ में उत्पन्न कमल किसके मन को नहीं हरता।

A man born from a middle-class family can also perform good deeds, have qualities and high morals. Just as lotus blossoms in mud and still capture everyone's attention.

**सुकार्यगुणभावैः सामान्यकुलेष्वप्युत्पन्नमनुष्योत्कृष्टः भवति यथा कर्दमोत्पन्नं कमलं हरति न कस्य चित्तमिति।**

## परोपकारी

**रुक्खा णिज्जुंजंते, सय सग-पुप्फ-पत्त-फल-कट्ठेहिं।**
**किं णो होज्जा तहेव, परोवयारयो माणुसो वि॥117॥**

वृक्ष अपने पुष्प, पत्ते, फल व काष्ठ से सदा सभी का उपकार करते हैं। क्या मनुष्य को भी उसी प्रकार परोपकारी नहीं होना चाहिए? अर्थात् अवश्य होना चाहिए।

A tree provides its benevolence through its flowers, leaves, fruits and stems. Shouldn't humans also become selfless? i.e. he should be benevolent.

**पुष्पपत्रफलकाष्ठेभ्यः वृक्षाः कुर्वन्त्युपकारम्। किं मनुष्योऽपि न भवेत्तथैव परोपकारी।**

## विनयशील

**णमंति फल-जुद-रुक्खा, होज्ज विणयसीला गुण-जुत्त-णरा।**
**पस्स महापुरिसा खलु, णम्म-किअंत-जीवणं ताण॥118॥**

जैसे फल से लदे हुए वृक्ष झुक जाते हैं उसी प्रकार गुणों से युक्त मनुष्य विनयशील होते हैं। महापुरुषों को देखो, उनका जीवन कितना नम्र होता है।

Just like a fruit-laden tree bends down, a virtuous person is always polite. One should look at the humble life of great men.

**यथा फलयुक्तवृक्षाः नमन्ति तथैव गुणयुक्तजनाः विनयशीलाः भवन्ति। पश्य महापुरुषं तस्य जीवनं कियन्नम्रः भवति।**

## नृप स्वभाव

**अक्क-चंद-विमाणाणि, देंति सग-पयासं जह सव्वाणं।**
**तहेव हवेदि रायो, पयाणं तह सव्व-जणाणं॥119॥**

जिस प्रकार सूर्य व चंद्र विमान सभी के लिए अपना प्रकाश देते हैं उसी प्रकार प्रजा व सभी लोगों के लिए राजा होता है।

Just like the moon and the sun give light to everyone, there is a king common to all the citizens.

**सूर्यचन्द्रविमाने यथा सर्वेभ्यः दीप्यतस्तथैव प्रजाभ्यो नृपः मन्यते।**

## हित कारक

**वारदे किण्ह-मेहो, मज्झं आविय अक्क-ससि-पयासं।**
**जह तह सुराय-मज्झं, दुट्ठो हिदं सज्जणाणं हु॥120॥**

जिस प्रकार काले बादल बीच में आकर सूर्य व चंद्र के प्रकाश को रोक देते हैं उसी प्रकार दुष्ट जन अच्छे राजा के मध्य में आकर सज्जनों के हित को रोक देते हैं।

Just like the dark clouds obstruct the rays of sun and moon, wicked men interfere in the good of the king and stop the welfare of the gentlemen.

**कृष्णमेघाः यथा सूर्यचन्द्रप्रकाशमाच्छादयते तथैव दुष्टाः सुनृपमाच्छाद्य रुन्धन्ति सज्जनहितम्।**

## सज्जन स्वभाव

**कंखेदि सज्जणो णो, खादेदुं सयं बहु-पदत्थाइं।**
**भुंजावित्ता णंददि, सज्जण-सहावो एरिसो हु॥121॥**

सज्जन पुरुष स्वयं के खाने के लिए बहुत पदार्थों की आकांक्षा नहीं करते अपितु खिलाकर के आनंदित होते हैं, ऐसा सज्जनों का स्वभाव है।

A gentleman never aspires for a variety of food instead feels satisfied in providing for others. Such is the nature of a humble man.

**सज्जनाः स्वस्मै बहुभोग्यपदार्थाः न काङ्क्षति परं परान् दत्वा नंदन्ति, सज्जनस्वभावरिति।**

## प्रकृति भी सहयोगी

**कंखदि सव्वहिदं जो, णिसत्थभावेण खयदि पर-अहिदं।**
**पयडी वि सहकारी, होदि सुकज्जेसु सया तस्स॥122॥**

जो नि:स्वार्थ भाव से सभी के हित की आकांक्षा करते हैं व दूसरों के अहित को नष्ट करते हैं उनके सुकार्यों में प्रकृति भी उनकी सहयोगी होती है।

Those who wish for everyone's interest without any self-gain and destroy the harm of others, even nature helps them in achieving their good deeds.

**यः निःस्वार्थभावेन सर्वहितं काङ्क्षति सः पराहितं नश्यति तस्य सुकार्येषु प्रकृतिरपि सहकारी भवति।**

## अनधिकारी

**हरदे पर-अहियारं, गुण-मुविक्खिय देदि दोसं पराण।**
**जो सो णो अहियारी, उवउंजिदुं सग-अहियारं॥123॥**

जो गुणों की उपेक्षा कर दूसरों के अधिकारों का हनन करता है, दूसरों को दोष देता है, वह अपने अधिकारों का उपयोग करने का अधिकारी नहीं है।

The ones who insult others' virtues, violate their rights and blame others they are not justified to use their rights.

**यः गुणानुपेक्ष्य पराधिकारं हन्ति परान् दूषयति सः स्वाधिकारानुपयोक्तुं न शक्नोति।**

## पापी नहीं, पाप त्याज्य

**पावी होदि समत्थो, अह मुञ्झिदुं कुणिदुं पुण्ण-कज्जं।**
**तं णो हेयो पावी, पावमेव सय उज्झणीयं॥124॥**

पापी भी पापों को छोड़ने व पुण्य कार्य करने में समर्थ होता है इसीलिए पापी हेय नहीं है, पाप ही सदा त्याज्य है।

A sinful can also relinquish sins and perform good deeds. Hence, a sinner is not avoidable, but sin is renounceable.

**पापिष्ठोऽपि पापं त्यक्तुं पुण्यं कर्तुञ्च शक्नोति अतः न पापी हेयः, त्याज्यं सदा पापमेव।**

## आत्मनिर्भर भारत का सृजन

**धारित्तु खमाभावं, रायो सक्केदि जुंजिदुं सव्वं।**
**जदा तदा हु संभवो, अप्प-णिब्भर-भारद-सिरणं॥125॥**

जब राजा क्षमा भाव को धारण कर सबको जोड़ने में समर्थ हो सकता है तभी आत्मनिर्भर भारत का सृजन संभव है।

When the king is forgiving and able to unite everyone, then only the origin of self-sufficient Bharat is possible.

**यदा राजा क्षमाभावं धृत्वा सर्वान् योजयितुं शक्नोति तदा ह्यात्मनिर्भरभारतस्य सृजनं संभवतीति।**

## क्षमापात्र

**जो रायो खमदे सग-आयत्त-पयाए तिण्णि-जोगेहि।**
**सयं अवि पहु-पइडीइ, खमापत्तो होदि सया सो॥126॥**

जो राजा अपने अधीन प्रजा को तीनों योगों से क्षमा करता है वह स्वयं भी प्रभु व प्रकृति के द्वारा सदा क्षमा का पात्र होता है।

The ruler who forgives his subjects with his mind, body and soul, is himself forgiven by nature and God.

**त्रियोगैः यो राजा स्वाश्रितप्रजां क्षमते सोऽपि प्रभु-प्रकृतिभ्यां सदा क्षमापात्रं भवति।**

## अहिंसा अत्यावश्यक

**अप्पणिब्भर-जीवणं, कंखेदि जो समायो देसो वा।**
**तेणं हु पालिदव्वा, अहिंसा वरभावेहि सया॥127॥**

जो समाज या देश आत्मनिर्भर जीवन की आकांक्षा करता है उनके द्वारा अहिंसा का उत्कृष्ट भावों से सदा पालन किया जाना चाहिए।

The nation that aspires to have a self-dependent life should always follow non-violence.

**यः समाजो देशो वात्मनिर्भरजीवनमिच्छति, तेनोत्कृष्टभावैरहिंसा पालनीया।**

## अन्याय

**अण्णायं हु अण्णाय-करणं वा सहणं वि अण्णायं व।**
**तं समत्थो ण करेज्ज, ण सहेज्ज कयावि अण्णायं॥128॥**

अन्याय करना अन्याय है व अन्याय सहना भी अन्याय के समान है। समर्थ व्यक्ति को वह अन्याय नहीं करना चाहिए, न कभी सहना ही चाहिए।

Performing injustice is unjust but to be oppressed is also a form of injustice. A capable person should never do or suffer from injustice.

**अन्यायकरणमन्यायः सहनमप्यन्यायरिव समर्थो नान्यायं न कुर्यान्न च सहेत कदापि।**

## दोषी कौन?

**जो को अवि दोसिल्लो, होज्जा अप्प-परमप्प-सक्खीए।**
**णादि मणदि ण को वि तं, दोसिल्लो तहवि दोसिल्लो॥129॥**

जो कोई भी आत्मा व परमात्मा की साक्षी में दोषी होता है, और कोई उसे दोषी न मानता हो, न जानता हो तथापि वह दोषी ही है।

Whoever is culpable in the eyes of the spirits and God, is guilty, irrespective of anyone's believing or knowing otherwise.

**यः कोऽप्यात्मा-परमात्मनोश्च साक्ष्यां दोषी भवत्यन्यः न मन्यते न जानाति तं दोषी तथापि स दोषी ह्यस्तीति।**

## प्रकृति न्यायधर्मा

**जदि कयाइ रायो णो, सक्केदि दंडेदुं तु पाविट्ठं।**
**सो हवेदि दंडिदो हु, पयडीए सा ण अण्णायी॥130॥**

यदि राजा कदाचित् पापी को दंड देने में समर्थ नहीं होता तो वह पापी प्रकृति के द्वारा अवश्य दंडित होता है, प्रकृति कभी अन्यायी नहीं होती।

If the king fails to deliver the rightful punishment to the sinner, he is punished by nature. Nature is never unjust.

**यदि राजा पापिनं न दण्डयितुं शक्नोति सः प्रकृत्या दण्डं प्राप्नोति, न कदाप्यन्यायी भवति प्रकृतिरिति।**

## कर्त्तव्य पालन

**कस्स वि परिट्ठिदीए, कत्तव्व-पालणं णेव उज्झेज्ज।**
**कत्तव्व-महाधम्मो, वंचणं तहा महापावो॥131॥**

किसी भी परिस्थिति में कर्त्तव्य पालन नहीं छोड़ना चाहिए। कर्त्तव्य महाधर्म है तथा वंचना महापाप है।

Under no circumstances should we forget to render our duties. Duty is the highest religion, and deception is the greatest sin.

**कर्त्तव्यपालनं न त्यजेत् कस्यामपि परिस्थितौ। कर्तव्यः महाधर्मः वञ्चनञ्च महापापम्।**

## करणीय

**विजहेज्ज मोहणिद्दं, जागरेज्जा पालिदुं कत्तव्वं।**
**पावादु होज्ज दूरो, सिरेज्ज अप्पणिब्भरदेसं॥132॥**

मोह रूपी निद्रा का त्याग करना चाहिए, कर्त्तव्य पालन के लिए सदा जागृत रहना चाहिए, पापों से दूर हों व आत्मनिर्भर देश का सृजन करना चाहिए।

We should renounce infatuation and be ready to perform our duties. Stay away from sins and create a self-reliant nation.

**त्यजेद् मोहनिद्रां कर्त्तव्यपालने सदा जागृयात् पापेभ्यो दूरं भवेच्चात्मनिर्भरदेशं सृजेत्।**

## अज्ञान का फल

**ण णादि जस्स महत्तं, तं बहुमुल्लत्थं मुल्लहीणं व।**
**जह मूढो बहुमुल्लं, रयणं मणदि कच्चखंडोव्व॥133॥**

जब तक जिसके महत्त्व को नहीं जानते तब तक वह बहुमूल्य पदार्थ भी मूल्यहीन के समान है। जैसे मूर्ख बहुमूल्य रत्न को काँच के खंड के समान मानता है।

A precious entity seems worthless if we do not know its importance, like a fool mistakes gemstones for a mirror.

**यावद् महत्त्वं न विजानाति तावद्बहुमूल्यपदार्थोऽपि मूल्यहीनसमो यथा मूढः बहुमूल्यपदार्थं कांचखण्डवद् जानाति।**

## उत्तमवर्गीय जन

**उत्तमवग्गजणा सय, विसेसणाणी णिसत्थ-भावेणं।**
**अप्पणिब्भर-भारदं, सिरिदुं हु करेज्ज साएज्जं॥134॥**

उत्तम वर्ग के लोगों को और विशेष ज्ञानियों को नि:स्वार्थ भाव से 'आत्मनिर्भर भारत' के सृजन के लिए सदा सहयोग करना चाहिए।

Great and learned men should selflessly cooperate in the creation of self-sufficient Bharat.

**उच्चवर्गा: विज्ञानिनश्च नि:स्वार्थभावेन सदा आत्मनिर्भरभारतस्य सृजनाय सहयोगं कुर्यु:।**

## मध्यमवर्गीय जन

**मज्झिम-वग्गजणा सग-सग सत्तीइ कुणंतु सदुवजोगं।**
**सदुवजोगो वि मण्णे, इयर-रूवो सया धम्मस्स॥135॥**

मध्यम वर्ग के लोग आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए अपनी-अपनी शक्ति का सदुपयोग करें। सदुपयोग भी सदा धर्म का इतर रूप माना जाता है।

Mediocre men should contribute their skills in creating a self-reliant Bharat. Making a good uses of every thing and power is also another form of religion.

**आत्मनिर्भरभारत-निर्माणाय मध्यमवर्गाः स्वशक्त्या सदुपयोगं कुर्युः**

## जघन्यवर्गीय जन

**जे मणंते जहण्णं, सगं ते वि अप्पणिब्भरं देसं।**
**सिरिदुं सुह-सहजोगं, करेज्ज तेहि विणा ण सक्को॥136॥**

जो स्वयं को जघन्य मानते हैं वे भी आत्मनिर्भर देश के सृजन के लिए शुभ सहयोग करें। उनके बिना भी आत्मनिर्भर देश का सृजन संभव नहीं।

The ones who consider themselves as low should also contribute towards the making of a self-dependent nation. It is not possible without their support.

**ये स्वात्मानं जघन्याः मन्यत तेऽप्यात्मनिर्भरभारत-सृजनाय शुभं सहयोगं दद्युः। तैर्विनाऽप्यात्मनिर्भरदेश-सृजनमसंभवम्।**

## प्रत्येक वर्ग अति महत्त्वपूर्ण

**पत्तेय-वग्गा अस्स, कज्जस्स मणेमि अइ-महत्तजुदा।**
**जो जस्स कज्ज-जोग्गो, तेण करिदव्वं तं कज्जं॥137॥**

इस कार्य के लिए प्रत्येक वर्ग को मैं अति महत्वयुक्त वा महत्वपूर्ण मानता हूँ। जो जिस कार्य के योग्य है उसके द्वारा वह कार्य किया जाना चाहिए।

I believe that every class of society is important in creating a self-reliant country. Everyone should perform the duties they are worthy of.

**प्रत्येकं वर्गमतिमहत्त्वपूर्णः मन्येऽहमस्मै कार्यस्य। यो यस्य कार्ययोग्यस्तेन तत्कार्यमेव करणीयम्।**

## आत्मानुशासित

**जणो कुंडुंब-गामो, समायो देसो अप्पणिब्भरो तु।**
**होदि अप्पणुसासिदो, परेसु सासिदुं समत्थो वि॥138॥**

जो व्यक्ति, परिवार, गाँव, समाज या देश आत्मनिर्भर होता है वह आत्मानुशासित होता है व दूसरों पर शासन करने में भी समर्थ होता है।

The person, family, village, society or country which is self-sufficient are self-disciplined and are capable of ruling over others.

**यो नरः कुटुम्बः ग्रामः समाजः देशोवात्मनिर्भरो, स आत्मानुशासितोऽपि भवति, परेषु च शासितुं शक्नोत्यपि।**

## स्वाश्रित सदा सम्मानीय

**समूलासिदं रुक्खं, समत्था उम्मूलिदुं ण झंझा वि।**
**जस्स तरुमूलणूणो, तरू सो ण जीवदे सुइरं॥139॥**
**सगतडासिदा सरिदा, विणस्सदे मरुभूमीए कयाइ।**
**तडविहीण-सरिदाए, जीवणं अवि मिदोव्व मण्णे॥140॥**
**जो पिदरो सगासिदो, तं सेवंति सुपुत्त-पुत्ति-वधू तु।**
**जो परासिदो पिदरो, संपूअदि सेवदे तं किं॥141॥**
**जस्स देसस्स वासी, परोप्परे होंति णिब्भरा मेत्तं।**
**संमाणंति सय तस्स, देसस्स खलु अण्णदेसा वि॥142॥**

अपने मूलाश्रित वृक्ष का आंधी भी उन्मूलन करने में समर्थ नहीं है। जिस वृक्ष की जड़ कम होती है वह ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहता। अपने तट के आश्रित नदी कदाचित् मरुभूमि में विनाश को प्राप्त होती है किंतु तट से रहित नदी का जीवन मृत के समान माना जाता है। जो पिता स्वाश्रित होते हैं सुपुत्र, पुत्री, वधू आदि सब उनकी सेवा करते हैं किंतु जो पिता पराश्रित होते हैं उनका कौन सम्मान या सेवा करता है उसी प्रकार जिस देश के वासी मात्र परस्पर में निर्भर होते हैं निश्चय से उस देश का सम्मान सदा अन्य देश भी करते हैं।

Even the storm is not capable of uprooting a well-rooted tree. The tree that has short roots does not remain alive for long. A river flowing along the coast can get dried up in desserts, but a river without coast is similar to a dead one. The father who is self-dependent is taken care by son, daughter-in-law, etc., everyone instead a father who is dependent on others is neither respected nor cared for similarly if the citizens of the country are self-reliant, the country is respected globally.

स्वमूलाश्रितं वृक्षमंधिकाऽपि उन्मूलितुं न शक्नोति। यस्य वृक्षमूलं न्यूनं भवति सो न जीवति चिरकालपर्यन्तं स्वतडाश्रिता सरिता मरुभूमौ विनश्यति कदाचिद् परं तडरहितनदी मृतवद् मन्यते। यः जनकः स्वाश्रितः सुत-सुता-वध्वादयस्तं सेवते किन्तु यः पराश्रितस्तं कः? तथैव यस्य नागरिकाः परस्परनिर्भराः किल तं देश-सम्मानोऽन्यदेशाः कुर्वन्त्यपि।

## आत्मनिर्भर ही समृद्ध

**अप्पणिब्भरे देसे, णूणसाहणे वि सुहो समिद्धो य।**
**मण्णे णिम्माणेज्जा, तं अप्पणिब्भर-भारदं हु॥143॥**

आत्मनिर्भर देश में कम साधन होने पर भी वह शुभ व समृद्ध माना जाता है इसीलिए निश्चय से आत्म निर्भर भारत का निर्माण करना चाहिए।

A self-dependent country is still prosperous with slightly fewer resources. Hence, it is necessary to create a self-sufficient Bharat.

**आत्मनिर्भरदेशं न्यूनसाधने सत्यपि शुभः समृद्धश्च मन्यतेऽतः निश्चयेनात्मनिर्भरभारतं सृजितव्यम्।**

## आधार विहीन

**वत्थुं जणो वा महापुरिसो सुरो वि सगाहार-हीणो।**
**सिग्घं पतति णियमेण, सवरणत्थयारगा वि होज्ज॥144॥**

जो वस्तु, व्यक्ति, महापुरुष या देव अपने आधार से विहीन होते हैं वे नियम से शीघ्र पतित होते हैं व स्वपर अनर्थकारक भी होते हैं।

The thing, person, great men or celestial beings are devoid of their roots are bound to be destroyed soon and are worthless to everyone.

**यः वस्तुं जनः महापुरुषो देवो वा स्वाधार-विहीनः सः खलु शीघ्रं पतति स्वपरानर्थकारकोऽपि च भवति।**

## सुदृढ़ आधार

**अंगुलीए णक्खोव्व, वेलाइ दंतोव्व जस्साहारो।**
**दिढो सो होदि देसो, सुइरं गुरु-आयंस-रूवो॥145॥**

अंगुलि में नाखून के समान, मसूड़े में दाँत के समान जिसका आधार दृढ़ होता है वह देश चिरकाल तक गुरु व आदर्श रूप होता है।

Like a nail on the finger and teeth in gums, the country that has a strong root is destined to be a leader and ideal for a long time.

**अंगुल्ये नखवद्, दंतपालौ दंतवद्यस्याधारो दृढः सो देशः चिरकालपर्यन्तं गुरुरूपमादर्शरूपञ्च भवति।**

## समायोजक शासक

**सूई जोजदि अणेग-वत्थाणि बहु-वण्णाइ-संजुदाणि जह।**
**बहुगुण-संजुदा पया, जोजिदव्वा तह सासगेहि॥146॥**

जिस प्रकार बहुत से वर्णादि से युक्त अनेक वस्त्रों को सुई जोड़ती है उसी प्रकार शासक के द्वारा बहुत गुणों से युक्त प्रजा को जोड़ा जाना चाहिए।

Just as the needle sews different pieces of clothes together, A leader should bind all his virtuous citizens together.

**सूचिका नानावर्णादि-युक्तानेकवस्त्राणि योजयति तथैव शासकः बहुगुणयुत प्रजां योजयेत्।**

## ग्रंथकार की लघुता

**कंखेदुं अट्ठगुणं, णंदिदुं खलु अप्पसुद्धसहावं।**
**पस्सिदुं सव्वजीवा, सुही अप्पणिब्भरं करिदुं॥147॥**
**अप्पणिब्भर-भारदं, लहु-किदी विरइया मइ लहु-धीए।**
**सोहित्ता सण्णाणी, पढंतु तहा मरिसंतु मए॥148॥**

आठ गुणों की कांक्षा के लिए, आत्मा के शुद्ध स्वभाव के आनंद के लिए, सभी जीवों को सुखी देखने के लिए व सभी को आत्मनिर्भर करने के लिए मेरे (आचार्य वसुनंदी मुनि) द्वारा लघु बुद्धि से 'आत्मनिर्भर भारत' लघु कृति की रचना की गई। सम्यग्ज्ञानी इसे शोधकर पढ़ें तथा मुझे क्षमा करें।

To aspire for eight virtues, gain the pleasure of a pure spirit, see every creature happy and to make everyone self-dependent, this short scripture " Aatma Nirbhar Bharat" has been written by me (" Aacharya Vasunandi Muniraj"). Please read it with the correct knowledge and forgive me.

**अष्टगुणाकाङ्क्षातुमात्मशुद्धस्वभावानन्दितुं सर्व-जीवानां सुखार्थं, सर्वेषामात्मनिर्भरतायै च 'आत्मनिर्भरभारतम्' लघुकृतिः लघुधिषणया मया विरचिता। सम्यग्ज्ञानिन इमं शोधयित्वा पठेद् मया क्षमेत च।**

## अंतिम मंगलाचरण

**वीरे णिव्वाणगदे, सुहजिणपरंपराए हु होहीअ।**
**बहु-वर-सूरी जेहिं, जिणधम्म-पहावणा कुणिदा॥149॥**
**भद्दबाहु-चंदगुत्त-धरसेण-कोंडकुंडारिया सया।**
**पुप्फदंत-भूदबली, जहिउसहं सिरिउमासामिं॥150॥**
**गुणहरं माघणंदिं, समंतभद्द-पुज्जपादकलंका।**
**जिणसेण-णेमिचंदा, माणतुंग-जयसेणसूरी॥151॥**
**इच्चाइं णमिदूणं, परंपराइ संतिसायर सूरिं।**
**चरिय-चक्किं च वंदे, तस्स सिस्सा वीरादी अवि॥152॥**
**संतिसिंधुस्स सिस्सं पायसिंधुं महातवस्सिं हं।**
**तस्स णेट्ठ-सेट्ठ-सिस्सं जयकित्तिं अज्झप्पजोगिं॥153॥**
**तस्स हु देसभूसणं, सूरिं भारद-गोरवं भत्तीइ।**
**सिद्धंतचक्किं रट्ठ-संतं सेदपिच्छि-धारगं॥154॥**
**धम्मपहावग-मुक्खं, आइरिय-विज्जाणंदं गुरुं मम।**
**पणोल्लयं सव्वदा हु, णमामि तिव्व-भत्ति-रायेण॥155॥**

श्री महावीर स्वामी के मोक्ष जाने पर शुभ जिन परंपरा में बहुत श्रेष्ठ आचार्य हुए जिनके द्वारा जिनधर्म की प्रभावना की गई। आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी, आ. श्री चंद्रगुप्त, श्री धरसेनाचार्य, श्री कुंदकुंदाचार्य, आ. श्री पुष्पदंत स्वामी, आचार्य श्री भूतबली स्वामी, आचार्य श्री यतिवृषभ स्वामी, आचार्य श्री उमास्वामी, आचार्य श्री गुणधर स्वामी, आचार्य श्री माघनंदि, आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी,

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी, आचार्य श्री अकलंक देव स्वामी, श्री जिनसेनाचार्य, श्री नेमिचंद्राचार्य, श्री मानतुंगाचार्य, श्री जयसेनाचार्य इत्यादि आचार्यों को नमस्कार करके उसी निर्मल परंपरा के चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी को नमस्कार करता हूँ। उनके शिष्य आचार्य वीरसागर आदि को भी नमस्कार करता हूँ। आचार्य श्री शांतिसागर जी के शिष्य महातपस्वी आचार्य श्री पायसागर जी, उनके ज्येष्ठ व श्रेष्ठ शिष्य अध्यात्मयोगी आचार्य श्री जयकीर्ति जी, उनके शिष्य भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी को भक्ति से नमस्कार करता हूँ। पुनः उनके शिष्य सिद्धांत चक्रवर्ती, राष्ट्र संत, श्वेतपिच्छी धारक, मुख्य धर्मप्रवाहक, मेरे संप्रेरक आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज को तीव्र भक्ति के अनुराग से सदा नमस्कार करता हूँ।

After Shree Mahaveer swami's salvation, there came many great Aacharya in this auspicious Jain tradition and spread the messages of Jain religion. I bow to another one of this serene tradition "Charitra Chakravarti Aacharya Shree Shaanti Sagar Ji" after I bow to "Aacharya Shree Bhardabaahu Swami, Aacharya Shree Chandragupta, Shree Dharsena Aacharya, Shree Kund-Kund Aacharya, Aacharya Shree Pushdanta Swami, Aacharya Shree Bhootbali Swami, Aacharya Shree Yativrishabh Swami, Aacharya Shree Uma Swami, Aacharya Shree Gundhar Swami, Aacharya Shree Maaghnandi Swami, Aacharya Shree Samantbhadra Swami, Aacharya Shree Pujyapaad Swami, Aacharya Shree Aklanka Dev Swami, Shree Jinesnacharya, Shree Nemichandracharya, Shree Maantunga Aacharya, Shree Jaisenacharya" etc. I bow to

his disciple Aacharya Veersagar etc. I bow to Aacharya Shree Shaantisagar Ji Aacharya's disciple Mahatapasvi Aacharya Shree Paaysagar Ji, his eldest and ablest disciple Adhyatmayogi Aacharya Shree Jayakirti Ji, his disciple Bharat Gaurav Aacharya Shree Deshbhushan Ji. Again I bow with all my might to his disciple Siddhant Chakravarti, Rashtra Sant, Shwetpicchi Dharak, Mukhya dharma, prabhavak my inspiration, Aacharya Shree Vidhyanand Ji Muniraj.

श्रीमहावीरे निर्वाणगते शुभजिनपरम्परायां बहवः श्रेष्ठाचार्याः बभूवुः यैः जिनधर्मप्रभावना कृता। आचार्य श्री भद्रबाहुचंद्रगुप्त-धरसेनकुन्दकुन्द-पुष्पदंत-भूतबलि-यतिवृषभोमास्वामि-गुणधर माघनंदि-समन्तभद्र-पूज्यापादकलंक-जिनसेन-नेमिचन्द्र-मानतुङ्ग-जयसेनादयानाचार्यान् नत्वा तथैव निर्मलपरंपरायाः चारित्रचक्रवर्त्याचार्यशांतिसागरं नमामि। तच्छिष्यवीर-सागरादयानाचार्यान् नमामि। श्रीशांतिसागरस्य शिष्यमहातपस्विनम् पायसागराचार्यं नमामि पुनः तस्य ज्येष्ठश्रेष्ठ-शिष्यञ्चाध्यात्मयोगिनं जयकीर्तिं नमामि पश्चात्तच्छिष्यं भारत-गौरवदेशभूषणाचार्यं नमामि। पुनस्तच्छिशष्यं सिद्धांतचक्रवर्तिनं श्वेतपिच्छिधारकमुख्यधर्मप्रभावक-ममप्रेरकाचार्यविद्यानंद गुरुमतिभक्त्यनुरागेण प्रणमाम्यहं।

# प्रशस्ति

**पणदालि-समहिद-पंच-वीस-सय-वीरद्धे य रविवारे।**
**अक्खय-तिदियाए सुह-जोगे रोहिणीए पुण्णो॥156॥**

यह शास्त्र अक्षय तृतीया रविवार के दिन रोहिणी नक्षत्र शुभ योग में 2545 वीरनिर्वाण संवत् को पूर्ण हुआ।

This scripture was compiled on Akshaya Tritiya on Sunday in Rohini Nakshatra, 2545 Veer Nirmana Samvat on an auspicious Yog.

**शास्त्रमिदं पञ्चविंशतिशतपञ्चचत्वारिंशद्-वीरनिर्वाणाब्दे अक्षयतृतीये रविवारे रोहिणिनक्षत्रे शुभयोगे पूर्णमभवत्।**

# श्लोकानुक्रमणिका


| श्लोक | श्लो० सं० | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| (अ) | | |
| अंकविज्जा विसिट्ठा | 33 | 31 |
| अंगुलीए णक्खोव्व | 145 | 137 |
| अइणीरं वि घादगं | 70 | 67 |
| अक्केण असंभवो हु | 90 | 86 |
| अक्कचंद-विमाणाणि | 119 | 113 |
| अज्ज वि भारद-देसे | 79 | 76 |
| अण्णायं हु अण्णाय | 128 | 122 |
| अपरिग्गहो खलु महाधम्मो | 72 | 69 |
| अप्पणिब्भर-जीवणं | 127 | 121 |
| अप्प-णिब्भरत्तं तह | 54 | 51 |
| अप्पणिब्भर-भारदं | 148 | 139 |
| अप्पणिब्भरं हविदुं | 71 | 68 |
| अप्पणिब्भरा होज्ज | 4 | 04 |
| अप्पणिब्भरे देसे | 143 | 135 |
| अप्प-णिब्भरो जो कोवि | 6 | 06 |
| अप्पुप्पणं वच्छलं | 105 | 100 |
| (आ) | | |
| आयंसोव्व जीवणं | 94 | 90 |
| आरंभ-संग-रहिदो | 7 | 07 |
| आसत्ती अह-मूलो | 102 | 97 |
| आसत्ती खलु मुच्छा | 103 | 98 |
| आसत्ती दुह-जणणी | 101 | 96 |
| (इ) | | |
| इंगालं अण्णाणं | 93 | 89 |
| इच्चाइं णमिदूणं | 152 | 140 |
| (उ) | | |
| उज्झित्तु अण्णभावं | 48 | 46 |
| उत्तमवग्गजणा सय | 134 | 128 |
| उवसंगहणं वसणं | 85 | 81 |

| श्लोक | श्लो० सं० | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| (क) | | |
| कंखदि सव्वहिदं जो | 122 | 116 |
| कंखेदि सज्जणो णो | 121 | 115 |
| कंखेदि सासगो जो | 17 | 17 |
| कंखेदुं अट्ठगुणं | 147 | 139 |
| कटटु ताण सक्कारं | 109 | 103 |
| कत्तव्व-पालणं सय | 40 | 38 |
| कया वि णेव करेज्जा | 82 | 78 |
| करेज्ज तम्हि खेत्तम्मि | 20 | 19 |
| करेज्जा णयर-सामी | 16 | 16 |
| कस्स वि परिट्ठिदीए | 131 | 125 |
| किड्डा वायामो तह | 113 | 107 |
| कुभावत्थेसु रच्चदि | 9 | 09 |
| (ग) | | |
| गुणहरं माघणंदिं | 151 | 140 |
| गेहसामी करेज्जा | 12 | 12 |
| (ज) | | |
| जणो कुडुंबो गामो | 138 | 132 |
| जत्थ सहज-णिप्पण्णं | 18 | 18 |
| जदवि आरंभयाले | 13 | 13 |
| जदि इंगालं तवदे | 107 | 102 |
| जदि कयावि रायो णो | 130 | 124 |
| जदि होंति सच्चणिट्ठा | 66 | 63 |
| जम्मि खेत्तम्मि वेज्जो | 58 | 55 |
| जम्मि खेत्ते उवयरण | 24 | 22 |
| जस्स देसस्स वासी | 142 | 133 |
| जस्सिं खेत्तम्मि बहुल | 26 | 24 |
| जहण्ण-णरो कंखेदि | 76 | 73 |
| जह होज्ज णर-वियारो | 95 | 91 |
| जाइ किसीए जोग्गा | 27 | 25 |

| श्लोक | श्लो० सं० | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| जिणदेवेहि पणीदं | 3 | 03 |
| जे मणंते जहण्णं | 136 | 130 |
| जो कंखदे जावइय | 11 | 11 |
| जो कंखेदि सग-हिदं | 97 | 92 |
| जो को वि दोसिल्लो | 129 | 123 |
| जो परं दूसिदूणं | 92 | 88 |
| जो पिदरो सगासिदो | 141 | 133 |
| जो रायो खमदे सग | 126 | 120 |
| (ण) | | |
| ण कया वि सुह-कारणं | 60 | 57 |
| ण णादि जस्स महत्तं | 133 | 127 |
| णदि-आदी सुक्कंति | 52 | 49 |
| ण बाहेज्ज परोप्परे | 57 | 54 |
| णमंति फल-जुद-रुक्खा | 118 | 112 |
| णहं पज्जण्णाविअं | 64 | 61 |
| णाणाविह-खिल्लणाणि | 25 | 23 |
| णाणेण णाण-विड्ढी | 37 | 35 |
| णिसत्थभावेण दिंतु | 61 | 58 |
| (त) | | |
| तम्हा सया करेज्जा | 96 | 91 |
| तस्स हु देसभूसणं | 154 | 140 |
| तावइय-वर-गुरू सो | 15 | 15 |
| तुट्ठि-परोवयाराण | 110 | 104 |
| (द) | | |
| दयारो पुव्वक्खरो | 77 | 74 |
| दीवो देदि पयासं | 115 | 109 |
| (ध) | | |
| धण-आदाउ-पदायग | 68 | 65 |
| धम्म पहावग-मुक्खं | 155 | 140 |
| धम्मो-विसुद्ध-सुहदो | 39 | 37 |
| धारित्तु खमाभावं | 125 | 119 |
| धी-पलिमंथु-वत्थूणि | 88 | 84 |
| (प) | | |
| पज्जत्त-णाणजुदो य | 65 | 62 |
| पणदालि-समहिद-पंच | 156 | 143 |
| पत्तेयं णागरिओ | 53 | 50 |
| पत्तेययाले कला | 36 | 34 |
| पत्तेय-वग्ग अस्स | 137 | 131 |
| परत्थेसु रयदे जो | 8 | 08 |
| पराणवेक्खियो ण | 83 | 79 |
| पवित्त-कज्जाणि ताण | 89 | 85 |
| पसुपालणं वड्ढणं | 28 | 26 |
| पारतंतस्स सुहं वि | 55 | 52 |
| पावी होदि समत्थो | 124 | 118 |
| पासाण-बहुलखेत्ते | 19 | 19 |
| (फ) | | |
| फल-कंखाइ विणा जे | 84 | 80 |
| (ब) | | |
| बहुजलं जम्मि खेत्ते | 30 | 28 |
| (भ) | | |
| भद्दबाहु-चंदगुत्त | 150 | 140 |
| भव-पिंजरम्मि जीवो | 111 | 105 |
| भारदम्मि विज्जमाण | 108 | 103 |
| भारद-मुक्खकज्जाणि | 31 | 29 |
| भावेहि लहदि जीवो | 106 | 101 |
| भिण्ण-भिण्ण-जलबिंदू | 80 | 76 |
| (म) | | |
| मंत-तंताइ-विज्जा | 32 | 30 |

| श्लोक | श्लो० सं० | पृष्ठ सं० | श्लोक | श्लो० सं० | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|---|---|
| मज्झिम-वग्गजणा सग | 135 | 129 | सगतडासिदा सरिदा | 140 | 133 |
| महापुरिसा भुंजंति | 50 | 48 | सगदेसस्स सक्किदिं | 22 | 20 |
| मादु-भूमि-घादगो हु | 46 | 44 | सगाणं पडिपिल्लणं | 44 | 42 |
| मुत्तीउ अणेय-विहा | 21 | 19 | सज्जणा सया फद्धं | 112 | 106 |
| मेरुकरंडगोव्व खलु | 62 | 59 | सजणा उविक्खंति जे | 45 | 43 |
| (र) | | | सदेसे उप्पण्ण-वर | 73 | 70 |
| रायेण पालिदव्वो | 41 | 39 | समत्थ-णरो जो कोवि | 59 | 56 |
| रायो होदु सव्वदा | 42 | 40 | समूलासिदं रुक्खं | 139 | 133 |
| रुक्खा णिज्जुंजंते | 117 | 111 | सयं जीवदु सुहेणं | 87 | 83 |
| (ल) | | | सव्व-पर-दव्वादो य | 2 | 02 |
| लहु-उज्जोग-कज्जाणि | 43 | 41 | सवर-हिद-भावणाए | 38 | 36 |
| लोयमज्जादा-धम्म | 86 | 82 | सस्सियो उचिद समये | 69 | 66 |
| (व) | | | साउज्ज-भावणाए | 81 | 77 |
| वच्छल्ल-जलं सक्कदि | 104 | 99 | साउज्जं दाएज्जा | 78 | 75 |
| वड्ढेज्ज जम्मि खेत्ते | 63 | 60 | सातंतस्स दुहं अवि | 56 | 53 |
| वत्थुं जणो वा महापुरिसो | 144 | 136 | सामण्ण-कुलेसु णरा | 116 | 110 |
| वत्थुणिम्माणओ णो | 75 | 72 | सायरोव्व हु सासगो | 51 | 49 |
| वत्थु-णिम्माणओ सय | 74 | 71 | सुगिहत्थो होज्ज अप्प | 10 | 10 |
| वत्थुविज्जा होदि खलु | 35 | 33 | सुद्धप्प-गुण-णिब्भरा | 1 | 01 |
| वारदे किण्ह-मेहो | 120 | 114 | सुसंगदी सण्णाणं | 98 | 93 |
| विजहेज्ज मोहणिद्दं | 132 | 126 | सुहं संती समिद्धी | 5 | 05 |
| विणा किरणेहि अक्को | 49 | 47 | सूई जोजदि अणेग | 146 | 138 |
| वीरे णिव्वाणगदे | 149 | 140 | (ह) | | |
| (स) | | | हरदे पर-अहियारं | 123 | 117 |
| संघस्सो णो कया वि | 14 | 14 | होंति जस्सिं खेत्तम्मि | 29 | 27 |
| संजमं विणा ण सक्को | 100 | 95 | होज्ज कलंतर-मुचिदं | 67 | 64 |
| संतिसिंधुस्स सिस्स | 153 | 140 | होज्ज महा-उद्देसं | 91 | 87 |
| संसारे विज्जंतं | 34 | 32 | होज्जा वरस्स चयण | 114 | 108 |
| सग-उक्किट्ठ-कलाए | 23 | 21 | होदि देससुरक्खिदो | 47 | 45 |

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

# वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

## रचित व संपादित साहित्य

### मौलिक कृतियाँ

### प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो ( अहिंसक आहार )
3. अज्ज-सक्किदी ( आर्य संस्कृति )
4. अणुवेक्खा-सारो ( अनुप्रेक्षा सार )
5. जिणवर-थोत्तं ( जिनवर स्तोत्र )
6. जदि-किदि-कम्मं ( यति कृतिकर्म )
7. णंदिणंद-सुत्तं ( नंदीनंद सूत्र )
8. णिग्गंथ-थुदी ( निर्ग्रन्थ स्तुति )
9. तच्चसारो ( तत्त्व सार )
10. धम्म-सुत्तं ( धर्म सूत्र )
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो ( राष्ट्र शांति महायज्ञ )
12. सुद्धप्पा ( शुद्धात्मा )
13. अप्पणिब्भर भारदो ( आत्मनिर्भर भारत )
14. विज्जा-वसु-सावयायारो ( विद्या वसु श्रावकाचार )
15. अप्प-विहवो ( आत्म वैभव )
16. अट्ठंग जोगो ( अष्टांग योग )
17. णमोयार महप्पुरो ( णमोकार माहात्म्य )
18. मूल-वण्णो ( मूल वर्ण )
19. मंगल-सुत्तं ( मंगल सूत्र )
20. विस्स-धम्मो ( विश्व धर्म )
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो ( विश्व पूज्य दिगम्बर )
22. समवसरण सोहा ( समवशरण शोभा )
23. वयण-पमाणत्तं ( वचन प्रमाणत्व )
24. अप्पसत्ती ( आत्म शक्ति )
25. कला-विण्णाणं ( कला विज्ञान )
26. को विवेगी ( विवेकी कौन )
27. पुण्णासव-णिलयो ( पुण्यास्रव निलय )
28. तित्थयर-णामत्थुदी ( तीर्थंकर नाम स्तुति )
29. रयणकंडो ( सूक्ति कोश )
30. धम्म-सुत्ति-संगहो ( धर्म सूक्ति संग्रह )
31. कम्म-सहावो ( कर्म स्वभाव )
32. खवगराय सिरोमणी ( क्षपकराज शिरोमणि )
33. सिरि सीयलणाह चरियं ( श्री शीतलनाथ चरित्र )
34. अज्झप्प-सुत्ताणि ( अध्यात्म सूत्र )
35. समणायारो ( श्रमणाचार )

### भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी ( आर्य संस्कृति )
2. णिग्गंथ-थुदि ( निर्ग्रंथ स्तुति )
3. तच्च-सारो ( तत्त्वसार )
4. रट्ठसंति-महाजण्णो ( राष्ट्रशांति महायज्ञ )
5. णंदिणंद-सुत्तं ( नंदीनंद सूत्र )

### टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला ( संस्कृत )
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह ( संस्कृत )
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति ( हिंदी )